

१८४ श्री
सुंदरविलासग्रंथ

हिंदीवृजभाषामै
दादूपंथीसाधूस्नामीसुंदरदासजी
कृत.

नाकौशोधकरकै जायौ

मुंबईमें

प० श्रीधरशिवलालजीकैप्रज्ञायुक्त

ज्ञानसागरआपरवानामै प०

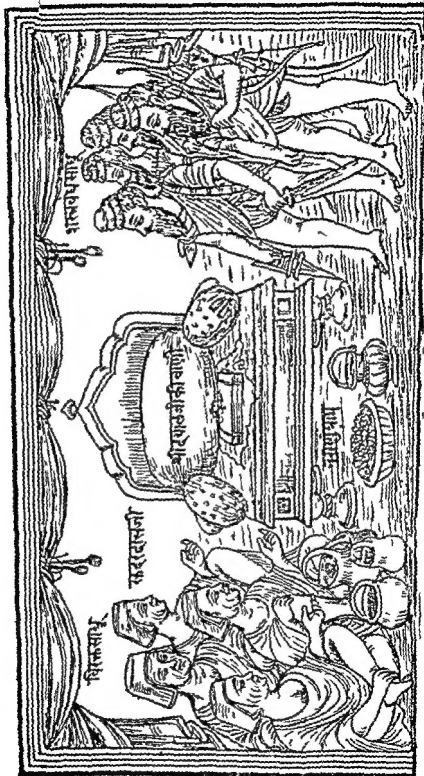
द्यात्मकसुरसवालीमै

प्रसिद्धकियौ

आवृत्ति ३

स० १२४४ शके १८१९

आम्बिन शकल ५ गुरुवार



श्री

पथ सुंदरविलासक अंगकी अनुक्रमणिका

अंगकानम	पृष्ठ	पं.
१ गुरुदेवको अंगप्रारंभ	१	३१०
२ उपदेववितामरीको अंगप्रारंभ	२	३६
३ काननितामरीको अंगप्रारंभ	१२	३६
४ देहआत्मानिछांदको अंगप्रारंभ	२६	३२
५ वृत्ताको अंगप्रारंभ	२६	१३
६ धारज उगहनेको अंगप्रारंभ	३२	१२
७ विश्रामको अंगप्रारंभ	३६	१३
८ देहमर्दानतागर्वमहारको अंगप्रारंभ:	३६	५
९ नार्गनियाको अंगप्रारंभ:	४१	६
१० दुष्टजनको अंगप्रारंभ	४२	५
११ मनको अंगप्रारंभ	४४	३६
१२ नागकको अंगप्रारंभ	५१	२३
१३ निघ्रीतज्ञानको अंगप्रारंभ	५८	६
१४ वचनविषेकको अंगप्रारंभ	६०	१४
१५ निर्गुणरूपासनाको अंगप्रारंभ.	६४	८
१६ पतिव्रताको अंगप्रारंभ.	६७	७
१७ विरहउराहनेको अंगप्रारंभ:	६९	४
१८ शब्दसारको अंगप्रारंभ.	७०	१०
१९ भक्तिज्ञानमिथितको अंगप्रारंभ.	७२	६

सुदराविलासका अनुक्रमणिका.

अंग	अंगको नाम.	पृष्ठ	पृष्ठ
२०	विपर्जयशब्दको अंग प्रारंभ.	७४	३१
२१	सूरातनको अंग प्रारंभ:	८२	१३
२२	साधूको अंग प्रारंभ.	८६	३०
२३	ज्ञानीको अंग प्रारंभ.	९५	१८
२४	सारव्यज्ञानको अंग प्रारंभ.	१००	१७
२५	अपने भावको अंग प्रारंभ	११२	१२
२६	स्वरूपविस्मरणको अंग प्रारंभ	११५	२६
२७	विचारको अंग प्रारंभ	१२३	२१
२८	ब्रह्मनिष्कलंकको अंग प्रारंभ.	१३०	४
२९	आत्मअनुभवको अंग प्रारंभ.	१३१	३२
३०	ज्ञानको अंग प्रारंभ.	१४१	१४
३१	निरससेको अंग प्रारंभ	१४५	४
३२	प्रेमज्ञानीको अंग प्रारंभ.	१४७	५
३३	अद्वैतज्ञानको अंग प्रारंभ.	१४८	२४
३४	जगत्तमिथ्याको अंग प्रारंभ	१५४	५
३५	आश्चर्यको अंग प्रारंभ	१५६	१५
चुत्तसंख्या.			१६०
समाप्त.			

श्री

अथसुंदरदासकृत

सुंदरविलास

सर्वेय्या

प्रारंभः



श्रीगणेशायनमः॥ श्रीगुरुभ्योनमः॥ ॥ अथ
सुंदरविलासलिरव्यते ॥ ॥ अथगुरुदेवको
अंगप्रारंभः॥ इंदवछंदः॥ ॥ मोजकरीगुरुदेव
दयाकरि, शब्दसुनायकत्थोहरिनेरो॥ ज्यौरवि
कैप्रगंटैनिसिजातसु, दूरकियोभ्रमभानअंधेरो
॥ कायकयायकमानसहुकरि, हैगुरुदेवहिपंदन
मेरो॥ सुंदरदासकहेकरजोरिजु, दादुदयालकोहूं
नितचेरो॥ १॥ पूरणब्रह्मविचारनिरंतर, कामन
क्रोधनलोभनमोहै॥ श्रीत्रयचारसनाअरुघ्राण
सु, देरिक्कछूकहुंनैननमोहै॥ जानस्वरूपअनूप
निरूपेन, जासुगिरासुनमोहनमोहै॥ सुंदरदास
कहेकरजोरिजु, दादुदयालहिमोरिनमोहै॥ २॥ धी

रजवंतअडिगजितेंद्रिय, निर्मलज्ञानगत्योददआ
 दू॥ शीलसंतोषक्षमाजिनकेघट, लागिरत्योसुअ
 नाहदनादू॥ भेषनपक्षनिरंतरलक्षजु, औरनहीक
 छुवादविवादू॥ एसबलछनहैजिनमाहिस्त, सुंदर
 केउरहेगुरुदादू॥ ३॥ भोजलमेबहिजातहुतेजिन,
 काठिलियेअपनेकरआदू॥ औरसंदेहमिटायदि
 येसब, काननटेरसुनायकेंनादू॥ पूरनब्रह्मप्रकास
 कियोपुन, छूटगयोयहवादविवादू॥ एसिकृपाजु क
 रीहमऊपर, सुंदरकेउरहेगुरुदादू॥ ४॥ कोउकगोरष
 कोंगुरुथायत, कोउकदत्तदिगंबरआदू॥ कोउककंय
 रकोउकभरथरकोउकबीरकिराषतनादू॥ कोउकहे
 हरिदासहमारजु, योंकरिठानतवादविवादू॥ औरतो
 संतसबहिसिरऊपर, सुंदरकेउरहेगुरुदादू॥ ५॥ को
 उविभूतजरानवधारि, कहैयहभेषहमारोहैआदू॥
 कोउककानफरायफिरेपुन, कोउकसंगबजावतना
 दू॥ कोउककेसलुचाइकरघत, कोउकजंगमकेशि
 ववादू॥ योंसबभूलिपरेजितहीतित, सुंदरकेउरहे
 गुरुदादू॥ ६॥ जोगिकहेगुरुजैनकहेगुरु, बोधकहे
 गुरुजंगममानै॥ भक्तकहेगुरुन्यासिकहेबनयासि

कहैगुरु और बरवाने ॥ शेरवकहैगुरुसौफिकहैगुरु,
 याहितसुंदरहोतहैराने ॥ बाहुकहैगुरुबाहुकहैगुरु
 हैगुरुसोइसबेभ्रमभाने ॥ ७ ॥ सोगुरुदेवलियेनछि
 पैकछु, सत्वरजोतमतापनिवारी ॥ इंद्रियदेहमृषाक
 रिजानत, सीतलतासमताउरधारी ॥ व्यापकब्रह्मवि
 चारअरचंडित, हैतउपाधिसबैजिनटारी ॥ शब्दसुना
 यसंदेहमिटावतसुंदरवागुरुकीबलहारी ॥ ८ ॥ पूरन
 ब्रह्मवतायदियोजिन, एकअरचंडितव्यापकसारे ॥
 रागरुद्वेषकरेअबकोनसुं, जोअहिमूलवहीसबडा
 रे ॥ संशयशोकमित्योमनकोसब, तत्वविचारकल्हो
 निरधारे ॥ सुंदरसुखकियेमलधोइजु, हैगुरुकोउर
 ध्यानहसारे ॥ ९ ॥ ज्योंकपडादरजीगहिंज्योंतत, का
 षहिकोबडइकसिआने ॥ कंचनकोजुसुनारकसेपु
 नि, लोहकोघांटलोहारहिजाने ॥ पाहनकोकसिले
 तसिलावट, पात्रकुंभारकेहातनिपाने ॥ तेसेहिशि
 ष्यकसेगुरुदेवजु, सुंदरदासतचेंमनमाने ॥ १० ॥
 ॥ छंदमनहर ॥ ॥ सबहुनमित्रकोऊजाकेसबहे
 समान, देहकोममत्वछाडिआतमाहीरामहे ॥ औ
 रहूँपाधिजाकेकबहुनदेवियत, सुखकेसमुद्रमेंरु

तत्राठोंजामहे ॥ अडिअरुसिद्धिजाके हात जोरि
 आगे षरी ॥ सुंदर कहत ताके सबही गुलामहे ॥ अधि
 क प्रशंसा हमके से करि कहि सके, ऐसे गुरुदेव को हम
 रोजु प्रनामहे ॥ ११ ॥ जान को प्रकास जाके अंधकार भ
 यो नास, देह अभिमान जिन तज्यो जान छारधी ॥ सो
 ईसरवसागर उजागर वैरागर ज्यों, जाके बेन सनत बि
 लात हैं बिकारधी ॥ अगम अगाध अतिको उनहिं जा
 ने गति, आत्मा को अनुभव अधिक अपारधी ॥ ऐसे गुरु
 देव पंदनी कति हुं लोक माहीं, सुंदर विराजमान सो
 भत उधारधी ॥ १२ ॥ काहू सो न रोष तोष काहू सो न राग
 दोष, काहू सो न वैर भाव काहू सो न यात है ॥ काहू सो न ब
 कवाद काहू सो न नाहीं बिषाद, काहू सो न संग न तो काहू
 पक्ष पात है ॥ काहू सो न दुष्ट बेन काहू सो न लेन देन ब्रह्म
 को विचार कछु और न सहत है ॥ सुंदर कहत सोई ई
 सनिको मद्दाईस, सोई गुरुदेव जाके दूसरी न वात है ॥
 १३ ॥ लोह को ज्यों पारष पषान हुं पलट लेत, कंचन छुव
 त होत जग में प्रमानीये ॥ दुम को ज्यों चंदन पलट हिले
 गाय वास, आपके समानता को सीतलता आनिये ॥
 कीट को ज्यों भृंग हुं पलट के करत अंगि, सो उडि जायता

को अचरज मानियें ॥ सुंदर कहत यह सगरे प्रसिध
 वात, सदसि सपलटें सो सदगुरु जानियें ॥ १४ ॥ गुरु
 बिन ज्ञान न हीं गुरु बिन ध्यान न हीं गुरु बिन आतमा
 विचार न लहत हैं गुरु बिन प्रेम न हीं गुरु बिन नेम न हीं
 गुरु बिन सील हि संतोष न गहतु हैं ॥ गुरु बिन व्यासन
 ही बुधी को प्रकास न हीं ॥ भ्रम हुं कानासन हीं संसे ईर
 हतु हैं ॥ गुरु बिन वाटना हीं कोई बिन हाटना हीं, सुंद
 र प्रगट लोक बेदये कहतु हैं ॥ १५ ॥ पढ़े के न बैठे पास अ
 क्षर न बांच सके, बिन ही पढ़े ते कैसे आवत हे पारसी ॥
 जो हरिके मिले बिन परखिन जाने कोई, हाथ न गलीये
 रहे संशय न टारसी ॥ बैद हि न मिल्यो कोऊ बुटी को ब
 ताये देत, भेद बिन पाये वाके ओषध हे छारसी ॥ सुंद
 र कहत मुरवरंच हून देरव्यो जाइ, गुरु बिन ज्ञान ज्यों ही
 अंधेरे में आरसी ॥ १६ ॥ गुरु के प्रसाद बुद्धि उत्तम दसा
 को गहे, गुरु को प्रसाद भवदुरवधिसराइये ॥ गुरु के प्र
 साद अमर्षीतिहु अधिक बोधे गुरु के प्रसाद राम नाम
 गुन गाइये ॥ गुरु के प्रसाद सब जोग की जुगति जाने,
 गुरु के प्रसाद सन्यमें समाधिलाइये ॥ सुंदर कहत गु
 रुदेव जो कपाल होइ, तिन के प्रसाद तत्वज्ञान पुन्य पा

इयेथ बुडत भौसागरमें आयके बंधावे धीर, पारउल्ले
 घायदेत नावको ज्यों वैवसो ॥ परउपगारी सबजीवनि
 के सारेकाज, कबहुंन आवेजाके गुननिको छेवसो,
 ॥ वचनरुनाय भयधम सबदूरकरे, सुंदरदिरवाय
 देत अलष अमेवसों ॥ औरहुसनेहि हमनीके करिदे
 वैसो धे, जगमेन कोऊ हितकारी गुरुदेवसो ॥ १८ ॥ गु
 रुतात गुरुमात गुरुबंधनिजगात, गुरुदेवनरवशिष
 सकलसंवांख्योहै ॥ गुरुदिये दिव्यनैन गुरुदिये मुख
 बैन, गुरुदेव अवनदे सबदउचाख्योहै ॥ गुरुदिये हा
 थपांव गुरुदिये सीसभाव, गुरुदिये पिंडमांही प्रा न
 आयडाख्योहै ॥ सुंदर कहत गुरुदेव जु कपालहोई,
 फिरघाट घडि करि मोहिनि सताख्योहै ॥ १९ ॥ कोऊ
 देत पुत्रधन कोऊ देत बलधन, कोऊ देत राजसाज दे
 व ऋषि मुन्योहैं ॥ कोऊ देत जसमान कोऊ देत सआ
 न, कोऊ देत विद्या ज्ञान जगतमें गुन्योहैं ॥ कोऊ देत
 ऋद्धि सिद्धि कोऊ देत नवनिधी, कोऊ देत और कछु
 तातें सीसधुन्योहैं ॥ सुंदर कहत एक दी योजिन रा
 मनाम, गुरुसो उदार कोऊ देख्योहै न सुन्योहै ॥ २० ॥ भो
 मीहूं कीरेनु कीतो संख्या कोऊ कहत हैं, भारहु अठार

दुर्मातिनकेजोपातहैं॥ मेघनकीसरव्यासोउकृषिनकहीवि-
 चारबुंदनकीसंख्यातेउआयकेविलातहे॥ तारनकीसंख्यासोउ
 कहीहेपुरानमाही, रोमनकीसंख्यापुनिजितनेकगातहे॥ सुद-
 रजहालो जंतुतिनहिंकोआवेअंत, गुरुकेअनंतगुनकोपैकह
 जातहैं॥ २१॥ गोविंदकेकियेजीवजातहैरसातलको, गुरु
 उपदेसेसोतोछूटेजमफंदसें॥ गोविंदकेकियेजीवब-
 सपरेकर्म निके, गुरुकेनिवाजेसुफिरतहैंस्वच्छंदतें
 ॥ गोविंदकेकियेजीवबुडतभोसागरमें, सुंदरकहत
 गुरुकाटैदुरवहंदतें॥ औरहुकहांलोकछुमुषतेंकहो
 बनाय, गुरुकीतोमहिमाअधिकहेगोविंदतें॥ २२॥ चिं-
 तामनिपारसकलपतरुकामधेनु, औरहुअनेकनिधि
 वारिवारिनाधियें, जोइकछुदेधियेसोसकलविनास
 वंत, बुधिमेंविचारकरिबहुअभिलाधियें॥ तातेमनव
 चनकरमकरिकरजोरी, सुंदरचरनसीसमेलदीनभा-
 धियें॥ बहुतप्रकारतीनोलोकसबसोधेहम, ऐसीको
 नभेटगुरुदेवआगेराधियें॥ २३॥ महादेववामदेवअ-
 वभकपिलदेव, व्यासशक्तदेवजयदेवनामदेवजुरा
 मानंदसुखानंदकहियेअनंतानंद, सरसरानंदहूके
 आनंदअछेवजू॥ रैदासकबीरदाससोजादासपीपा

दास, दासहूके दासभावभावहूकी देवजु ॥ सुन्दरक
 हृतसंतप्रगटजगतमांदि तैसे गुरुदादुदासलागे हरि
 सेवजु ॥ २४ ॥ गुरुदेवसर्वोपरि अधिकविराजमान गुरु
 देव सबही तें अधिक गरिष्ठ हैं ॥ गुरुदेव दत्तात्रय नार
 द रुक्मादि मुनि, गुरुदेव ज्ञानधन प्रगटवसिष्ठ हैं ॥ गुरु
 देव परम आनंदमय देषियत, गुरुदेव बरबरियानहु
 वरिष्ठ हैं ॥ सुन्दरक हृत कछु महिमा कही न जाय, ऐसै
 गुरुदेव दादू मेरे शिर इष्ट हैं ॥ २५ ॥ जोगी जैन जंगम स
 न्यासी चनवासी बोध, और कोऊ भेष पक्ष सब भ्रम
 भान्यो है ॥ ताप सरु अर्षी श्वर मुनी स्वर कवी श्वर, स
 ब निको मत देषित त्वपहि चान्यो है ॥ वेद सार तत्त्व सा
 र सुमृति पुरान सार, ग्रंथ निको सार सोई रह्ये मांदि आ
 न्यो हैं ॥ सुन्दरक हृत कछु महिमा कही न जाय, ऐसो गुरु
 देव दादू मेरे मन मान्यो हैं ॥ २६ ॥ जीते हे जु काम क्रो
 ध लोभ मोह दूर किये, और सब गुन न कौं मद जिन
 भान्यो है ॥ उपजैन ताप कोई सीतल स्वभाव जाको, स
 ब ही में समता संतोष उर आन्यो हैं ॥ काहू को न राग दो
 ष देत सब ही के तोष, जीवत ही पायो मोक्ष एक ब्रह्म जा
 न्यो है ॥ सुन्दरक हृत कछु महिमा कही न जाई, ऐसो गुरु

रुदेवदादुमैरेमनमान्योहें ॥ २७ ॥ ॥ इति श्रीगुरु
 देवकोशंगसंपूर्ण ॥ १ ॥ ॥ अथ उपदेसचिंतामणि
 कोशंगलिरव्यते ॥ ॥ हंसालच्छंदा ॥ ॥ तोषहिचतुर
 स्रजानपरवीनअति, परेजनिपिंजरेमोहकूआ ॥ पाय
 उतमजनमलायलेचपलमन, गायगोविंदगुनजीतजू
 वा ॥ आपहिआपअज्ञाननलनीबंध्यो, विनाप्रभुवि
 सुरवकैचैरमूवा ॥ दाससुंदरकहेपर्मपदतोलहे, राम
 हरिरामहरिबोलसूवा ॥ १ ॥ नफसैतानकोआपनैके
 दकर, क्यादूनीमैफिरेवायगोता ॥ हैगुनगारभीगुना
 हीकरतहे, वायगामारतबफिरेरोता ॥ जितुजेवाकसें
 अजबपैदाकियोतूउसेक्योकरामोसहोता दाससुंद
 रकहेसरमतबहीरहे, हकतूहकतूबोलतोता ॥ २ ॥
 आबकीबूदओजूदपैदाकिया, नैनमुषनासिकाकर्स
 जूती ॥ षेलगेसाकरैउहीलीयांफिरे, जागकेदेषक्याक
 रेसूती, भुलउसष समकोंकामतेंक्याकिया, वेदहिया
 दकरमरनिपूती दाससुंदरकहेसर्वसुषतोलहें, भी
 तुहिभीतुहीबोलतूती ॥ ३ ॥ अवलबस्तादकेकदम
 कीषाकहो, हीरसबगुजारसबछोडफेना ॥ चारदिल
 दारदिलमाहींतूं, यादकरहैतुकेपासतूदेषनेना ॥ जा

नकाजानहेंजिंदकाजिंदहें, सुषनकासुषनकछु
 समजसेना॥ दाससुंदरकहेसकलघटमेंरहे, एक
 तूएकतूबोलमैना॥४॥ ॥छंदमनहर॥ ॥कान
 केगहेतेकहांकानएसेहीतमूढ, नैनकेगएतेकहांनै
 नएसेपाइयें॥ नासिकागएतेकहांनासिकासुगंधले
 त, सुषकेगएतेएसेसुषकहांगाइयें॥ हाथकेगएतेक
 हांहाथएसोकामहीत, पांवकेगएतेएसेपांवकितधा
 इये॥ याहीतेविचारदेखसुंदरकहततोही, देहकेगए
 तेएसेदेहकितपाइयें॥५॥ बारबारकट्योतोहीसाव
 धानक्योंनहोई, ममताकीमोटसिरकाहेकोधरतुहे
 ॥मेरोधनमेरोधाममेरोसुतमेरीचाम, मेरेपसमैरेगा
 मभूल्योहीफिरतुहे॥ तूतोभयोबाबरोपिकायगईबुद्धि
 तेरी, ऐसोअधकूपग्रेहतामेतुंपरतुहे॥ सुंदरकहततो
 हीनेकहुनआवेलाज, काजकौंविगारकेअकाजक्यों
 करतुहे॥६॥ तेरेतोकोपेंचपरचोगांठिअतिघूरिगई
 ब्रह्माआईछोरीक्योंहीछूटतनजबहू॥ तेलसोंभि
 जोईकरिचिंथरालपेटराये, कूकरकोंपूछसुधोहोत
 नहिंतबहू॥ सासूदेतसीयबहूकीरीकोगिनतजाई,
 कहतकहतदिनबीतगएसबहूसुंदरअजानीऐसो

छोड़्यो नहीं अभिमान, निकसत प्रानलगेचे ल्यो न
 हीं कबहूँ ॥ ७ ॥ बालुमाहिं तेलनाहीं निकसत काहू
 बिध, यथरन भीजे बहु वर्ष तघनहे ॥ पानी के मंथे ते
 कहूँ घीवनहीं पाइयत कूकस के कूठे कहूँ निकसत क
 नहे ॥ सुन्यहीं की मूठी भरी हाथन परत के छू, ऊसर
 में बोहे कहों निपजत अनहे ॥ उपदेस ओषध सों को
 न विधिलागे ताही, सुंदर असाध रोग भयो जाके मन
 हे ॥ ८ ॥ धेरी घरमाहीं तैरे जानत सनेहीं मेरे, दारा सुत
 वितते रोषो सिषो सिषायगे ॥ ओरहीं कुटुंब लोग लूटे
 चहुँ ओरहीं ते, मीठी मीठी बात कहो तो सों लय दायगे
 ॥ संकर पेरगो जब कोई नहिं तेरो तब, अंतहीं कठन चां
 की चेर ऊठ जायगे ॥ सुंदर कहत ताते जूठोई प्रपंच सब
 स्वपने की न्याई सब देषत बिलायगे ॥ ९ ॥ वारू के मंदि
 रमाहीं पैठिर लघौ स्थिर होय राषत हे जीवन की आस के
 ऊदीन की ॥ पलपल छीजत घटत जात धरि धरी, बि
 न सतवार कहाष बरन छिन की ॥ करत उपाय जूठे ले
 न देन धान पान, मूसाइत उत फिरे ताकी रही भिन की
 सुंदर कहत मेरी मेरी करि भूल्यो सठ, चंचल चपल मा
 या भई किन किन की ॥ १० ॥ अवनले जाइ करि नाद की

लेडारिफांसी, नेनहूलेजाईकरिरूपवसकरयोहे ॥ ना
 सिकालेजायकरिबहुतसंगावेगंध, रसनालेजाईक
 रिस्वादमनहस्योहे ॥ त्वचाहुलेजाईकरिनारीसोस्य
 शंकरे, सुंदरकोइकसाधठगनितेंडस्योहे ॥ काम
 ठगक्रोधठगलोभठगमोहठग, ठगनीकीनगरीमें-
 जीवआइपस्योहे ॥ ११ ॥ पायोहेमनुष्यदेहआस
 रबन्योहेआई, असीदेहवारवारकहोकहोपाईये
 ॥ भूलतहैबावरेतुअबकेसीयानोहोई रतनअसु
 लसोतोकाहेकुंठगाइये ॥ समजीविचारकरिठग-
 निकोसंगत्याग, ठगबाजिदेरवीकरिमननडुलाइ
 ये ॥ सुंदरकहततातेंसावधानक्यूनहोई, हरिको
 भजनकरिहरिमेंसमाइये ॥ १२ ॥ घरीघरीघटतछी
 जतजातछिनछिनभीजतहीगरिजातमाटीकेसोटे
 लहे मूकतीकेद्वारआईसावधानक्योनहोई, वार
 वारचटतनत्रियाकोसोतेलहे ॥ करिलेसुकुतहरि
 भजलेअरवंडनर, याहीमेंअंतरपडेयामेंब्रह्ममेलहे
 मनुषजनमयहजीतभावेहारअब, सुंदरकहतयामें
 जूआकोसोषेलहे ॥ १३ ॥ जीवनकोगयोराजओरस
 बभयोसाज, आपनीदोहाईफेरदसामोबजायोहे ॥

लकुटिहथियारलियेनेनकरतालदये, स्वेतवारभयो
 ताकोतंबूसोंतनायोहे॥ दसनगएसुमानोदरवानदू
 रकिये, जोगरीपरीसुआनबिछानोबिछायोहे॥ सी
 सकरकंपतसरसुंदरनिकास्योरियु, देषतहीदेषतबू
 ढापोदोरीआयोहे॥ १४॥ देहकोनदेहकछूदेहकोम
 मत्वछांड, देहतोममोदीयोदेहदेहजातहें॥ घटतोघ
 टतघरीघरीघटनासहत, घटकेगएतेघटकीनफिरबा
 तहें॥ पिंडपिंडमाहींफिंडपिंडकोऊपावतहें, पिंडपिंड
 पातपुनपिंडहीकोपातहें सुंदरनहोयजासोंसुंदर
 कहतजगसुंदरचैतन्यरूपसुंदरविष्णुतहें॥ १५॥
 ॥ छंदइंदवजय॥ ॥ ग्रीवत्वचाकटिहेलट
 कीकचहूपलटेअजहूरतवामी दंतगरामुषकेउपरेन
 षरेनगएसुषरोषरकामी कंपतदेहसनेहसुदंपत,
 संयतजंपतहेनिसजामी॥ सुंदरअंतहुभौनतजीन
 भ, ज्योंभगवंतसुलो नहरामी॥ १६॥ देहघटीपगभो
 मिसंडेनहिं, ओलठियांपुनहाथलईजू आंषिहुना
 कपरेसुरवर्तेजल, सीसहलेकचिटीचनईजू॥ ईश्व
 रकोकबहुनसंभारत, दुषपरेतबहाइदईजू॥ सुंदर
 तोहिविषसुषवंछत, घरेगएपेंबगेनगएजू॥ १७॥

पाइअमोलकदेहयहेनर, क्युंनविचारकरेदिलअंद
 रा॥ कामहुकोधहुलोभहुमोहहु लहतहेदशहुदिशि
 बंदर॥ तूंअबबंधतहेसरलोकहि, कालहुपाइपरे
 सपुरंदर॥ छांडिकुबुद्धिसुबुद्धितहेधरि, आतमरा
 मभजेक्युनसुंदर॥१८॥ इंद्रनिकेसुषमानतहेसठ,
 याहिहितेबहुतेदुषपावे॥ ज्यौंजलमेंऊषमांसहिली
 लत, स्वादबंध्योजलबाहिरआवे॥ ज्यौंकपिमूठन
 छांडतहेरसना, बसबंधपर्योपिललावे॥ सुंदरक्यो
 पहिलेनसंभारत, ज्यौगुरवाईसुकानविंधावे॥१९
 ॥ कौनकुबुद्धिभईघटअंतर, तूंअपनेप्रभुसोमनचो
 रे भूलगयोविषयासुषमेसठ, लालचिलागिरतघो
 अतिथोरे॥ क्यौंकोईकंचनछारमिलावत, लेकरपा
 थरसोनगफोरे॥ सुंदरयानरदेहअमोलक, तीरल
 गीनौकाकितबोर॥२०॥ देषनकेनरसोभतहेजैसें,
 आहिअनौपमकेलिकोषंभा॥ भीतरतोकछुसारन
 हींपुनि, ऊपरछीलकअंबरदंभा॥ बोलतहेपरनाहि
 कछसुध, ज्यौंहिवयारतेंबाजतकुंभा॥ रूसरहेक
 पिज्यौंछिनमांहिजु याहीतेसुंदरहोतअचंभा॥२१
 ॥ देषनकेनरदीसतहेपरि, लछननौपसकेसबहीहे

बोलतचालतपीचतषातसु, वेधरवेवनजातसही
 हैं॥ प्रातगएरजनीफिरिआवतसुंदरयोनिभार
 वहीहैं॥ औरतोलछुनआईमिलेसब, एककमी-
 सिरशृंगनहीहैं॥ २२॥ प्रेतभयोकिपिसाचभयोकि
 निसाचरसोजितहीतितडोलें तूंअपनीसुधभूल
 गयो, सुषतेकछुआरकीआरहीबोलें॥ सोईउपाई
 करेजुमरैपचि, बंधनतोकबहुनहिंषोलें॥ सुंदरजा
 तनमेंहरिपावत, सोतननासकियोमतिभोलें॥ २३
 ॥ पैटतेंबाहिरहोतहिबालक, आईकेमातुपयोध
 रपीनो॥ मोहबंध्योदिनहिदिनआरतरुनभयोत्र
 यकेरसमीनो॥ पुत्रप्रपौत्रबंध्योपरिचारसु, ऐसे
 हिभांतिगयेपनतीनो॥ सुंदररामकोनामधिसार
 कें, आपहिआपकोबंधनकीनो॥ २४॥ मातसुता
 सुतभाईबंध्योजुव, तिकेकहेकहाकामकरैहैं॥ चो
 रिकरेबटपारिकरेकीर, बीचनिजीकरिपेटभरैहैं॥ सी
 तसहेशिरधामसहेकहे, सुंदरसोरनमाज्मरैहैं॥
 बांधीरद्वयोममतासबसोन्नर, याहीतिंबांध्योहीबां
 ध्योफिरैहैं॥ २५॥ तूठगकैधनआरकोल्यावत, तैर
 उतोघरआरहीफोरै॥ आगलगैसबहीजरिजाईसू

तूंदमरीदमरीकरजोरें ॥ हाकमकोडरनाहीनसूजत
 सुंदरएकहिचारनचौरें ॥ तूषरचेनहिंआपनीषाडसु
 तेरिहीचातुरीतोहिलेबोरें ॥ २६ ॥ ॥ छंदमनह
 र ॥ ॥ करतप्रपंचइनयंचनीकेबसपस्थो, परदा
 रारतभैनआनतबुराईकोपरधनहरेपरजीवकीक
 रेघात, मदमाषषाईलवलेसनभलाईको ॥ होयगो
 हिसाबतबमुषतेनआवेजाब, सुंदरकहतलेषोले
 तराईराईकोइहांतोकि येविलासजमकीनतोहीआ
 स, उहांतोनहीहेकछूराजपोयांवाइको ॥ २७ ॥ दु
 नीयांकोदोडताहे औरेतकीलोडताहे ॥ ओजुदको
 मोडताहेवढेईसरईका ॥ सुरगीकोमोसताहेबकरी
 कोंरोसताहे, गरीबांकोषोसताहेवेसहेरगाईका ॥
 जुलमकोकरताहेधनीसोंनडरताहे, दोजगकोंभर
 ताहेषजानाबलाईका ॥ होयगाहिसाबतबआवेगा
 नजाबकळू, सुंदरकहतगुनेगारहेषुदाईका ॥ २८ ॥
 करकरआयोजबधरधरकाढ्योनार, भरभरबाज्यो
 ढोलधरधरजान्योहे ॥ दरदरदोखोजायनरनरआ
 गेदीन, बरबरबकतननेकअलसान्योहे ॥ सरसर
 सोधेधनतरतरतोरैयान, जरजरकाटतअधिकमो

दमान्योहे ॥ फरफरफूल्योफिरडरडरपेनमूढ, हर
 हरहसतनसुंदरसंकान्योहे ॥ २९ ॥ जनमसिरान्यो
 जाईभजनविमुषसठ, काहेकोंभवनकूपबिनमी
 चमरेहे ॥ गहतअविद्याजानिसकनलनीज्योमू
 ढ, करमअौविकरमकरतनडरेहें ॥ आपहितेंजात
 अंधनरकमेंचारवार, अजहुनसंकमनमांहींअब
 करेहें ॥ दुरवकोसमूहअवलोककेनत्रासहोई, सुंद
 रकहतनरनागपासपरेहें ॥ ३० ॥ जूठोजगएनसुन
 नित्यगुरुबेनदेषें, आपनेहुनेनतोऊअधरहेज्वानीमें ॥
 केतेराचराजारंकभएरहेचल गए, मिलगएधूरमांहीं
 आएतेकहानीमें ॥ सुंदरकहतअबताहीनसरत
 आवे, चैतेक्योनमूढचितलायहिरदानीमें ॥ भूलेज
 नदावजातलोहकेसोतावजात, आवजातएसेजैसे
 नांचजातपानीमें ॥ ३१ ॥ जगमगपगतजिसजिभजरा
 मनाम, कामक्रोधतनमनघेरीघेरीमारिये ॥ फूठमूढ
 हठत्यागजागभागसुनिषुनि, गुनज्ञानआनिआन
 वारिवारीडारिये ॥ गहीताहीजाहिसेसईसससिसुर
 नर, ओरबातहेततातफेरीफेरिजाइये ॥ सुंदरदरद
 षोईधोईधोईचारवार, सारसंगरंगअंगहेरिहेरिधारि

शीये ॥ ॥ छंददुमिला ॥ ॥ हठजोगधरोत्तनजात
 भिया, हरिनामविनामुषधूरपरे ॥ सठसोगहरोछि
 नजातकिया, चरिचामविनामुषपूरिजरे ॥ भठभोग
 परोधनधातधिया, अरिकांमकिनासुषजूरिमरे ॥
 मठरोगकरोधनधातहिया, पररामतिनादुषदूरकरे
 ॥ ३३ ॥ गुरुज्ञानगहअतिसोइसुषी, मसमोहतजेस
 बकाजसरे ॥ धरिध्यानरहेपतिषोइसुषी, रनलोहव
 जेतबलाजपरे ॥ सरताननहेहतिदोषदुषी, तनछोह
 सजेअबआजमरे ॥ पुरथानलहेमतधोइसुषी, जन
 बोहरजेंजबराजकरे ॥ ३४ ॥ ॥ छंदमनहरा ॥
 काहेकौंफिरतनरभटकनदोरदोर, डागुलेकीदोरदेषी
 दोरसबजानीये ॥ जोगजज्ञजपतपतीरथग्रतादिकमि
 तिनहूकोफलसोऊमिथ्याइबरवानिये ॥ सकलउपाइ
 तजिएकरामरामभजि, आहीउपदेससुनिहदेमाही-
 आनीये ॥ ताहीनेंसमुजिकरिसुंदरविश्वासधरि,
 औरकोऊकहेकछुताकीनहींमा नीये ॥ ३५ ॥ ॥
 छंदइंदव ॥ ॥ संतसदाउपदेसबतावत, केससबेसि
 रस्वेतभाहें ॥ तूंममताअजहूंनहींछांडत, मातहूआ
 यसंदेसदयेहें ॥ आजकेकालचलेउठसूरष, तेरेतोदेख

तकेतेगएहें॥ सुंदरक्यों नहिं रामसंभारत, या जगमें क
 होको न रहेहें॥ ३८॥ ॥ इति उपदेस चिंतामणिको-
 अंग समाप्त ॥ २॥ ॥ अथ कालचिंतामणिकी
 अंग प्रारंभः॥ ॥ छंद इंदव॥ ॥ मंदिरमहल वि-
 लायत हे गज, ऊट ददामादिनाइ क दोहें॥ तात हुमात
 बियासत बंधव, देष धूपा मर होत बिछोहें॥ जूठ प्रपं-
 च सोराचिर लघो सठ, काठ किपुतरी ज्यों कपि मोहें॥
 मेरी हि मेरी कहें नित सुंदर, आंखिलगे कहि कोन को को
 हे॥ १॥ ए मेरे देस विलायत हें गज, ए मेरे मंदिर ए मेरे था-
 ती॥ ए मेरे मात पिता पुनि बंधव, ए मेरे पूत सो ए मेरे नाती
 ॥ ए मेरे काम निके ल करे नित, ए मेरे सेवक हें दिन राती॥
 सुंदर बेसे ही छांड गयो सब, तेल जख्यो सुबुकी जब वा-
 ती॥ २॥ ते दिन चार विआमलियो सठ, तेरे कहें कछू धै-
 गई तेरी॥ जे से ही बाप दादा गए छांडि स, ते से ही तू त-
 जिहें पल फेरी॥ मारिहें काल चपेट अचानक, होई ध-
 री क मेरा षकी ठेरी॥ सुंदर लेन चले कछु एसंग, भूली
 कहें न मेरी ई मेरी॥ ३॥ केय ह देह जराय के छार, की-
 या कि की या कि की या कि की या हे॥ केय ह देह जमी म-
 हि गरी, दी या कि दी या कि दी या कि दी या हें॥ केय ह दे

हरहेदिनचार॥ जीयाकिजीयाकिजीयाकिजीयाहें॥
 संदरकालअचानकआई, लीयाकिलीयाकिलीया
 किलीयाहें॥ ४॥ देहसनेहनछांडतहेनर, जानतहेंथि
 रहेंयहदेहा॥ छीजतजायघटेदिनहीदिन, दीसतहेंय
 टकोनितछेहा॥ कालअचानकआग्रगहेकर, दाहगि
 राईकरैतनषेहा॥ संदरजानियहेनिहचेधरि, एकनि
 रंजनसोकरिनेहा॥ ५॥ तूंकछूओरविचारतहेनर, ते
 रोविचारधर्योइरहेगा॥ कोटिउपायकरेधनकेहित,
 आगलिष्योतितनोइलहेगा॥ भोरकिसांऊघरीयलमा
 ऊस, कालअचानकआइगहेगा॥ रामभज्योनकीयो
 नहिंसकृत, संदरयोपछिताइरहेगा॥ ६॥ भूलिगयो
 हरिनामकोंतूसठ, देसधोंकोनसंजोगवन्योहें॥ काल
 अचानकआयगहेकंठ, पेवधोंजूठोहितानोतन्योहें
 ॥ छारकरेसबधामकोलूटि, अनादिकोंएसेहीजीव
 हून्योहें॥ कोऊनहांतसहाइकुटुंब, अनादिकोसंदर
 योंहीसून्योहें॥ ७॥ वीनगएपिछलेसबहीदिन, आव
 तहेअगलंदिननेरे॥ कालमहाबलवंतबडोरिपु, सोध
 रूद्याशिरऊपरतेरे॥ एकघरीमहिमारिगिरावत, लग
 तनार्हाकछूनहिंघेरे॥ संदरसंतपुकारकहेसब, हुंपु

नितोहिकहोंअबढेरे ॥ ८ ॥ सोचस्त्यो कहांगाफलहै
 करि, तोसिरउपरकालदहेरे ॥ धामसधूमसलागिर
 त्योसठ, आइअचानकतोहिपछारे ॥ ज्यौवनमेंसु
 गकूदतफंदत, चित्रगलेनषसोंउरफारे ॥ सुंदरकाल
 डरेजिनकेडर, ताप्रभुकोकहुंवर्यो नसंभारे ॥ ९ ॥ चेत
 तव्यौनअचेतनओंचत, कालसदासिरऊपरगाजे ॥
 रोकिरहेगढकेसबद्वारनि, तूंतवकोनगलीहैभाजे ॥
 आइअचानककेसगहेजब, आकरिकेमुनिनितोहिजुल
 जे ॥ सुंदरकोनसहायकरेजब, मूंडहिमूंडभसाभरचा
 जे ॥ १० ॥ तूंअतिगाफलहोइरत्योसठ, कुंजरज्यौक
 छुसंकनआनें ॥ मायनहींतनमेंअपनोबल, सत्तभ
 योविषयासुषठानें ॥ षोसतघातसबेदिनबीतनना
 तअनीतकछूनहिजाने ॥ सुंदरकेहरिकालमहारि
 पु दंतउषारिकुंभस्थलभाने ॥ ११ ॥ मातपिताजुवती
 सुतबंधव, आइमिल्योइनसेंसनबंधा ॥ स्वारथके
 अपनेअपनेसब, सोचहजानतनाहिनअंधा ॥ क
 र्मविकर्मकरेतिनकेहित भारधरेनितआपनेकंधा ॥
 अंतविछोहभयोसबसोंपुन, याहीनेंसुंदरहेजगअ
 धा ॥ १२ ॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥ करतकरतधंधकछू

बेनजाने अंध आघत निकट दिन आगले चपाकदे ॥ जे
 सेवाजती तरकुंदा बतहे अचानक जेसे चक्रमछरी को
 लीलत लपाकदे, जेसे मक्षिका की धातम करि करत आ
 य ॥ जेसे साप मूसक सोंघ सतग पाकदे ॥ चेतरे अचेत
 नर सुंदर संभार राम, ऐसे तोही काल आयले ईगोट पा
 कदे ॥ १३ ॥ मेरो देह मेरो गेह मेरो परिवार सब मेरो धन मा
 ल मे तो बहुत विध भारो हूं ॥ मेरे सब सेवक हूँ कस की ऊँ से
 देनाहीं, मेरी जुवती के मे तो अधीक पियारा हूं ॥ मेरो वं
 स ऊँचो मेरो बाप दादा ऐसे भयो, करत बडाई मे तो जगत
 उजार्यो हूं ॥ सुंदर कहत मेरो मेरो करि जाने सठ, ऐसे न
 हीं जाने मे तो काल ही को चारो हूं ॥ १४ ॥ जब ते ज न म ध खो
 त बही ते भूल पख्यो, बालापन मां हीं भूल्यो समज्यो न रु
 षमें ॥ जीवन भयो हे जब काम चस भयो तब, जुवती सों
 एक मे क भूली रह्यो सुषमें ॥ पुत्र हूँ प्रपौत्र भए भूल्यो तब
 मोह बांध, चिंता करि करि भूल्यो जाने नही दुषमें ॥ सुंद
 र कहत सठ ती नोयन मां हीं भूल्यो, अंत पुनि जाइ पख्यो
 काल ही के सुषमें ॥ १५ ॥ उठत बैठत काल जागत सोवत
 काल, चलत फिरत काल काल उर धर्यो है ॥ कहत सु
 नत काल पात हूं पीवत काल, काल ही के गाल मां हीं ॥ पु

हरहस्योहै ॥ तातमातबंधकालसुतदारागृहकाल, सक
लकुटुंबकालकालजालपस्योहै ॥ सुंदरकहतएकरा-
मबिनसबकाल, कालहीकोकृतकियोअंतकालअ
स्योहैं ॥ १६ ॥ जबतेंजनमलेततबहीतेंआयुधटे, मा
ईसोकहतमेरोबडोहोतजातहैं ॥ आजऔरकालयो
रदिनदिनहोतऔर, दोस्योदोस्योफिरतपालतअरुवा
तहैं ॥ बालपनजीत्योजबजोचनलग्योहैआई, जोवन
हूचीतेबूढोडोकरोदीषातहैं ॥ सुंदरकहतएसेदेषतही
बूझिगयो, तेलघटराएजेसेदीपकबुझातहैं ॥ १७ ॥ सब
कोऊऐसेकहेकालहमकारतहैं, कालतोअरपंडनास
सबकोकरतुहैं ॥ जाकेभयअम्हापुनहोतहेकंपायमा
न, जाकेभयअसरसरइंद्रउडरतुहैं ॥ जाकेभयशि
वअरुशेषनागतीनोलोक, केईककल्यपीतेलोमसप
रतुहैं ॥ सुंदरकहतनरगरबगुमानकरे, तूंतोसरपल
पलकनिभेभरतुहैं ॥ १८ ॥ कालसौबलबंनकोऊनाहीदे
धीयत, सबकोकरतअंतकालमहाजोरहैं ॥ कालही
कोडरसुनिभग्योमूसापेंकंबर, जहांजहांजाईतहांत
झांवाकोघोरहैं ॥ कालभयानकभयभीतसबकीयेलो
॥ स्वर्गमृत्युपातालमेंकालहीकोसोरहैं ॥ कालहीको

कालएकसुंदरअरवंडब्रम्ह, वासौंकालडरेजोईचलो
 चहीअोरहैं ॥१९॥ चरषाभएतेजेसेंखोलतभंभीरीस्वर
 षंडनपरतकहूँनेकहूँनजानीये ॥ जेसेपुंगीवाजतअब
 डस्वरहोतपुनि, ताहूँमेंनअंतरअनेकरागगानीये ॥ जे
 सेकोईगुडीकोंचढायतगगनमांहीं, ताहूँकीसुधनीसु
 निवेसेंहीवधानीये ॥ सुंदरकहततेसेकालकोप्रचंडये
 ग, रातदिनचल्योजाइअचरजमानीये ॥२०॥ मायाजो
 रजोरनराषतजतनकरि, कहतहेएकदिनमेरेकामआ
 ईहैं ॥ तोहीतोमरतकछूवारनहीलागेसठ, देषतहीदे
 षतबल्लासोबिलाईहैं ॥ धनतोधर्योहीरहेचलतनको
 डीगेह, रीतेहाथनिसेंजेसोआयोतेसोजाईहैं ॥ करिले
 सकृतयहूँबेरीयांनआयेफिरी सुंदरकहतनरपुनि
 पछिताईहैं ॥२१॥ बावरोसभयोफिरेबावरीहीबात
 कर, बावरोज्योदेतवायूलागतबुरानोहे ॥ मायाको
 उपायजानेमायाकीचातुरीठानें, मायामेंमगनअतिमा
 थालपटानोहैं ॥ जोवनकेमदमातोगिनतनकोउनातों
 कामवसकामनीकेहाथहिबिकानोहैं ॥ अतिहिभयो
 बेहालसूजतनमाथेकालसुंदरकहतएसोअोरको
 दिवानोहैं ॥२२॥ फूठोधनफूठोधामफूठोसुखफूठोका

म जूठीदेहजूठोनामधरीकेभुलायोहैं ॥ जूठोनात
जूठीमातजूठेसुतदाराभ्रात, जूठोहितमानमानजूठो
मानलायोहैं ॥ जूठोलेनजूठोदेनजूठोमुषबोलेवेन, जू
ठेजूठेकरेफेनजूठीहीकोधायोहैं ॥ जूठहिमेंएतोभ
योजूठीहीमेंपचगयो, सुंदरकहतसाचकबहूँनआ
योहैं ॥२३॥ ॥दीर्घाक्षर॥ ॥जूठेहाथीजूठेघो
राजूठाआगेजूठादोरा, जूठाबांध्याजूठाछोराजूठारा-
जारानीहैं ॥ जूठीकायाजूठीमायाजूठाजूठेधंधेलाया
जूठामूआजूठाजीआजूठीयाकीबानीहैं ॥ जूठासोवे
जूठाजागेजूठाजूजेजूठाभागे, जूठापीछेजूठाआगेजू
ठेजूठीमानीहैं ॥ जूठालीयाजूठादीयाजूठाबायाजूठापी
या, जूठासोदाजूठाकीयाऐसाजूठाप्रानीहैं ॥२४॥ ॥
मनहरछंद॥ ॥जूठयोबंध्योहैजालताहीतेंगसत
काल, कालविकरालव्यालसबहीकोंषातहे ॥ नदी-
कोप्रवाहचल्योजातहेसमुद्रमाहीं, तेसेजगकालही
केमुषमेसमातहैं ॥ देहसोंममत्वतातेंकालकोभैमा
नतेहैं, शानउपजेतेबहिकालहूविलातहैं ॥ सुंदरकह
तपरिब्रम्हहैंसदाअरचंड, आदीमध्यअंतएकसोईठ
हरातहैं ॥२५॥ ॥छंदइंद्रव॥ ॥कालउपावतक-

षपावत कालमिलावतहेगहीमाटी ॥ कालहलावत
 कालचलावत कालसिषावतहेसवआंवी ॥ कालबु
 लावतकालभुलावत कालडुचावतहेवनघांटी ॥ सं
 दरकालमिटेजबहीपुनि ब्रह्मविचारपटेजवपाठी ॥

२६ ॥ ॥ इति श्रीकालचिंतामणिकोअंगसमाप्तः ॥

॥ ॥ अथ देहआत्माविछौहकौअंगप्रारंभः ॥ ॥

छंदइंदव ॥ ॥ येअवनारसनामुषयेसेही, येसेहीना
 सिकयेसेहीअंधी ॥ येकरयेयगयेसवद्वारस येनपसी
 सहीरोमअसंधी ॥ येसेहीदेहपरिपुनिदीसत, एकवि
 नासबलागतबंधी ॥ संदरकोउनजानिसकेयह, बोल
 तहोसकहांगयोपंरवी ॥ १ ॥ बोलतचालनपीचतपा
 वत, सीचतहेहुमकोंजेसेमाली ॥ लेतहूदेतहूदेवतरी
 ऊत, तोरततानबजावतताली ॥ जामहीकर्मविकर्म
 कीयेसव, हेयहूदेहपरीअबठाली ॥ संदरसोकितहू
 नहिंदीसतषेलगयोडकषेलसोव्या ॥ २ ॥ मातपिता
 जुवतिरुतबंधव, ला ॥ १ ॥ लोक
 कुटंबपरोहितरापन, ॥ ॥ देह
 सनेहतहा ॥ नानहु
 रचैतनः

रूपभलोतबहीलगादीसत, जोलगबोलतचालतआ
 गे॥ पीवतघातसुनेअरुदेषत सोईरहेउठिकेपुनिजा
 गें॥ मातपिताभईयामिलिबैठत प्यारकरेजुवति
 गरलागें॥ सुंदरचैतनशक्तिगईजब, देषतताहीस
 बेडरभागे॥ ४॥ ॥ छंदमनोहर॥ ॥ कोनभां
 तकरतारकियोहेंशरीरयह, पावककेमाहीदेखोपा
 नीकोजमावनो॥ नासिकाअवननेनबदनरसनवेन
 हाथपांचअंगनषसिषकोबनावनो॥ अजबअनू
 परूपचमकदमकअप, सुंदरसोभतअतिअधिक
 सुहावनो॥ जाहिछिनचैतनशक्तिजबलीनहोई,
 ताहीछिन्नलगतहेसबकोअभावनों॥ ५॥ मृतकाको
 पिंडदेहताहीमेंजुगतिभई, नासिकानयनमुषअवनब
 नायोहें॥ सीसपांचहाथअरुअंगुरीविराजमान, अं
 गुरीकेआगेपुनिनबहुलगायोहें॥ पेटपीठछातीकंठ
 बिबुकअधरगाल, दसनरसनबहुबचनसुनायेहें॥
 सुंदरकहतजबचैतनासगतिगई, वहेदेहजारीबारी
 छारकरीआएहे॥ ६॥ देहतोप्रगटयहज्यौंकि त्यों
 हीजानीयत, नेनकेऊरोंकेमाहींजावतनदेखीये॥ ना
 ककेऊरोंकेमाहींनेकनसवासलेत, कानकोऊरोषे

षपावत कालमिलावतहेगहीमाठी ॥ कालहलावत
 कालचलावत कालसिषावतहेसवआठी ॥ कालधु
 लावतकालभुलावत कालडुवावतहेवनघाठी ॥ सुं
 दरकालमिदेजबहीपुनि ब्रह्मविचारपदेजवपाठी ॥
 २६ ॥ ॥ इति श्रीकालचिंतामणिकोत्रंगसमाप्तः ॥
 ॥ ॥ अथ देह आत्मा विछोह कौं अंग प्रारंभः ॥ ॥
 छंद इंदव ॥ ॥ ये अवनारसनामुषवेसेही, वेसेही ना
 सिकवेसेही अंधी ॥ चेकरवेपगवेसचद्वारसु येन पसी
 सहीरोम असांधी ॥ वेसेही देह परिपुनि दीसत, एकवि
 नासबलागतबंधी ॥ सुंदरकोउन जानिसकेयह, बोल
 तहोसुकहांगयो पंरवी ॥ १ ॥ बोलतचालतपीचतपा
 वत, सीचतहेदुमकोंजेसेमाली ॥ लेतहूदेतहूदेवतरी
 ऊत, तोरततानबजावतताली ॥ जामहीकर्मविकर्म
 कीयेसब-हैयहदेहपरीअबठाली ॥ सुंदरसो कितहूं
 नहिंदीसनषेलगयोडकषेलसोंध्याली ॥ २ ॥ मातपिता
 जुवतिरुतवधव, लागनहेसबकोंअतिप्यारो ॥ लोक
 कुदंबयरोहितरापत, होहिनहीहमतेंकहुंन्यारो ॥ देह
 सनेहतहालगजानहु, बोलतहेमुषसब्दउचारो ॥ सुंद
 रचैतनशक्तिगईजब, वेगिकहेघरबारनिकारो ॥ ३ ॥

रूपमलोटबहीलगादीसत, जोलगबोलतचालतआ
 गे॥ पीवतघातसुनेअरुदेषत सोईरहेउटिकेपुनिजा
 गें॥ मातपिताभईयामिलिबैठत प्यारकरेजुवति
 गरलागें॥ सुंदरचैतनशक्तिगईजब, देषतताहीस
 बेडुरभागे॥ ४॥ ॥ छंदमनोहर॥ ॥ कोनभां
 तकरतारकियोहेंशरीरयह, पावककेमाहींदेषोपा
 नीकोजमावनो॥ नासिकाअवननेनवदनरसनवेन
 हाथपांचअंगनषसिषकोबनावनो॥ अजबअनू
 परूपचमकदमकअप, सुंदरसोभतअतिअधिक
 सुहावनो॥ जाहिछिनचैतनशक्तिजबलीनहोई,
 ताहीछिन्नलगतहेसबकोअभावनों॥ ५॥ मृतकाको
 पिंडदेहताहीमेंजुगतिभई, नासिकानयनमुषअवनव
 नायोहें॥ सीसपांचहाथअरुअंगुरीविराजमान, अं
 गुरीकेआगेपुनिनवहुलगायोहें॥ पेटपीठछातीकंठ
 चिबुकअधरगाल, दसनरसनबहुबचनसुनायेहें॥
 सुंदरकहतजबचैतनासगतिगई, वहेदेहजारीबारी
 छारकरीआएहे॥ ६॥ देहतोप्रगटयहज्योंकि त्यों
 हीजानीयत, नेनकेऊरोंकेमाहींजावतनदेखीये॥ ना
 ककेऊरोंकेमाहींनेकनसुवासलेत, कानकोऊरोषे

माहीसंनतनलेषिये ॥ मुषकेऊरोंपैमेंनवचनउचारहो
 त, जीमहूँकोषठरसस्वादनविसेषीये ॥ सुंदरकहत-
 कोऊकौनविधिजानेताही, पीरोकारोकाहूद्वाराजातो
 हुनपैषीये ॥ ७ ॥ ताततौयुकारेछातीकूटिकूटिरोपतहें
 बाधहुकहतमेरोनंदनकहांगयो ॥ भईयाहुकहतमेरी
 बांहआजदूरभई, वहनकहतमेरोपीरदुषदेगयो ॥ का-
 मनीकहतमेरीसीससिरताजकहा, उनततकालहाय
 घायरंडापोलख्यो ॥ सुंदरकहतकोऊताहीनहिंजानी
 सके, बोलतहुतोसोयहछिन्नमेंकहांगयो ॥ ८ ॥ रज-
 अरुबीरजकोप्रथमसंजोगभयो, चेतनासकतितब
 कौनभांतिआईहें ॥ कोऊएककहेवाजमध्यहीकीयो
 प्रवेस, किनहुकपंचमासपीछेकेसुनाईहें ॥ देहकौंवि-
 जोगजबदेषतहीहोईगयो, तबकहोकोनकहांजाइके
 समाईहें ॥ पंडितहिअपिस्वरतपिस्वरमुनीस्वर, सुंद-
 रकहतयहकिनहुनपाईहें ॥ ९ ॥ तबलोहीक्रियासब
 होतहेंविवधभांती, जबलगघटमांहिचैतन्यप्रकासहें
 ॥ देहकेअसक्तभयेक्रियासबथकीजाय, जबलग-
 स्वासचालेतबलगआसहे ॥ स्वासहुथक्योहेजबरो
 वनलगेहेतब, सबकोऊकहेअबभयोघटनासहें ॥

काहूनहिदेख्योकिहिवोरकीनकहांगयो, सुंदरकहत
 यहीबडोईतमासहैं ॥१०॥ देहतोरखरूपतोलोंजोलों
 हेअरूपमांहि, सबकोउआदरकरतसनमानहैं ॥ देदी
 पागवांधीबारबारहीमरोडेसूछ, बाहूऊसबारेअतिथ
 रतगुमानहैं ॥ देसदेसहीकेलोकआपकेहजूरहोइ,
 बैठकरितषतकहांवेसलतानहैं ॥ सुंदरकहतजबचै
 तनासकनिगई, ऊहेदेहताकीकोऊमानतनआनहैं
 ॥११॥ ॥ इतिदेहआत्माविछोहकोअंगसमासः ॥
 ॥ ॥ अथतृसनाकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदइंदव ॥
 नैननकीपलहीपलमेक्षण, आधघरीघटिकाजुगईहे
 ॥ जामगयौजुगजामगयौपुन, सांऊगईतबरातभईहैं ॥
 आजगईअरुकालगईपर, सीतरसोंफछुआरठईहैं ॥
 सुंदरऐसेहीआयुगई, तृसनादिनहीदिनहोतनईहैं ॥
 ॥१॥ ॥ दुमेलछंद ॥ ॥ कनहीकनकोंविलत्नातफि
 रैसठ, जाचतहेजनहीजनकों ॥ तनहीतनकोंअति-
 रोचकरनर, घातरहेअनहीअनकों ॥ मनहीमनकी
 असनानमिटेपुनि, धावतहैंधनहीधनकों ॥ छिनहींछि
 नसुंदरआयुघटी, कबहुंनगघोवनहीवनकों ॥२॥
 ॥ ॥ इंदवछंद ॥ ॥ जोदसवीसपचासभाएसत, होई

हजारतोलारवमंगोगी ॥ कोटिअरवधरवअसंवे, पृथ्वी
 पतिहोनकीचाहजगोगी ॥ स्वर्गपतालकोराजकरो ,
 असनाअधिकीअतिआगलगोगी ॥ सुंदरएकसंतो
 षविनासठ, तेरीतोभूषकदीनभगोगी ॥ ३ ॥ लारवक
 रोडअरवधरवनि, नीलपदमातहालगवादी ॥ जो
 रहिजोरभंडारभरेसब, ओररहीरुजमीतरडादी ॥
 तोहूनतोहीसंतोषभयोसठ, सुंदरतेअसनानहिका
 दी ॥ सूजतनाहिनकालहितोसिर, मारिकेथापमिलाई
 तमादी ॥ ४ ॥ भूषलीएदसहूदिसिदोरत, ताहीतेतूंकव
 हूनअयैहैं, भूषभंडारभरेनहिंकेसेहूं, जोधनमेरकुमे
 रलोपैहैं ॥ तूंअबआगेहीहाथपसारत, याहीतेहाथ
 कछूनहिंऐहैं ॥ सुंदरवयौनहितोषकरेनर, चाईकेषा
 ईकीतोईकैहैं ॥ ५ ॥ भूषनचावतरंकहिरावहि, भूषन
 चाईकेविशचविगोई ॥ भूषनचावतइंद्रसरासर, ओर
 अनेकजहांलगजोई ॥ भूषनचावतहैअधरुर्धहि ,
 तीनहूलोगगिनेकहांकोई ॥ सुंदरजाइतहांदुषहीदु
 ष, जानविनानकहूंसुखहोई ॥ ६ ॥ पेटपसारदियो
 जितहीतत, तेयहभूषकितीयेकथापी ॥ बोरनछो
 रेकछुनहिआवत, मेंबहुभांतभलीविधमापी ॥

देषतदेहभयंसबजीरन, तूंनितनौतनआहीअघापी
 ॥ सुंदरतोहीसदासमआवत, हेअसनाअजहूंनहिधा
 पी ॥ ७ ॥ तीनहीलोकआहारकीयोसब, सातरसमुद्रपी
 योसबपानी ॥ औरजहांतहांताकतडोलत, काढतआं
 षडरावतप्रानी ॥ दांतदिषावतजीभहलावत, याहीतें
 मेंयहडाकिनीजानी ॥ सुंदरषातमयेकितनेदिन, हे
 असनाअजहूंनअघानी ॥ ८ ॥ पांवपतालपरेगएनी
 कस, सीसगयाअसमानअंधेरो ॥ हाथदसोंदिसकों
 पसरेपुनि, पैठभरेनसमुद्रसमेरो ॥ तीनहूलोकलीए
 सुषभीतर, आंषिहुकानबंधेचहुंफेरो ॥ सुंदरदेहध-
 र्योअतिदीरघ, हेअसनाकहूंछहनेतेरो ॥ ९ ॥ वादव्र
 थाभटकेनिसिवासर, दूरकियोकबहूंनहिंधोषा ॥ तूं
 हतीचारनिषापनिकोठनि, साचकहूंमनमानहुंरोषा
 ॥ तोईमिलेतबतेंहोइबंधन, तूंमरिहैंतबहीहोइमो-
 षा ॥ सुंदरऔरकहाकहीयेतूंहि, हेअसनाअबतो-
 करतोषा ॥ १० ॥ ययौजगमाहिफिरेऊषमारत, स्वास्थ
 कोनपरीजिहिजोले ॥ ज्योहरीयाईगऊनहिंमानत, दू-
 धदोख्योकछूसोपुनिदोले ॥ तूंअतिचंचलहाथनआ-
 वत, नीकसजाईनहीसुषबोले ॥ सुंदरतोहिकख्योकि

तनीबिर, हेत्रसनाअबतूमतडोले ॥ ११ ॥ तेंकोईक
 नधरीनहिंएकहु, बोलतबोलतपेटहीपाक्यो ॥ हुंकोईबा
 तबनाईकहेंजब, तेतबपीसतहीसबपाक्यो ॥ कैतेक
 रघोसभएपरबोधत, तेअबआगेहीकोरथहांक्यो ॥ सुं
 दरसीषगईसबहीचलि, हेत्रसनाकहिंकेतोहीथाक्यो
 ॥ १२ ॥ तूंहीअमायप्रदेसपठावत, बूडतजायसमुद्रहिं
 जा ॥ तूंहीअमायपहारचढावत, वादबथामरिजाइअ
 काजा ॥ तेसबलोकअमायभलीविध, भांडकियेसब
 रंकहुराजा ॥ सुंदरनोईदुपाईकहोअब, हेत्रसनातोही
 नेकुनलजा ॥ १३ ॥ ॥ इतितृसनाकोअंगसमा
 सः ॥ ५ ॥ ॥ अथधीरजउराहनेकोअंगप्रारंभः ॥
 ॥ छंदइंदव ॥ ॥ पांवदियेचलनेफिरनेकहूं, हाथ
 दियेद्वरिकृत्यकरायो ॥ कानदियेसुनियेहरिकेजम,
 नैनदियेतिनमार्गदिषायो ॥ नाकदियेसुषसोंभतताक
 रि, जीभटईहरिकोंगुनगायो ॥ सुंदरसाजदियेपरमेश्व
 रपेटदियोपरपापलगायो ॥ १ ॥ कूपभरेअरुवावभरे
 पुनि, तालभरेवरषाअतुर्तानो ॥ काठीभरेघटमांटभ
 रेघर, हाटभरेसबहीभरिलीनो, षंडकषासबधारभ
 रेपरि, पेटभरेनचडोदरदीनो ॥ सुंदररीतोईरीतोरहे-

यह, कौन बड़ा परमेश्वर की नो ॥२॥ ॥ मनहर छंद
 ॥ ॥ कीधो पेट चूले कीधों भाठी कीधों भार अही
 जो इकछू जों किये सस बजरि जातुहे ॥ कीधों पेट थ
 ल कीधों बाघि कीधों सागर ही, जेतो जल परै ते तो स
 कल समातुहे ॥ कीधों पेट दैत कीधों भूत प्रेत राष सहें
 षां ऊषा ऊकर कछु ने कन अघातुहें ॥ सुंदर कहत प्र
 भु को न पाप लायो पेट, जब ही जनम भयो तब ही को-
 षातुहें ॥३॥ विग्रहतो विग्रह करत अति वार वार, तन
 पुनित न कनक बहु अघायोहें ॥ घटन भरत क्यौ हि ध
 र्यो ही रहत नित, शरीर शिराई में तो कबहुं न धायेहें
 ॥ देह देह कहत ही कहत जनम वीत्यो, पिंड पिंड का
 जनिस दिन ललचायेहें ॥ पुदग ललगत गलत नत्र
 पत होई, सुंदर कहत व पु को न पाप लायोहें ॥४॥ पा
 जी पेट काज कोट वाल को आधीन होई, कोट वाल
 सो तो सिकदार आगे दीनहें ॥ सिकदार दीवान के पी
 छे लग्यो डोले पुनि, दीवान हूं जाय पात साह आगे
 लीनहें ॥ पात साह कहै या बुदाय मुजे और देई, पेट
 ही पसारे वही पेट वस कीनहें ॥ सुंदर कहत प्रभु क्यौ हि
 नहीं भरे पेट, एक पेट काज एक एक को आधीनहें ॥५॥

तनीबिर, हेत्रसनाअबतुंमतडोले ॥ ११ ॥ तेकोईक
 नधरीनहिंएकहु, बोलतबोलतपेटहीपाक्यो ॥ हुंकोईबा
 तबनाईकहोंजब, तेतबपीसतहीसबपाक्यो ॥ कैतेक
 रघोसभएपरबोधत, तेअबआगेहीकोरधहांक्यो ॥ सुं
 दरसीषगईसबहीचलि, हेत्रसनाकहिंकेतोहीथाक्यो
 ॥ १२ ॥ तूंहीअमायप्रदेसपठावत, बूडतजायसमुद्रहिअ
 जा ॥ तूंहीअमायपहारचटावत, वादबधामरिजाइअ
 काजा ॥ तेसबलोकअमायभलीविध, भांडकियेसब
 रंकहुराजा ॥ सुंदरनोईदुषाईकहोअब, हेत्रसनातोही
 नेकुनलाजा ॥ १३ ॥ ॥ इतितृसनाकोअंगसमा
 सः ॥ ५ ॥ ॥ अथधीरजउराहनेकोअंगप्रारंभः ॥
 ॥ छंदइंदव ॥ ॥ पांचदियेचलनेफिरनेकहूं, हाथ
 दियेद्वरिकृत्यकरायो ॥ कानदियेसनियेहरिकेजम,
 नैनदियेतिनमार्गदिषायो ॥ नाकदियेसुषसोंभतताक
 रि, जीभदईहरिकोंगुनगायो ॥ सुंदरसाजदियेपरमेश्व
 रपेटदियोपरयापलगायो ॥ १ ॥ कूपभरेअरुचावभरे
 पुनि, तालभरेवरषाअतुर्तानो ॥ काठीभरेघटमांठभ
 रेघर, हारभरेसबहीभरिलीनो, षंडकषासबवारभ
 रेपरि, पेटभरेनवडोदरदीनो ॥ सुंदररीतोईरीतोरहे-

यह, कौन बड़ा परमेश्वर की नो ॥२॥ ॥ मनहर छंद
 ॥ ॥ कीधो पेट चूली कीधों भागी कीधों भार अही
 जोड़ कछु जों किये ससब जरि जातुहे ॥ कीधों पेठ थ
 ल कीधों बाघि कीधों सागर ही, जेतो जल परै ते तो स
 कल समातुहे ॥ कीधों पेट दैत कीधों भूत प्रेत राष सहें
 बाँज बाँज करे कछु ने कन अघातुहें ॥ सुंदर कहत प्र
 भु कोन पाप लायो पेट, जब ही जनम भयो तब ही को-
 षातुहें ॥३॥ विग्रहतो विग्रह करत अतिवारवार, तन
 पुनितन कनक बहु अघायोहें ॥ घटन भरत क्यौ हि
 ठ्यो ही रहत नित, शरीर शिराई में तो कबहुं न बायोहें
 ॥ देह देह कहत ही कहत जनम वीत्यो, पिंड पिंड का
 जनिस दिन ललचायोहें ॥ पुदग लगलत गलत नत्र
 पत होई, सुंदर कहत वपु कोन पाप लायोहें ॥४॥ पा
 जी पेट काज कोट वाल को आधीन होई, कोट वाल
 सो तो सिकदार आगे दीनहें ॥ सिकदार दीवान के पी
 छे लग्यो डोले पुनि, दीवान हूं जाय पात साह आगे
 लीनहें ॥ पात साह कहै या बुदाय मुजे और देई, पेट
 ही पसार चही पेट वस कीनहे ॥ सुंदर कहत प्रभु क्यौ हि
 नहीं भरे पेट, एक पेट काज एक एक को आधीनहे ॥५॥

तेंतोप्रभुपेटदीयोजगतनचायेजिन, पेटहीकेलीयेघ
 रघरद्वारफिर्योहे ॥ पेटहीकेलीयेहाथजोरीआगेठा
 दोहोई, जोईजोईकल्योसोईसोईउनकर्योहे ॥ पेट-
 हिकेलियेपुनीमेधसीतधामसहे ॥ पेटहीकेलीयेजा
 ईरनमांहीमर्योहे ॥ सुंदरकहतइनपेटसबभांडुफि
 यो, ओरगोलछूटेपरिपेटगोलपर्योहे ॥ ६ ॥ पेटसो न
 बलीजाकेआगेसबद्वारचले, रावआरुरंकराकपेट
 जीतीलीयेहे ॥ काऊवाघमारतबिडारतहेकुंजरकों,
 ऐसेरकरबीरपेटकाजप्रानदीयेहे ॥ जंचमंत्रसाधन-
 आराधनमसानजाई, पेटआगेडरतनिडरगसेहीये
 हे ॥ देवताअसरभूतप्रेततीनोंलोकपुनि, सुंदरकहत
 प्रभुपेटजेरकीयेहे ॥ ७ ॥ प्रातहीउठतजबपेटहीकी-
 चिंतातब, सबकोऊजातुआपुआपकेअहारकों ॥
 कोऊअनघातपुनिआमिषभषतकोऊ, कोऊघांस
 चरतचरतकोउदारकों ॥ कोऊमोतीफलकोऊवासर
 सचयपान, कोऊपौनपीवतभरतपेटभारको ॥ सुंदर
 कहतप्रभुपेटहीअमाएसब, पेटतुमेदीयोहेजगतहो
 नप्यारकों ॥ ८ ॥ ॥ छंदइंदव ॥ ॥ पेटकेकारनजीव
 हनेबहू, पेटहीमांसभषेसुरापी ॥ पेटहीलेकरचोरी

करावत, पेढहीकोंगठरीगईकापी ॥ पेढहीपासगरे
 सहिडारत, पेढहूडारतकूपरूबापी ॥ सुंदरकाहेकों
 पेढदियोप्रभु, पेढसोअरनहींकोईपापी ॥ ६ ॥ ओ
 रनकोप्रभुपेढदियोतुम, तेरेतोपेढकहूँनहिंदीसे ॥ ए
 भटकाईदीयेदसहूदिस, कोउकरांधतकोउकपीसे
 ॥ पेढहीकारननाचतहीसब, ज्योंघरहीघरनाचतकी
 से ॥ सुंदरआपनषावहुपीवहु, कोनकरीइनअमरी
 से ॥ १० ॥ ॥ सुंदमनहर ॥ ॥ काहेकोंकाहूकेआ
 गेजायकेआधीनहोई, दीनदीनबचनउचारमुषकह
 तें ॥ जिनकोतोमदअरुगरबगुमानअति, तिनके
 फठारेनकबहूँनसहते ॥ तुंमारेईभजनसोंअधिक
 लौलीनअति, सकलकोत्यागिकेएकांतजाइगहते
 ॥ सुंदरकहतयहीतुमहीलगायोपाप, पेढनहूँतोतो
 प्रभुबैठेहमरहते ॥ ११ ॥ पेढहीकेवसरंकपेढहीकेवस
 राव, पेढहीकेवसअोरषानसुलतानहे ॥ पेढहीकेवस
 जोगीजंगमसन्यासीशेष, पेढहीकेवनवासीवासीषा
 तपानहें ॥ पेढहीकेवसअधिमुनितपधारिसब, पेढ
 हीकेवससिधसाधकसजानहें ॥ सुंदरकहतनहीं
 काहूकोगुमानहे, पेढहीकेवसप्रभुसकलजिहानहें

१२॥ ॥ इति धीरज उराहनको अंगरसमाप्तः ॥ ६ ॥
 ॥ अथ विश्वासको अंगप्रारंभः ॥ ॥ छंद इंदव ॥
 होइ निचिंत करे मत चिंतहि, चांचदई सोई चिंत करे गो
 ॥ पांच पसार पल्यो किन सोवत, पेट दीयो सोई पेट भेसो
 ॥ जाय जिते जल के थल के पुनि, पाहन में पहुंचा यधरे
 गो ॥ भूषही भूष पुकारत हेनर, सुंदरतुं कही भूष मरे गो
 ॥ १ ॥ धीरज धारि विचार निरंतर तोही, रच्यो सोई आपु
 ही ऐं हैं ॥ जेती कभूष लगी घट प्राणहि, तेति कतुं अनया
 सहि पै हैं ॥ जो मन में असना करि ध्यावत, तोति हुं लोक
 नषात अघै हैं ॥ सुंदरतुं मत सोच करे कछु, चंचदई जि
 न चून ही दि हैं ॥ २ ॥ नेकुन धीरज धारत हेनर, आतुर हो
 इद सो दिसधावे ॥ ज्यों पसुषें च तोड़ावत बंधन, ज्यों
 लगि नीर अहार न आवें ॥ जानत न हीं महामतति मूर
 ष, जाघर द्वार यनी पहुंचावे ॥ सुंदर आप कियो घट भा
 जन, सो भरि हे मत सोच उपावे ॥ ३ ॥ भाजन आप घडे
 जितने भरि, हे भरि हे भरि हे भरि हे जू ॥ गावत हैं जिनके
 गुन कौं दरि, हैं दरि हे दरि हे दरि हे जू ॥ आदिहु अंतहु म
 ध्य सदा हरि, हैं हरि हे हरि हे हरि हे जू ॥ सुंदर दास सहा
 य शही करि, हैं करि हे करि हे करि हे जू ॥ ४ ॥ काहे कौं दो

दोरतहेदसहृदिस, तूंनरदेषिकियोहरिजूको ॥ बैठि
 रहेदुरिकेमुषसुंदी, उधारतदांतषवाइहेहूको ॥ गर्भय
 केप्रतिपालकरीजिन, होइरतद्योतबहीजडमूको ॥ सुं
 दरकय्यौं विललातफिरेअब, राषतद्वेविसहासप्रभू
 को ॥ ५ ॥ ज्यादिनतेंग्रभवासनज्यौनर, आइअहार
 लीयोतबहीको ॥ षातहीषातभएइतनेदिन, जानत
 नाहिनभूषकहीको ॥ दोरतध्यावतपेटदिषावत, तूं
 सठकीटसदाअनहीको ॥ सुंदरकय्यौं विसवासनरा
 षत, सोप्रभुविश्वभरेकबहीको ॥ ६ ॥ षेचरभूचरजेज
 लकेचर, देतअहारचराचरपोषे ॥ वैहरिजूसबकोंप्रति
 पालक, ज्यौंजिहिभांतितिसीविधितोषें ॥ तूंअबकय्यौं
 विसवासनराषत, भूलतहेकितधौंषेहिधौंषे ॥ तोहि
 तहांपहुंचायरहेप्रभु, सुंदरवैठिरहेकिनओषें ॥ ७ ॥
 ॥ छंदमनहर ॥ ॥ काहेकोंबधूराभयोफिरतअज्ञा-
 नीनर, तेरेतोरिजकतेरेघरबैठेआईहें ॥ भावेतुस्फमेर
 जाईभावेजाईमारुदेस, जितनोकभागलिष्योतित
 नोकपाइहें ॥ कूपमाजभरिभावेसागरकेतीरभरि, जि
 तनोकभांडोनीरतितनोसमाईहें ॥ ताहीतेंसंतोषक
 रि सुंदरविश्वासधरि, जितनोरच्यौहेघटसोईजुंभ

राईहैं ॥ ८ ॥ काहेकोंफिरतनरदीनभयोघरघर, देषीय
 ततेरोतोअहारइकसेरहे ॥ जाकोदेहसागरमेंसुन्यो
 सतजोजनको, ताहूकोतोदेतप्रभुयामेनहिंफेरहें ॥ भू
 षोकोऊरहतनजानीयेजगतमांहीं, कीरीअरुकुंजर
 सबनिहीकोदेरहें ॥ सुंदरकहतविसवासक्योंनराष-
 सठ, धारधारसमुजायकल्होकेतीवारहें ॥ ९ ॥ तरेतो
 अधिरजतुंआगलीहीचिंतकरे, आजतोभस्योहेपेट
 कालकेसीहोईहें ॥ भूषोईपुकारेअरुदीनउठिवातो
 जाइ, अतिहिअज्ञानीजाकीमतिगईषोईहें ॥ ताकौं
 नहिंजानोंसठजाकौंनामविश्वंभर, जहांतहांप्रगटि
 सबनिदेतसोईहें ॥ सुंदरकहततोहीचाकोतोभरोंसो
 नाहीं ॥ एकविसवासविनयाहीभांतिरोईहें ॥ १० ॥ दे
 षधोसकलविश्वभरतभरनहार, चूचकेसमानचून-
 सबहीकोदेतहें ॥ कीटपक्षपंपीअजगरमछकछपु
 न, उनकेनसोदाकोऊनकोकछुषंतहें ॥ पेटहीकेकाज
 रातदिवसअमतसठ, मेनोजान्योनीकेकरितुंनोकोऊ
 प्रंतहें ॥ मानुषशरीरपायकरतहेंहायहाय, सुंदरक
 हतनरतेरसिररेतहे ॥ ११ ॥ तूंतोभयोबावरोउताव
 राफिरतअति, प्रभुकोविश्वासगहिकाहेनरहतुहें

॥ तैरे तो रिज कहें सो आई हैं सहज मांहीं, यों ही चिंता क
 रिकरि देह को दहतु हैं ॥ जिन यह न पशिष सजिके संवा
 स्यो तो ही, अपने कीये का वह लाज को दहतु हैं ॥ काहे को
 अजानी कछु सोच मन मांहीं करे, भूषो तुं कंदन रत्ने संद
 र कहतु हैं ॥ १२ ॥ जगत में आई के विसाख्यो हे जगत प
 ति, जगत कीयो हे सोई जगत भरतु हे ॥ तैरे निस दिन बिं
 ता और ही परहे आई, उद्यम अनेक भांति भांती के कर
 तु हैं ॥ इत उत जाय के कसाई करिल्याऊं कछु, ने कुन अ
 जानी न रधारज धरतु हैं ॥ सुंदर कहत एक प्रभु के विश्वा
 स बिन, याद ही को च्या सठ पचिके मरतु हैं ॥ १३ ॥ ॥
 इति विश्वास को अंग समाप्तः ॥ ७ ॥ ॥ अथ देह
 मलीनता का गर्व प्रहार को अंग प्रारंभः ॥ ॥
 छंद मन हर ॥ ॥ देहतो मलीन अति बहु त विकार
 भरी, ताहू मांहीं जरा व्याधिस बंधु पुरा सी हैं ॥ कबहू
 क पेट पीर कबहू क सिर बाध, कबहू क आंष कान मु
 ष में विधासी हैं ॥ औरहू अनेक रोम न पशिष पूर रहे
 कबहू क रखा सचले कबहू क पासी हे ॥ ऐ सो या शरीर
 ताही आपनो के मानत हे, सुंदर कहत यामें कान स्रष
 वासी हैं ॥ १ ॥ ज्या शरीर मांही तूं अनेक स्रष मान रख्यो

ताहीतुं विचारयामें कोन वात भली है ॥ मेद सज्जामांस
 रगरगमें रगत भर्यो, पैद हू पिटारी सी में ठोर ठोर मली
 हैं ॥ हाड निसों भर्यो सुष हाड निके नैन नाक, हाथ पां
 व सोऊ सच हाड नीकी नली है ॥ सुंदर कहत याही देखी
 जिन भूली कोई, भीतर भंगार भरी ऊपर तो काली है ॥ २
 ॥ छंद इंदव ॥ ॥ हाड को पिंजर चाम मर्यो,
 सच मांही भर्यो मल मूत्र विकारा ॥ थूकर लाल पेर सु
 षते पुनि, व्याधि चहे सब और हिंदारा ॥ मांस की जीभ
 सों घाय सबे कछू, ताही तें ताको हे कोन विचारा ॥ ऐसे
 शरीर में पैसि के सुंदर, के से के कीजिये सो च अचारा
 ॥ ३ ॥ थूकर लाल भर्यो सुष दी सत, आंघि मेगी डर
 नाक मे सेढो ॥ और उद्धार मली न रहे अति, हाड के मां
 स के भीतर मेढो, ऐसे शरीर में चास कियो तब, एक से
 दी सत ब्राह्मण देढो ॥ सुंदर गर्व कह हाड तने पर, काहे
 को तूं नर चालत देढो ॥ ४ ॥ जादि न गर्भ संजोग भयो
 जब, तादि न बूंद छिपाइती नाही ॥ द्वादस मास अ-
 धो सुष फूलत, बूडर ल्यो पुनि बार समाहीं ॥ तारजवी
 रज की यह द्रेह सौं, तूं अब चालत देषत छाहीं ॥ सुंद
 र गर्व गुमान कह सठ, आपुनि आदि विचारत नाही

॥५॥ ॥ इति देहमलीनतागर्वप्रहारको अंगसमा
प्तः ॥८॥ ॥ अथ नारीनिंद्याको अंगप्रारंभः
॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥ कामनीको तनमानो क-
हिये सघनवन, उहांको ऊजाय सो तो भूलेहु परतुहें ॥
कुंजरहे गतिकटिके हरिकों भयजामें, बेनी कालीना
गनी ऊफनिकों धरतुहें ॥ कुचहे पहार जहां कामचोर
रहे तहां, साधिके कटाक्षबानप्रानको हरतुहें ॥ सुंद-
र कहत एक ओर डुरजामें अति, राक्षसी बदनषाऊं
षाऊं ही करतुहें ॥ १॥ विषही की भोमी मांहि विषके
अंकुर भए, नारी विषवेली बदीनषसिषदेवीये ॥
विषहीके जरमूल विषहीके डारपात, विषहीके फूल
फल लागे जु विशेषीये ॥ विषके तंतूपसार उर जाई आं
टीमार, सब नर वृक्ष परलपटे ही लेषीये ॥ सुंदर कहत
कोऊ संततरु वचि गयौ, तिनके तो कहूं लतालागीन
हीं पेषीये ॥ २॥ उदरमें नरक नरक अधद्वारनिमें, कुच
निमें नरक नरक भरि छातीहें ॥ कंठमें नरक गाल चिं-
बूक नरक बिंब, मुरघमें नरक जीभ लालहु चुचातीहें ॥
नाकमें नरक आंषकांनमें नरक चहे, हाथयांवनषशि-
षनरक दिषातीहै ॥ सुंदर कहत नारी नरककों कुंडयह

नरकमेंजाईपरेसोनरकपातीहैं॥३॥कामनीकेअंग-
 अतिमलिनमहांअसुख,रोमरोममलिनमलिनसब
 द्वारहैं॥हाडमांसमज्जाभेदचामसोंलपटराधें,ठोरठो-
 ररक्तहुकेभरेईभंडारहैं॥मूत्रऊपुरीषआंतएकमेक-
 मिलीरही,औरहीउदरमाहींविवधविकारहैं॥सुंदर
 कहतनारीनषसिषनिंदासूप,ताहीजेसराहेसोतोपड़े
 ईगैचारहैं॥४॥ ॥छंदकुंडलिया॥ ॥धारैरसप्रि-
 यामंजरी,औरसिंगारहिजान॥चतुराईकरिबहुतवि-
 ध,विषैबनाईआन॥विषैबनाईआन,लागतविष-
 यनिकोंप्यारी॥जागैमदनप्रचंड,सराहैनषशिषना-
 री॥ज्यौरोगीमिष्टान्नखाई,रोगहिविस्तारें॥सुंदरये-
 गतिहोई,रसिकजोरसप्रियधारै॥५॥भायरसिकप्रि-
 यकेसुनत,उपजेबहुतविकार॥जोयामेहिचितधरे
 बहेहोतनरधार॥बहेहोतनरधार,चारतोकबहुनला-
 गे॥सुनतविषयकीबात,लहरविषहीकीजागे॥ज्यौं
 कोऊउंधतनीदमें,लेपुनिसेजबिछाय॥सुंदरएसीजा-
 नकै,सुनतरसिकप्रियभाय॥६॥ ॥इतिनारीनिं-
 द्याकोअंगसमाम॥७॥ ॥अथदुष्टज-
 नकोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनहरा॥ ॥अपने

नदोषदेषेपरकेअगुनपेषे, दुष्टकोस्वभावउठिनिंदा
हीकरतुहें ॥ जेसेकोईमहलसंवारिराष्योनीकैकरी,
कीरीतहांजाइछिद्रदूंततफिरतुहें ॥ भोरहीतेंसांजल
गसांजहीतेंभोरलग, सुंदरकहतदिनएसेहीभरतुहें
॥ पावकीतरेकीनहीसूजेआगमूरषकों, औरसोंकह
ततेरेसिरपेंबरतुहें ॥ १॥ ॥ छंदइदव ॥ ॥ घातअ
नेकरहेउरअंतर, दुष्टकहेमुषसोंअतिमीठी ॥ लोटत
पोटतव्याघ्रहिज्यौनित, ताकतहेपुनिताहीकीपीठी
॥ ऊपरतेंछिरकेजलआनस, हेठलगावतजारिअंगी
ठी ॥ यामहिभूरकछूमतिजानहु, सुंदरआपुनिआं-
षिनिदीठी ॥ २॥ आपनैकाजसंवारनकेहित, औरको
काजविगारतआई ॥ आपनौकारजहोउनहोऊ, बुरो
करऔरकोडारतआई ॥ आपहूषोवतऔरहूषोवत,
षोयदुनोघरदेतबहाई ॥ सुंदरदेषतहीबनिआवत
दुष्टकरेनहिंकोनबुराई ॥ ३॥ ज्यौंनरपोषतहेंनिजदे
हही, अन्यविनासकरेतिहिंवारा ॥ ज्यौंअहीऔरम
नुष्यहीकाटत, वाहीकछूनहिंहोतअहारा ॥ ज्यौंपुनि
पावकजारिसवेकछु, आपहीनासभयोनिरधारा ॥
त्यौयहसुंदरदुष्टस्वभावहू, जानितजोकिनतीनप्रका

रा॥४॥ सर्पडसेसनहीकछुतालक, वीछूलगेसुभ-
 लोकरामानो॥ सिंधूषायतोनाहीकछूडुर, जोगजमा
 रततो नहिं हानो॥ आगजरोजलबूडीमरोगिरि, जाइ
 गिरोकछुभैमतआनों॥ सुंदरआरभलेसबहीयह,
 दुर्जनसंगभलोजिनजानों॥५॥ ॥इतिदुष्टजन-
 कोअंगसमाप्तः॥१०॥ ॥अथमनकोअंगप्रा-
 रंभः॥ ॥छंदमनहर॥ ॥हृदकिहृदकिमनराष
 तज्यौंछिनछिन, सठकिसठकिचहुंओरअबजातहें॥
 लठकिलठकिललचायलोलवारवार, गठकिगठकिक
 रिषिषफलवातहें॥ ऊठकिऊठकितारतोरतकरमही
 न, भठकिभठकिकहुंनेकनअघातहें॥ पठकिपठकि-
 सिरसुंदरजुमानीहारी, फिठकिफिठकिजाईसधौंको
 नवातहें॥१॥ पलहीमेंमरिजायपलहीमेंजीवतुहें, प
 लहीमेंपरहाथदेषतविकानोहें॥ पलहीमेंफिरेनचषं
 डहुब्रंद्हांडसब, देख्योअनदेख्योसोतोयातेनहीछानो
 हें॥ जातो नहीजानीयतआवतो नदीसेकछू, रोसेसीब
 लाईअवतासोंपख्योपानोहें॥ सुंदरकहतयाकीगति
 हूनलषीपरे, मनकीप्रतीतकोऊकरेसुदिवांनोहे॥२॥
 घेरीयेतोघेख्योहूनआवतहेमेरोपुत, जोईपरबोधाएक

काननधरतुहे ॥ नीतिनअनीतिदेषेसुभनअसुभपे
 पे, पलहीमेंहोतीअनहोतीहूकरतुहे ॥ गुरुकीनसाधु
 कीनलोकवेदहूकीसंक, काहीकीनमानेनतोकाहूतें
 डरतुहें ॥ सुंदरकहतताहीधीजियेसुकोनभांती, मन
 कोरवभावकछूकल्योनपरतुहें ॥ ३ ॥ कामजबजागेत
 बगिनतनकोऊसंक, जानेसबजोईकरिदेषतनमाधीहें
 ॥ क्रोधजबजागेतबनेकनसंभारसके, ऐसीविधमूलकी
 अविद्याजिनसाधीहें ॥ लोभजबजागेतबन्नपतिनक्यों
 हीहोई, सुंदरकहतइनऐसेंहीमेंषाधीहें ॥ मोहमतवारो
 निसदिनहीफिरतरहे, मनसोनकहूंहमदेव्योअपराधी
 हें ॥ ४ ॥ देषवेकोदोरेतोअठकीजाईयाहीघोर, सुनवे
 कोदोरेतोरसिकसिरताजहें ॥ संगवेकोंदोरेतोअधा
 ईनरुगंधकर, षायवेकोंदोरेतोनधांपेमहराजहे ॥ भो
 गहीकोंदोरेतोअपतिनहीहोईक्योंही, सुंदरकहतया-
 हीनेकहीनलाजहें ॥ काहूकोनकल्योकरेआपुनीही
 टेकपरे, मनसोनकोऊहमदेव्योदगावाजहें ॥ ५ ॥ देष
 नकुठोरठोरकहतऔरकीऔर, लीनजाईहोतहाडमां
 सउरगतमें ॥ करतबुराईसरओसरनजानेकछू, धका
 आयदेतरामनामसोंलगतमें ॥ जहांसरअसरवहां

जेसबमेषीजन, सुंदरकहतदिनघालतभगतमें॥ ओ
 रुअनेकअंतराईहीकरतरहे, मनसोनकोऊहेअध-
 मयाजगतमें॥ ६॥ जिनठगेसंकरविधाताइंद्रदेवमुनी
 आपनोऊअधीपतिठग्योजिनचंदहें॥ ओरजोगीजं
 गमसंन्यासीसेषकोनगिने, सबनिकोंठगतठगावेन
 स्वच्छंदहें॥ तापेस्वरअनुषीस्वरसबपचियचिगये, का
 हूकेनआवेहाथएसोयापेचंदहे॥ सुंदरकहतअबको
 नबिधिथीजेताही, मनसोनकोऊयाजगतमाहीरिंदहें
 ॥ ७॥ रंककोनचावेअभिलाषधनपायवेकी, निसदिन
 सोचकरीएसेहीपचतहे॥ राजाहीनचावेसबभोमीही
 कोराजलेवै, ओरउनचावेजोईदेहसोरचतहें॥ देवता
 अस्तरसिधपन्नगसकललोक, कीटपशुपंछीकहूके
 सेकैवचतहें॥ सुंदरकहतकाहूसंतकीकहीनजाय, म
 नकेनचाएसबजगतनचतहें॥ ८॥ ॥ छंदइंदव॥ ॥
 केतोक्तदोसबएसमुजावत, नेकनमानतहेमनभोंड॥
 भूलरदोबिषयासुषमेंकछु, ओरनजानतहेसठदोडू
 ॥ आंषिनकानननाकविनासिर, हाथनपावनहींमुषयो
 डं॥ सुंदरताहीगहेकोऊक्यौकरि, निकसिजाईबडोमन
 लौंडू॥ ९॥ दोरतहेदसहूदिसकोंसठ, चायुलग्योतवतें

भयोबेंडा ॥ लाजनकानकछूनहिंराषत, सीलस्वभा
 वकीफोरतभेंडा ॥ सुंदरसीसकहाकहदीजियें, भे
 दैनबानछेदेनहिंगेंडा ॥ लालचलागरल्योमनवीस
 र, बारहीवाटअठारहीपेंडा, ॥ १० ॥ स्यानकहूंकेश
 गालकहूंकि, बिडालकहूँमनकीमतिनैसी ॥ देठक
 हूकीधोडूमकहोंकियों, भांडकहूँकेभंडाईजैसी ॥
 चोरकहूँचेदपारकहूँठग, जारकहूँउपमाकहूँकैसी
 ॥ सुंदरओरकहाकहियेअब, यामनकीगतदीस
 तऐसी ॥ ११ ॥ कैचेरतुमनरंकभयोसठ, मागतभी
 षदसोंदिसडूल्यो ॥ कैचेरतुमनछत्रधर्योशिर, का
 मनिसंगहिंडोरनफूल्यो ॥ कैचेरतुमनछीनभयोअ
 तित, कैचेरतुसकषपाईकेफूल्यो ॥ सुंदरकैचेरतोहीक
 ल्योमन, कोनगलीकेहीमारगभूल्यो ॥ १२ ॥ इंद्रनि
 केसकषचाहतहेमन लालचलागिअमेंसठयोहीं ॥
 देवीमरीचीभर्योजलपूरन, थापतहेमृगमूरषल्यो
 ही ॥ प्रेतपिशाचनिशाचरडोलत भूषमरेनहिंधाप
 तक्योही ॥ वायुबघूरहिकोनगहेकर, सुंदरदोरत
 हेमनल्योही ॥ १३ ॥ जैसबकोसिरताजततछिन,
 ज्योंअभिअंतरज्ञानविचारें ॥ ज्योंकछुओरविसे

सखचंचुत, तोयहृदेहअमोलकहारे ॥ छांडिकुबु-
 धभजोभगचंतहि, आपुतरेपुनिओरहीतारे ॥ सुं-
 दरतोहिकर्यो कितनीविर, तूंमनक्योंनहिंआप-
 संभारे ॥ १४ ॥ कोनस्यभावपस्योउठिदोरत, अमृ-
 तछांडिचचोरतहाडें ॥ ज्योंभ्रमकीहथनीद्वगदेष
 त, आतुरहोइपडेगजपांडे ॥ चादब्रथाभटकेनिस
 वासर, एकहूसीषलगीनहिंराडें ॥ सुंदरतोहिसदं
 समुजावतरेमनतूंभ्रमकोंकिनछांडे ॥ १५ ॥ जोमनना
 रिकिवोरनिहारत, तोमनहोतहेलाहीकोरूपा ॥ जो
 मनकाहूसोंभोधकरेजब, तोमनहैतबहीतबरूपा
 ॥ जोमनमायाहीमायारदेनित, तोमनबूडतमाया
 केकूपा ॥ सुंदरजोमनब्रह्मविचारत, तोमनहोतहे
 ब्रह्मरचरूपा ॥ १६ ॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥ कब
 हूंकहंसउठेकबहूंकरोईदेत, कबहूंबकतकहूंअंत-
 हूनलहीये ॥ कबहूंकषाईतोअघातनहींकाहूकरि
 कबहूंककहेमेरेकछूनहिंचहियें ॥ कबहूंआकास
 जाइकबहूपातालजाई, सुंदरकहतताहीकैसेंकरि
 गहियें ॥ कबहूंकआयलगकबहूंउतरभागे, भूतके
 सेचित्रकरेऐसोमनकहियै ॥ १७ ॥ कबहूंतोपांयको

परेवाकेदिषावेमन, कबहूंकधूरकेचावरकरिले
 नहेकबहूंतोगुटिकाउछारतआकासबोर, कबहूं
 तोरातेपीरेंगस्यामस्वेतहे ॥ कबहूंतोआंबकोउ
 गाईकरिठाढोकरे, कबहूंतोसीसधरजुदेकरिदेतहे
 ॥ वाजीगजप्यालऐसोसुंदरकहतमन, सदाईभ्रम
 नरहेऐसोकोऊभेतहे ॥ १८ ॥ कबहूंकसाधहोतकब
 हूंकचोरहोत ॥ कबहूंकराजाहोतकबहूंकरंकसो ॥
 कबहूंकदीनहोतकबहूंगुमानीहोत, कबहूंकसूधो
 होतकबहूंकबंकसो ॥ कबहूंककामीहोतकबहूंक
 जतीहोत, कबहूंनिर्मलहोतकबहूंकपंकसो ॥ मन
 कोस्वरूपऐसोसुंदरफटिकजैसेकोबहूंकसूरहोत
 कबहूंकमयंकसो ॥ १९ ॥ हाथीकोसोकानकीधोंपीपर
 कोपानकीधों, ध्वजाकोउडानकहूंधिरनरहतुहें ॥
 पानीकोसोधरकीधोंपानउरजेरकीधों, चक्रकेसो-
 फेरकोउकेसेकेगहतुहें ॥ अरहटकीमालकीधोंचर
 प्याकोप्यालकीधों, फेरीघातोबालकछूसुधनल
 हतुहें ॥ धूमकेसोधांवताकोराधवेकोचावेऐसो,
 मनकोरवभावसोतोसुंदरकहतुहें ॥ २० ॥ सरवमा
 नेदुरवमानेसंपतिविपतिमाने, हर्षमानेसोकमाने

मानेरंकधनहे॥ घटिमानेबटिमानेसुभहुअसुभमा
 ने॥ लाभमानेहानमानेयाहीतेंकपनहे॥ आपमाने
 पुन्यमानेउत्तममध्यममाने, नीचमानेउंचमानेमाने
 मेरोतनहे॥ स्वर्गमानेनर्कमानेबंधमानेमोक्षमाने,
 सुंदरसकलमानेतातेंनाममनहे॥ २१॥ जोईजोईदे
 पेकछुसोईसोईमनआही, जोईजोईसुनेसोईमन
 हीकोभ्रमहे॥ जोईजोईसुंघेजोईपाईजोरयर्सहोई,
 जोईजोईकरेसोईमनहीकोकर्महे॥ जोईजोईग्रसे-
 जोईत्यागेजोईअचुरागे॥ जहांजहांजोईसोईमनही
 कोभ्रमहे॥ जोईजोईकहेसोईसकलसुंदरमनजो
 ईजोईकल्पेसोईमनहीकोधर्महे॥ २२॥ एवहीविदप
 विश्वज्योंकोत्योहीदेषीयतअतिहिसधनताकेप
 अफलफूलहे॥ आगलेऊरतपातनएनएहीतजात
 ॥ एसेयाहीतरुकोअनादीकालमूलहे॥ दसचारलो
 कलोपसरीरत्योजहांतहां, अस्थउरधपुनिशुधाम
 रुस्थलहे॥ कोऊतोकहतसतकोऊतोकहेअसत्य,
 सुंदरकहतभ्रमहीकोमनमूलहे॥ २३॥ तोसांनकपू
 तकोऊकितहनदेषियत, तासोनसपूतवोऊदेषिय
 तओरहे॥ तूंहीआपभुलेमहानीचहूतेनचहोई,

तूहीआपजानेतोसकलसिरमोरहैं॥तूहीआपभ्रमे
तबजगतभ्रमतदेखे,तेरेस्थितभयेसबठोरहीकोठो
रहे॥तूहीजीवरूपतूहीब्रह्महैंअकासवत,सुंदर
हृत्तमनतेरीसबदोरहे॥२४॥मनहीकेभ्रमतेजग
तयहृद्देवीयत,मनहीकोभ्रमगएजगतविलातहे॥
मनहीकेभ्रमजैचरिमेंउपजतसाप,मनकेविचारे-
सापजेवरीसमातहे॥मनहीकेभ्रमतेमरीचिकाको
जलकहे,मनहीकेभ्रमसीपरूपोसोदिषातहे॥सुंद
रसकलयहृद्दीसेमनहीकोभ्रम,मनहीकोभ्रमगए
ब्रह्महोईजातहे॥२५॥मनहीजगतरूपहोईकरि
विसतरुयो,मनहीअलपस्त्वजगतसोन्यारोहे॥म
नहीसकलघटव्यापकअखंडएक,मनहीसकलय
हजगतपियारोहे॥मनहीआकासवतहाथनपरत
कछू,मनकेनस्त्वरेषब्रधहीनचारोहे॥सुंदरकहत
परमारथविचारेजब,मनमिटिजाइएकब्रह्मनिज,
सारोहैं॥२६॥ ॥इतिमनकोअंगसमाप्तः॥११
॥ ॥अथचाएककोअंगप्रारंभः॥ ॥छंदमनह
र॥ ॥जोईजोईछूटवेकोकरतउपायअग्य,सोई
सोईद्रुटकरबंधनपरनुहैं॥जोगजज्ञपतपतीरथ

(५२)

सुंदरविलास.

अं११

व्रतादिओर, ऊं पापातलेत जाई हीमाले गरत हें ॥
कान हूं फराई पुनि कें सहूलु चाई अंग, विभूतिल
गाई शिर जटा ऊं धरतु हे ॥ विना ज्ञान पाए न हीं छु
दत लह दय ग्रंथी, सुंदर कहत यों ही भ्रम के मरतु हे
॥ १ ॥ ॥ सर्व लघु अक्षर ॥ जपत पकरत
धरत व्रत जत सत, मन च चक्रम भ्रम कष्ट सहत
तन ॥ चल कल वसन असन फल पत्र जल, कस
तरसन रसत जत वसत वन ॥ जरत मरत नर गरत
परत सर, कहत लहत यह गजदल बल धन ॥ प
चत पचत भव भय न टरत सठ, घट घट प्रगट रह-
त न लषत जन ॥ २ ॥ ॥ अंग्रे पूर्व वत् ॥ ॥
जोग करे जाग करे वेद विधित्याग करे, जप करे त
प करे यों ही आशु पूटी हें ॥ जप करे नेम करे तीर
थ ऊं व्रत करे, पुहमी अटन करे व्रथा स्यासतू-
टि हें ॥ जीव को जतन करे मन में वासना धरे, पचि
पचि यों ही मरे काल सिर पूटि हें ॥ ओर हू अनेक
विधिकोटिक उपाय करे, सुंदर कहत विन ज्ञान न
हिं बूटि हें ॥ ३ ॥ बुधी करि हीन नर रजत मछायर
त्यो, बन वन फिरत उदास होइ धरतें ॥ कठनत प

स्याधरीमेघसीतघामसहे, कंदमूलषाईकोऊका
 मनाकेडरतें ॥ अतिहीअज्ञानओरविधिउपा-
 यकरे, निजरूपभूलिकेबंधनजाईपरतें ॥ सुंदरक
 हतऊंधीवोरकेसेदीपेसुषहाथमांझिंआरसीनके
 रेमूंदकरतें ॥ ४ ॥ मेघसहेसीतसहेसीसपर घाम
 सहे, कठिनतपस्याकरिकंदमूलषातहें ॥ जोगक
 रेजागकरेतीरथउग्रतकरे, पुन्यनानाविधकरेमन
 मेंसहातहें ॥ ओरदेवीदेवउपासनाअनेककरे,
 आयनीकीहोसकेसेंआकडोडेंजातहें ॥ सुंदरक
 हतएकरविकेप्रकासविनु, जेगनाकीजोतीक-
 हारजनीविलातहें ॥ ५ ॥ कोईफिरेनागोपायगुद
 रीबनायकरी, देहकीदिसादिषाईआईलोकधू-
 त्योहे ॥ कोईदूधाधारीहोईकोईफलाहारीहोई,
 कोईअधोसुषफूलीफूलिघूमछूट्योहे ॥ कोईन
 हींघायलोनकोईसुषगहेंमोन, सुंदरकहतयोही
 वृथाभूसकूट्योहें ॥ प्रभुसोंतोप्रीतिनाहींज्ञान
 सोपरीचेनाहीं, देषोभाईआंधरानेज्योंबजारलू-
 ट्योहे ॥ ६ ॥ ॥ छंदइंदव ॥ ॥ आसनमारि
 संवारिजटानष, उज्जलअंगविभूतिचटाई ॥

(५६)

सुंदरविलास.

अं॥

हमको कछुटे हित्या करि घेरि रहे बहु लोग लु-
गाई ॥ कोउ कउत्तम भोजन लावत, कोइ कल्याव
त पान मिठाई ॥ सुंदर ले करि जात भयो सब, मू-
रख लोक नया सिध पाई ॥ ७ ॥ ऊर धपाय अधोषु
षकै करि घूटत घूमहि देह जु लावें ॥ मेघ हू सीत
हू धाम सहै सिर, तीनहु काल महा तुष पावें ॥ हाथ
कछु न परे कब हू कन, मूरष कूकस कूटि उडावें ॥ सुं-
दर वैछे विषय सुधी को घर, बूडत है अरु जां ऊर-
गावें ॥ ८ ॥ ये हत ज्यों पुनि नेहत ज्यों पुनि, बेहला
इके देह सवारी ॥ मेघ सहै शिर सीत सहै तनु, धूप
सहै जु पंचाग निवारी ॥ भूष सहै रही रूप तरे परसुं
दर दास सहै दुष भारी ॥ डासन छांडि के कासन ऊप-
र, आसन माथो पें आसन मारी ॥ ९ ॥ जो कोऊ क-
ष्ट करे बहु भांतिनि, जात अज्ञान नही मन केरो ॥
ज्यों तम पूरि रत्नो घर भीतर, कैसे नुहु न होय अं-
धेरो ॥ लाठि निमारि ये ठेलि निकासि, और उपा-
य करे बहु तेरो ॥ सुंदर सूर प्रकास भयो तब नोकि
तहू नहिं देखि नेरो ॥ १० ॥ धार बढ्यो बड धारि रल्यो
जल, धार सख्यो गिरि धार सख्यो हैं ॥ भार सख्यो

नभारथमेंकर, भारतलद्धौशिरमारपस्योहैं ॥ भार
तप्योबहिमारगयोजम, मारदईमनतोनमस्योहैं
॥ सारतज्यौंषटसारपस्योकहि, सुंदरकारजकोन
सरयोहैं ॥ ११ ॥ कोउभयापयपानकरेनित, कोउक
षातहेअन्नअलोना ॥ कोउककष्टकरेनिसवासु
र, कोउकवैठिकेसाधतपोना ॥ कोउकवादविवादक
रेअति, कोउकधारिरहेसुषमोना ॥ सुंदरएकअज्ञान
गएबिनु, सिंधभयेनहिंदीसतकोना ॥ १२ ॥ ॥
सवैयाछंद ॥ ॥ कोउकअंगविभूतिलगावत, को
उकहोतनिराटदिगंबर ॥ कोउकसेतकषायकबोटत,
कोउककाथरंगेबहुअंबर ॥ कोउकबलकलसीसज
दानष, कोउकबोटतहेजुबगंबर, सुंदरएकअज्ञान
गएबिनु, ऐसबदीसतआहिअडंबर ॥ १३ ॥ ॥
छंदमनहर ॥ ॥ आपहीकेघटमाहींप्रगटपरमे-
श्वररहे ॥ ताईछोडीभूलेनरदूरदूरजातहैं ॥ कोईदो
रेद्वारिकाकोकेईकाशीजगन्नाथ, केईदोरेमथुरा
कोंहरिद्वारनाथहैं ॥ केईदोरेबदिकोविषमपहार
चढे, केईलोकेदारजातमनमेंसहातहैं ॥ सुंदरक
हतगुरुदेवदेईदिव्यनेन, दूरहीफेदूरविननिकटदि

षातहें ॥१४॥ ॥छंदइंदव॥ ॥कोऊकजातप्रया
 गबनारस, कोऊगयाजगन्नाथहीधावे॥कोईमसु
 राबदरीहरिद्वारसु, कोऊगंगाकुरुषेब्रनाहावे॥
 कोऊकपुष्करक्षैपचतीर्थदोरेइदोरेजुहारिकाआवे
 ॥सुंदरवित्तगड्योघरमाहिसं, बाहिरदूंदतचयों
 करिपावे ॥१५॥ आगेकछूनहीहाथपर्योपुन, पी
 छेविगारिगयोनिजभोना॥जोकोईकामनीकंत-
 हीमारचली, सगओरहीदेविसलोना॥सोडगयो
 तजिकेततकाल, कहेनबनेजुरहीसुषमोना॥तसे
 हीसुंदरज्ञानविनाघर, छांडभएनरभांडकेदोना॥
 १६॥ ज्योंकोउकोसकल्यो नहिंमारग, तेलिकलेघर
 मेंपसु जोए॥ ज्योंबनियांगयोबीसकेतीसकों ,
 बीसहूमेंदसहूनहिहोये ॥ ज्योंकोउचोवेछबेकों
 चल्योपुनि, होइदुबेदुइगांठकेषोये॥तेसेहीसं
 दरओरक्रियासब, रामविनानिसचैनररोए॥१७
 ॥ज्योंकोउरामविनानरमूरष, ओरनिकेगुनजी
 भभनेंगी॥ आनकियागडकेगडचापुनि, होतहें
 भेरकछूनबनेंगी॥ ज्योंहथफेरिदिपावतचावर,
 अंततोधूरीकीधूरिछिनेंगी॥सुंदरभूलभईअत

सेंकरि, सूतेकी भेस पडाई जनेंगी ॥ १८ ॥ होइ उदा
 सविचार विनानर, गेह तज्यौवन जाई रत्नोहें ॥ अं
 वरछां डिवद्यं वरले करि, केत पकोत न कष्ट सत्योहें
 ॥ आसनमारि सुं आसन वैं सुष, मोन गही मन-
 तोन ग्रत्योहें ॥ सुंदर कोन कुबुद्धि लगी कहि, या
 भवसागर मां हिय त्योहें ॥ १९ ॥ भेषधर्यो परि भे-
 द न जानत, भेद लहे बिनुषेद ही पै है ॥ भूषही भार
 तनींद निवारत, अन्न तजें फल पत्र न पै है ॥ ओर
 उपाय अनेक करे पुनि, ताही ते हाथ कछून हिं ऐ है
 ॥ यानर देह ब्रथाषट् षोचत, सुंदर राम विना पछ
 तै है ॥ २० ॥ आपनें आपनें थान सुकामस, राहन
 को सब मांति भलीहें ॥ यज्ञघृतादिक तीरथ दान,
 पुरान कथा जु अनेक चलीहें ॥ कोटिक ओर उपा-
 य जहां लग, ते सुनी केनर बुद्धि छलीहें ॥ सुंदर-
 ज्ञान विनान कहुं सुख, भूलनि की बहू मांति गली
 हैं ॥ २१ ॥ कोउ कचाहत पुत्रधनादिक, कोउ कचा-
 हत बांजु जनायो ॥ कोउ कचाहत धातुरसादिक,
 कोउ कचाहत पारदषायो ॥ कोउ कचाहत जंत्रनि
 मंत्रनि, कोउ कचाहत रोगगमायो ॥ सुंदर राम वि

नारसवहीभ्रम, देरवहुयाजगयोंडहकायों ॥२१॥
 काहेकोतुंनरभेषचनावत, काहेकोतुंदसहुदिसहु
 ले ॥ काहेकोतुंतनकष्टकरेअति, काहेकोतुंमुष
 तेंकहीफूले ॥ काहेकोंओरउपायकरेआब, आ
 नक्रियाकरकेमतभूले ॥ सुंदरएकभजेभगवंत-
 हि, तोसरवसागरमेंनितफूले ॥२३॥ ॥ इति
 चाणक्यकोअंगसमाप्तः ॥१२॥ ॥ ॥
 अथविप्रीतज्ञानकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंद
 मनहर ॥ ॥ एकब्रम्हमुषसोंबनायकरिकह
 लहें, अंतःकरणतोविकारनसोंभर्योहे ॥ जेसे
 ठगगोबरकोकुंपोभरिरायतहें ॥ सेरपंचघृतलेके
 ऊपरज्योंकर्योहैं, जेसेकोईभांडेमाहीप्याजकों-
 छिपायराखें, चीथरांकपूरकोलेमुषबांधिधर्योहें
 ॥ सुंदरकहतऐसेजानीहेजगतमाहीं, तिनकोंतो
 देखीकरिमेरोमनडर्योहें ॥१॥ देहकोममत्वपुनीप्र
 हसोंममत्वस्त, दारासोंममत्वमनमायामेंरहतु
 हैं ॥ थिरतानलहेंजेसेकंदुकचोगानमाहीं, कर्मनि
 केवसमाख्योधकाकोंबहतुहें ॥ अंतःकरनसदाज
 गतसोंरचिरख्यो, मुषसेबनायबातब्रह्मकीकहतु

हैं ॥ सुंदर अधिक मोहीयाही ते अंच भो आही, भूमी
परिपत्यो को उचंद को गहतु हैं ॥ २ ॥ सुषसों कहत जा
न भ्रमे मन इंद्रि प्रान, मारग के जल में न प्रति बिंबल
हिये ॥ गांठि में न पैसा को उभयौ रहै साहुकार, वात नि
में महर रूपै याग निलहीये ॥ स्वपने में पंचामृत जी-
म के न पति भयो, जागे त मरत भूषण इवे कों चहिये ॥
सुंदर सुभट जे से कायर मारत गाल, राजा भोज सम
कहांगो गोते लीकहीये ॥ ३ ॥ संसार के सुषनि सों
आसक्त अनेक विधि, इंद्रि हूलोल पमन कबहुन म
त्योहे ॥ कहत हे एसे मे तो एक ब्रह्म जानत हों, तोही
ते छोडी के सुभकर्म निकोर त्योहे ॥ ब्रह्म की न प्राप्ति
मुनिकर्म सब छूट गये, दोउन ते अष्ट होई अध धिच
बत्योहे ॥ सुंदर कहत ताही त्यागिये स्वपच जे से, या
ही भांति ग्रंथ में वसिष्ठ जी कह्योहे ॥ ४ ॥ जानी की
सी बात कहै मन तो मलीन रहै वासना अनेक भरीने
कन निचारिहें ॥ जे से कोऊ आभूषण अधिक बना
यराव्यो, काल ई उपर कर भीतर भंगारिहें ॥ ज्यों ही-
मन आवेत्यों ही रवेलत निसंक होइ ॥ जानरु निसी
सलीयो ग्रंथ निविचारिहें ॥ सुंदर कहत वाके अटक

नकोउआही, जोईवासोमिलेजाईताहीकोंधिगा
 रिहें॥५॥ हंसस्येतबकस्येतदेपीयेसमानदोऊ, हंस
 समोतिचूगेबकमछरीकोंषातहें॥ पिकअरुकाक
 दोउकेसेंकरिजानेजाई, पिकअंबडारिकाककरक-
 हिजातहें॥ सिधोंअरुफटिकपषानसमदेवीअत,
 वहतोकठोरवहीजलमेंसमातहें॥ सुंदरकहतजा
 नीबाहिरभीतरसुध, ताकीपटतरअोरवातनिकी
 वातहें॥६॥

॥ इतिविप्रीतज्ञानकेअंगसमा
 प्त ॥१३॥

॥ अथवचनविषेककोअंगप्रारंभः

॥ ॥ छदमनहरा ॥ जाकेघरताजितुरकिन
 कोंतबेलोंबांध्यो, ताकेआगेफेरीफेरीदुवादिष
 ईयें॥ जाकेषासामलमलसाफनवेदेरपडे, ताके
 गेआनीकरिचोषईरसाईयें॥ जाकेपंचासृतषात
 षातसबदिनबीते, सुंदरकहतताहीराबरीमेंषाईरे
 ॥ चतुरप्रवीनआगेमूरषउचारकरे, सरजकेआगे
 जैसेजंगनांदिषाईयें॥१॥ एकवाणीरूपचंतभूषन
 बसचअंग, अधिकविराजमानकहीयतऐसीहैं॥
 एकवाणीफाटेदूटेअंबरउडाएआनी, ताहूमांहींवि
 परीतसुनीयतऐसीहैं॥ एकवाणीमृतकसीबहुत

सिंगारकिये लोकनीकोंनीकीलगेसंतनिकोंभैसीहैं॥
 सुंदरकहतवाणीत्रिविधजगतमांहीं,जानेकोईचतु
 रप्रवीनजाकीजैसीहैं॥२॥ राजाकोकुंअरजोस्वरू
 पकोकुरूपहोई,ताकोतोसिलामकरिगोदलेपिला
 इये॥ औरकोऊरैतकोस्वरूपहोइसोभनीक,ताहू
 कोंतोदेविकरिनिकटबुलाईए॥ काहूकोकरूप-
 कारोकूचरोवैअंगहीन,वाकीबोरदेवीदेवीमाथो
 ईहलाईए॥ सुंदरकहतवाकेबापहीकोप्यारोहोई
 योहीजानीबानीकोविवेकऐसेपाइये॥३॥ बोली
 येतोतबजबबोलचेकीसुधहोई,नतोमुषमोनक
 रिचुपहोइरहीयें॥ जोरीयेतोतबजबजोरबोउजा
 नीपरै,तुकछंदअरथअनुपजामेंलहीये॥ गाइ
 येतोतबजबगाइयेकोंकंठहोई,अचनकेसुनतही
 मनजाईगहीये॥ तुकभंगछंदभंगअरथमिलेनक
 छू,सुंदरकहतऐसीबानीनहींकहीयें॥४॥ एकन
 केवचनसुनतअतिस्वरहोई,फूलसेंजरतहेंअ
 धिकमनभावनें॥ एकनिकेवचनतोअसीमानोव
 रषत,अचनकेसुनतलगतअलपावनें॥ एकनि
 केवचनकटुकटुविषरूप,करतमरमछेददुषउप

जावने, सुंदर कहत घटघटमें वचन भेद, उत्तम मध्यम अरु अधम सह्यावने ॥ ५ ॥ काक अरु रास भालुक जव बोलत हैं, तिन के तो वचन सह्यात कही कानकों ॥ कोकिल अरु सारिपुन सूबा जव बोलत हैं, सब को उकान दे सकन तरवरो नकों ॥ ताही तें सक वचन विवेक करी बोली यजु यों ही आक वाक वक्ति तो रिये न पों नकों, सुंदर सम ऊए से वचन उचार करो, नही तो समुजि करि बैठे गहि मो नकों ॥ ६ ॥ प्रथम ही ये विचार दी म सो न दी जे डार, ताही तें सक वचन संभारि करि बोलिये ॥ जाने न कहूं हेत भावते सी कही देत, कही ये सकत बजब मन माही तों लीये ॥ सब ही को न्यागे दुष को ऊन ही पावे करव, बोली के ग्रथा ही ता तें छाती नही छोलीये ॥ सुंदर सम ऊकरि कही ये सरस बात, तब ही तो वचन कपाट गही षोलीये ॥ ७ ॥ और तो वचन ए से बोलत हे पसु जे से, तिन के तो बोलवे में दंग हू न कहें ॥ कोऊ राति दिव सब कत ही रहत ऐ सें, जे सि विधि कूप में वकत मानो भे कहें ॥ विविध प्रकार करि बोलत जगत सब, घटघट प्रति मुष वचन अने कहें ॥ सुंदर कहत ता तें वचन विचार लेहू, वचन ताव हे जा में पाइये वि

वेकहें ॥८॥ जेसेहंसनीरकोतजतहेअसारजानि, पा
 रजानीषिरकोनिरालोकरिपीजिये ॥ जेसेदधिमथत-
 मथतकाटिलेतघृत, ओररहीपहीसबछांछछांडीदी
 जिये ॥ जेसेमधमक्षिकासवासकोंभ्रमरलेत, तेसे
 हीविचारकरिभिन्नभिन्नकीजिये ॥ सुंदरकहतताते
 वचनअनेकभांति, वचनमेंवचनविवेककरिलीजिये
 ॥९॥ प्रथमहीगुरुदेवमुषतेउचारकख्यौ, वेईतौवचन
 आयलगेनिजहीयेहें ॥ तिनकोविवेककरिअंतःकर
 नमांहीं, अतिहिअमोलनगभिन्नभिन्नकीयेहें ॥ आ
 पकोदरिद्वगयोपरउपगारहेत, नगहीनिगलिकेउगलि
 नगलीयेहें ॥ सुंदरकहतयहवाणीयांप्रगटभई, ओ
 रकोईसुनकरिरंकजीवजीयेहें ॥१०॥ वचनतेंदूरमिले
 वचनविरोधहोई, वचनतेरागवदेवचनतेंदोषजु ॥ व
 चनतेज्वालउदेवचनसीतलहोई, वचनतेमुदितवच
 नहीतेरोषजु ॥ वचनतेप्यारोलगेवचनतेंदूरभगे, वच
 नतेमुरजाईवचनतेषोषजु ॥ सुंदरकहतयहवचन
 कोभेदएसो, वचनतेबंधहोतवचनतेमोषजु ॥११॥
 वचनतेगुरुशिषबापपूतप्यारोहोई, वचनतेबहुविध
 होतउतपातहें ॥ वचनतेनारीआरुपुरुषसनेहअ

ति, वचनतेंदोऊअपआपमेरीसातहें ॥ वचनतेंसब
 आईराजाकेहजूरहोई ॥ वचनतेंचाकरउछोडीफेप-
 लातहें ॥ सुंदरसुवचनसुनतअतिसुषहोई ॥ कुव
 चनसुनतहीपीतिघटिजातहें ॥ १२ ॥ एकतोबचन
 सुनकर्महीमेंवहीजाय, करतबहुतविधिस्वर्गकीउ
 मेदहें ॥ एकहीवचनदृढईश्वरउपासनाकेतिनमेंतो
 सकलहीवासनाकोछेदहे ॥ एकहीबचनतामेंएकही
 अरबंडब्रह्म, सुंदरकहतयोंवतावेअंतवेदहें ॥ वच
 नतोअनेकप्रकारसबदेखियत, वचनविवेककीये-
 वचनमेंभेदहें ॥ १३ ॥ वचनतेंजोगकरेवचनतेंजजक
 रे, वचनतेंतपकरिदेहकोदहतुहें ॥ वचनतेबंधनक
 रतहेंअनेकविध, वचनतेंत्यागकरिवचनरहतुहें ॥
 वचनतेंउरजारुसरफेवचनहूतें, वचनतेंभांतिभां-
 तिसंकटसहतुहें ॥ वचनतेंजीवभयोवचनतेंशीव
 होई, सुंदरवचनभेदवेदयोंकहतुहें ॥ १४ ॥ ॥
 इतिवचनविवेककोअंगसमाप्तः ॥ १४ ॥ ॥
 अथनिर्गुणउपासनाकोअंगप्रारंभः ॥ ॥
 छंदइंदव ॥ ॥ ब्रह्मकुलालरचेबहुभाजन, कर्म
 निकेवसमोहनिभावे ॥ विष्णुहीसंकटआयसहे

ग्रभ, काहू को रक्षक काहू को संतावे ॥ संकरभूत-
 पिशाचनिके पति, पानी कया ल लीये विललावे,
 याही ते संदरतिरगुन त्यागसु, निर्मल एक निरं-
 जन ध्यावें ॥ १ ॥ कोटिक वात बनाय कहें कहा, हो
 त भये सब ही मन रंजन ॥ शास्त्र समुतिरु वेद पु-
 रान, वषान तहें अतिलाय के अंजन ॥ पानी में
 बूडत पानी गहे कत, पार पहुंचत हे सति भंजन ॥
 सुंदरत हां लगे अंधे की जे वरि जो लो न धाई र-
 न्येक निरंजन ॥ २ ॥ मंजन सो जो मनोमल मंजन,
 सज्जन सो जो कहें गति गूजे ॥ गंजन सो जो इंद्रि-
 हे गंजन, रंजन सो जो बुझावें रुचूजे ॥ भाजन सो जो
 भरे रस मांही, विहज्जन सो कित हून अरूजे ॥ व्यं-
 जन सो जो बंद रुच सुंदर, अंजन सो जो निरंजन सू-
 जे ॥ ३ ॥ जो प्रभु ते उत पति भई यह, सो प्रभु हे उर ई-
 प हमारें ॥ जो प्रभु हें सब कं शिर ऊपर, ता प्रभु को न-
 सिर ही हम धारें ॥ रूप अने रेष अलंष अर वंडित
 भिन्न रहे सब कारज सारें ॥ नाम निरंजन हें तिन के
 पुन, सुंदरता प्रभु की बलि हारें ॥ ४ ॥ जो उपजे वि-
 न से गुन धारत, सो यह जानहुं अंजन माया ॥ आ

वनजायमरेनहिजीवन, अच्युतएकनिरंजनराया
 ॥ ज्योंनरतत्वरहेरसएकहि, आवनजातफिरेयहा
 छाया ॥ सोपरब्रह्मसदाशिरऊपर, सुंदरताप्रसु-
 सोमनलाया ॥ ५ ॥ जोउपज्यौकछुआइजहांल
 ग, सोसबनासनिरंतरहोई रूपधर्योसरहेनहि
 निश्चल, तीनहीलोकगिऐकहोकोई ॥ राजसता
 मससात्विकजैगुन, देपतकालप्रसेपुनयोई ॥ आ
 पहीएकरहेजुनिरंजन, सुंदरकेमनमानतसोई
 ॥ ६ ॥ देवनिकेसिरदेवविराजित, ईश्वरकेशिरई
 श्वरकहीये ॥ लालनिकेशिरलालनिरंतर, पूव-
 निकेशिरपूबहितहिये ॥ पाकनिकेशिरपाकसि
 रोमनि, देसविचारउहेद्वंद्वगहिये ॥ सुंदरएकसं
 दाशिरऊपर, ओरकछूंहुमकोनहिंचहिये ॥ ७ ॥
 सेसमहेरसगनेसजहांलग, विष्णुविरंचिहूकेशि
 रस्वामी ॥ व्यापकब्रह्मअषडअनाद्यत, बाहिरभी
 तरअंतरजामी ॥ वीनरछोरअनंतकहेगुन, आ
 हीतेसुंदरहेयननामी ॥ एसोप्रभुजिनकेशिरऊ-
 पर, क्यौपरिहेतिनकोकहिषामी ॥ ८ ॥
 इतिनिर्गुनउपासनाकोअंगसमाप्तः ॥

१५॥

॥ अथपतिव्रताकोअंगप्रारंभः॥

॥ छंदइंदव ॥ ॥ आनकीचोरनिहारतही
 जैसें, जातपतिव्रतएकव्रतीको ॥ होतअनादर
 एसीहीभांतिजु, पीछेफिरेनहिंसूरसतीको ॥ ने
 कहीमेंहरबोहोइजात, बिसेअधविंदुजोजोग-
 जतीको ॥ रामहृदेतेंगएजनसुंदर, एकरतीधि
 नपाचरतीको ॥ १॥ जोहरिकोंतजिआनउपास
 त, सोमतिमंदजतीनहिंहोई ॥ जोअपनेभरतार
 हिछांडे, भईविभचारनिकामनिकोई ॥ सुंदरता
 हिनआदरमान, फिरेविमुषीअपनीपतबोई ॥
 बूडिमरेकिनकूपमजार, कहाजगजीवतहेसठ
 सोई ॥ २॥ होइअनन्यभजेभगवंतहि, ओरकछू
 उरमेंनहिंराखे ॥ देवीरुदेवजहांलगहेडर, केतिन
 सोवहीदीननभाषे ॥ जोगहूजज्ञवनादिक्रियाति
 न, कोतोहीस्वपनेअभिलाषे ॥ सुंदरअमृतपा
 नकियोतव, तोकहीकोनहलाहलचाषे ॥ ३॥ ए
 कसहीसबकेउरअंतर, ताप्रभुकोकहीकाहीनगा-
 ये ॥ संकटसांहिसहायकरेपुन, सोअपनेपतिक्यों
 विसरावे ॥ चारपदारथओरजहांलग, आठउसि

द्विनवेनिधयावे ॥ सुंदरछारपरोतिनकेसुष, जोह
 रिकोंतजिआनकोंध्यावे ॥५॥ पूरनकामसदासु
 षधामनि, रंजनरामसिरज्जनहारो ॥ सेवकहोइर
 त्थोसबकोनित, कीटहिकुंजरदेतअहारो ॥ भंजन
 दुःखदरिद्रनिचारन चिंतकरेपुनसांजनिचारो ॥ ए
 संप्रभुतजिआनउपासत, सुंदरहेतिनकोसुषकारो
 ॥५॥ ॥ छंदमनहरा ॥ ॥ पतिहिसोंप्रेमहोईपति
 हीसोंनेमहोई, पतिहिसोंप्रेमहोईपतिहिसोंरतहें ॥
 पतिहीहेजज्ञजोगपतिहीहेरसभोग, पतिहीसोंमि
 टेसोगपतिहीकोजतहें ॥ पतिहीहेज्ञानध्यानपति
 हीहेपुन्यदान ॥ पतिहीहेतीरथस्नानपतिहीकोम
 तहें ॥ पतिविनुपतनाहीपतिविनगतिनाही, सुंदर
 सकलविधिएकपतिव्रतहें ॥६॥ जलकोसनेहीमी
 नविछुरतजेमान, मनीविनअहीजेसेजीवतनलही
 यें ॥ स्यातबिंदुकेसनेहीप्रगटजगमाही, एकसीप
 दुसरोसुचातकउकहीयें ॥ रविकोसनेहीपुनिकम-
 लसरोवरमें, ससीकोसनेहीउचकोरजेसेरहीये ॥ ते
 सेहीसुंदरएकप्रभुसोंसनेहजोर, औरकछूदेवी-
 काहूवोगनहीचहीयें ॥७॥ ॥ इतिपतिव्रताको

अंगसमाप्त ॥१६॥ ॥ अथविरहउराहने
 कोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥
 पीयकोअंदेसोभारीतोसोंकहोंसुनप्यारी, यारी
 तोरोगएसोतोअजहूनआयेहें ॥ मेरेतोजीवन
 प्राननिसदिनउहेध्यान, सुषसोंनकहोआननेन
 उरलाएहें ॥ जबतेगएविछोहकलनपरतमोहीता
 तें, हूं पूछततोहीकिनविरमायेहें ॥ सुंदरविरहनी
 कोसोचसषीचारचार, हमसोंविसारअबकोनके
 कहायेहें ॥ १॥ हमकोतोरेनदिनसंकमनमाहिर
 हे, उनकोतोबातनिमेंठीकउनयाईये ॥ कबहूंसे
 देसासुनिअधिकउछाहहोई, कबहूंकरोईरोईआ
 सुनीवहाईये ॥ ओरनिकेरसबसहोईरहेप्यारे
 लाल, आवनिकीकहीकहीहमकोंसुनाइये ॥ सु
 दरकहतताहीकाठीयेसकोनभांति, जोईतरु
 आपनेसुहायतेलगाईये ॥ २॥ सोसोंकहेओर
 सीहीबांसुकहेओरसीही ॥ जाकोकहेताहीकी
 प्रतीतकेसेहोतहें ॥ काहूकोंसमासकरेकाहूसों
 उदासफिरे, काहूसोंतोरसबसएकमेंकपोतहें ॥
 दगाबाजीदुबधातोमनकीनदूरहोई, काहूकेअ

धेरांधरकाहूकेउद्योतहे॥ सुंदरकहतजाकेपीर-
 सोकरेपुकार, जाकेदुपदूरगयोताकोभईयोतहे
 ॥३॥ हीचेओरजीयेओरलीयेओरदीयेओर,
 कीयेओरकोनसूंअनुपयाटीपढेहे॥ सुयओर
 बेनओरनेनओरतनओर, मनओरकायासब
 जंत्रमाहींकढेहे॥ हाथओरपांवओरसीसहूअ-
 वनओर, नवशिषरोमरोममलईसोंमढेहे॥ ए
 सीतोकठोरतानसुनिनहींदेवीजग, सुंदरकह
 तकांडब्रजहीकेघढेहे॥ ४॥ ॥ इतिधिर
 हउराहनकोंअंगसमाप्तः॥ १७॥ ॥ ॥
 अथशब्दसारकोअंगप्रारंभः॥ ॥ छंदम
 नहर॥ ॥ भूल्योकिरेभ्रमतेंकहतकछूओ
 रओरकरतनतापदूरिकरतसंतापकों॥ दक्षभ
 ओरहेपुनीदक्षप्रजापतिजेसें, देतपरदछनान
 दिक्षादेतआपकों॥ सुंदरकहतएसेजामेंनजुग
 तिकछू॥ ओरजापजपनेनपतनिजजापकों॥
 बालभयोज्वानभयोवयवीतेवृधमयो, वपुस्तप
 होईकविसरीगयोआपकों॥ १॥ ॥ छंदइंदव
 ॥ पानवहेजूपीयूषपीवेनित, दानवहेजुदलिद्वकों

भाने, कानउहेसुनीये जसकेसव, मानउहेकरी
 येसनमाने ॥ तानउहेसरतानरिजावत, जानउहे
 जगदीसहीजामेने ॥ बानउहेमनवेधतसुंदर, जा
 नउहेउपजेनअज्ञाने ॥ २॥ सूरउहेमनकोवसराष
 त, कूरउहेमनमांहिलजेहै ॥ त्यागउहेअनुराग
 नहीकहू, भागवहेमनमांहितजेहै ॥ तजयहेनिज
 तत्वहीजानत, जशयहेजगदीसजजेहै ॥ रत्तउहे
 हरिसौरतसुंदर, भक्तउहेभगवंतभजेहै ॥ ३॥ -
 चापउहेकसिऐरिषुऊपर, दापउहेदलकारहीमारे
 ॥ छापउहेहरिआपदइशिर, थापउहेअपिआंग
 नधारे ॥ जापउहेजपियेअजपानित, व्यापउहे
 निजव्यापबिचारे ॥ बापउहेसबकोप्रभुसुंदर, पा
 पहरेअरुतापनिचारे ॥ ४॥ भोनउहेभयनाहिन
 जामहि, गोनउहेफिरहोइनगोना ॥ बैनउहेबिस
 रंविषआरस, रोनउहेप्रभुसौंनहिंरोना ॥ मोनउ-
 हैजुलीयहरिबोलत, लोनउहेसबआंगअलाना
 सोनउहेगुरुसंतमिलेजब, रुंदरशंकरहैनहिं-
 कोना ॥ ५॥ कारउहेअविकाररहेनित, मारउहेजु
 असारहीनाषे ॥ प्रीतउहेजुप्रतीतधरेउ, नीतउ

हेजुअनीतनभाषें ॥ तंतउहेलुगिअंतनदूत, संत
 उहेअपनोसतराषें ॥ नादउहेसुनिबादतजेसब,
 स्वादउहेरससुंदरचाषें ॥ ६ ॥ स्वासउहेजुउश्वासन
 छांडत, नासउहेफिरिहोइननासा ॥ पासउहेसात
 पासलगेजम, पासकटेप्रभुकेनितपासा ॥ बास
 उहेग्रहबासतजेबन, वाससहीतिहीठोरहवासा
 ॥ दासउहेजुउदासरहेहरि, दाससदाकहिसुंदर-
 दासा ॥ ७ ॥ ओअउहेश्रुतिसारसुनेअरु, नयन
 उहेनिजरूपनिहारें ॥ नाकउहेहरिनाकहिराषत
 जीभउहेजगदीसउचारे ॥ हाथउहेकरियेहरिको
 ऋत, पांवउहेप्रभुकोपंथधारे ॥ सीसउहेकरिस्था
 मसमर्पन, सुंदरयोसबकारजसारे ॥ ८ ॥ सोवत
 सोवतसोइगयोसठ, रोवतरोवतकैबिररोयो ॥ गो-
 वतगोवतगोईधर्यौधन, घोवतघोवततेंसबपो-
 यो ॥ जोवतजोवतवीतगयेदिन, बोजतबोजततें
 विषबोयो ॥ सुंदरसुंदररामभज्यौनहिं, दोवतदो-
 वतबोऊहिदोयो ॥ ९ ॥ देषतदेषतदेषतमारग,
 बूऊतबूऊतबूऊतआयो ॥ सूऊतसूऊतसूऊप
 रिसव, गावतगावतगोविंदगायो ॥ सोधतसोध

तसुद्धभयोपुनि, तावततावतकंचनतायो ॥ जा
गतजागतजागपत्थोजब, सुंदरसुंदरसुंदरपायो

॥ १० ॥ ॥ इतिशब्दसारकोअंगसमाप्तः ॥

॥ १८ ॥ ॥ अथभक्तिज्ञानमिश्रितको
अंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदइंदव ॥ ॥ बैठ

तरामहिऊठतरामहि, बोलतरामहीरामरत्नोहे

॥ जीमतरामहीपीवतरामही, धामहीरामहीराम

गत्नोहे ॥ जागतरामहीसोवतरामही, जोवतरा-

महीरामरत्नोहे, देतहुरामहीलेतहुरामही, सुंदर

रामहीरामरत्नोहे ॥ १ ॥ ओत्रहुरामहीनेत्रहुराम

ही, वक्रहुरामहीरामहिगाजै ॥ सीसहुरामहीहा

थहुरामही, पावहुरामहीरामहीछाजै ॥ पेटहुरा

महीपीठहुरामही, रोमहुरामहीरामहीवाजै ॥ अं

तररामनिरंतररामही, सुंदररामहिरामविराजै ॥ २

॥ भोमीहुरामहीआपहुरामही, तेजहुरामहीवा

युहीरामें ॥ व्योमहुरामहीचंद्रहुरामही, सूरहुरा

महीसीतहीधामें ॥ आदिहुरामहीअंतहुरामही

मध्यहीरामहीपुर्वनवामें ॥ आजहुरामहीकाल

हुरामही, सुंदररामहीरामहीधामें ॥ ३ ॥ देषह

रामअदेवहूरामही, लेखहूरामअलेखहूरामें ॥ एक
 हूरामअनेकहूरामही, शेषहूरामअशेषहूरामें ॥
 मोनहूरामअमोनहूरामही, गोतहूरामहीगामकु
 ठामें ॥ बाहिररामहीभीतररामही, सुंदररामहीहे
 जगजामें ॥ ४ ॥ दूरहूरामनिजीकहूरामही, देसहूरा
 मअदेसहूरामें ॥ पूरबरामहीपछिमरामहि, छंद
 नरामहिउत्तरधामें ॥ आगेहूरामहीपीछेहूरामही
 व्यापकरामहिहेबनघामें ॥ सुंदररामदसौदिसपू
 रबस्वर्गहूरामपतालहूरामें ॥ ५ ॥ आपहूरामउपा
 यतरामही, भंजनरामसंवारनघामें ॥ द्रष्टृहूरामअ
 दृष्टहूरामही, इष्टहूरामकरेसबकामें ॥ वर्णहूराम
 अवर्णहूरामही, रक्तनपीतनस्येतनस्यामैं ॥ सुन्य
 हूरामअसून्यहूरामही, सुंदररामहीनामअनामैं
 ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीभक्तिज्ञानमिश्रितकोअंग

समासः ॥ १९ ॥

॥ अथविपर्जयश

ब्दकोअंगप्रारंभः ॥

॥ छंदसवैय्या ॥

अवनहुदेविस्फुनेपुनिनेनहु, जिह्वासंधेनाशिक
 चोले ॥ गुदापायइंद्रीजलपीवै, विनहीहाथसमेरु
 हितोलें ॥ उंचेपांवमुंडिनीचेकुंतीनलोकमेंविचर

तडोले ॥ संदरदासकहेसुनजानी, भलेभांतिआअ
 र्थहिषोले ॥ १ ॥ अंधावीनलोककूंदेधै, बेरासुनैव
 हुतविधनाद ॥ नकटावासकमलकीलेवे, गुंगाक
 रेबहुतसंवाद ॥ दूठांपकरिउठावेपरबत, पंगुलकरे
 निरतअहलाद ॥ जोकोउवाकोअर्थविचारे, संद
 रसोईयावेस्वाद ॥ २ ॥ कुंजरकोंकिरीगिलबैठी, सिं
 घहिषायअघानोंस्याल, मछरीअग्निमांहिस्रष
 पायो, जलमेंबहोतिहोतिबेहाल ॥ पंगुचढ्योपरब
 तकेऊपरि, मृत्युहिदेविडरानोकाल ॥ जाकोअनुभ
 वहोयसुजानें, संदरएसाउलटाव्याल ॥ ३ ॥ बुंदहि
 मांहिसमुद्रसमानो, राईमांहिसमानोमेर ॥ पानी
 मांहितुंबकाबूडी, पाहनतरतनलागीबेर ॥ तीनलो
 कमेंभयातमासा, सूरजकियोसकलअंधेर ॥ सूर
 षहोयसोअर्थहियावे, संदरकहेसबदमेंफेर ॥
 ४ ॥ मछरीबगुलाकूंगहिषायो, मूसेंषायोकारोसां
 प ॥ सुवेपकरिबिलाईषाई, ताकेमुवेगयोसंताप-
 ॥ बेटीअपनीमइयांषाई, बेटेअपनोषायोबाप, सुं
 दरकहेसुनोहोसंतो, तिनकोकोउनलाग्योपाप ॥
 ५ ॥ देवमाहितेंदेवलप्रगट्यो, देवलमाहिप्रगट्यो-

देव ॥ शिष्यगुरु उपदेसन लाग्यो, राजाकरे रंक की
 सेव ॥ बंध्या पुत्र पंगु इक जायो, ताको घर षोषन
 कीटेव ॥ सुंदर कहत सो पंडित गया ता, जो को उया
 को जाने भेव ॥ ६ ॥ कमल माहितें पानी उपज्यौ, पा
 नि मां हितें नीप ज्यौ सूर ॥ सूर माहि सितल ता उप
 जी, सीतलता में सुष भर पूर ॥ ता सुष को क्षय होइ
 न कबहू, सदा एकर सनिकट न दूर ॥ सुंदर कहत स-
 ल्य चह्यौ ही, यामें रति न जानहू कूर ॥ ७ ॥ हंस चढो
 ब्रह्मा के ऊपर, गरुड चढ्यो पुनि हरि की पीठ ॥ बैल
 चढ्यो हे शिव के ऊपर, सोहम दीठो अपनी दीठ, दे
 व चढ्यो पातिका के ऊपर, जष चढो डाकन के पीठ ॥ सुं
 दर एक अचंभा हूवा, पानी मां हि जरें अंगीठ ॥ ८ ॥
 ॥ कपरा धो बिकुग ही धोवे, माटि पकरै घडै कुंभार
 ॥ सुइ बिचारि दर जिहि सीवे, सो नाता वेप कर सोन
 रा ॥ लकरी बढही कुंगहि छीले, पालसु बैठी धमेडु
 हार ॥ सुंदर दास कहै सन जानी, जे को ईया को क
 रे विचार ॥ ९ ॥ जा घर माहि बहुत सुष पायो, ताघ
 र मां हि बसे अब को न ॥ लागी सबै मिठाई बारी, मी-
 ठो लागो एक वहे लौन ॥ परबत उडेरुई धिर बैठी, ऐ

सोकोइकबज्योपौन ॥ सुंदरकहेनमानोकोई, तातेप
 करिरहीयेमोना ॥ १० ॥ रजनीमांहिदिवसहमदेख्यो,
 दिवसमांहिदेखीहमरात ॥ नेलभख्योसंपूरनतामें,
 दिपकजरेजरेनहिंवात ॥ पुरुषएकपानीमंहिप्रगत्यो
 तानुगराकीकैसीजात ॥ सुंदरकोइलहैअर्थको,
 जोनितकरैपराईतात ॥ ११ ॥ उमग्योमेघबख्योचहुं
 दिससौं, वरषनलग्योअषंडितधार ॥ बूझ्योमेरुन
 दीसबसूकी, उरलाग्योनिसदिनएकतार ॥ कांसो
 पख्योबिजलीऊपर, कियोसकलकुटुंबसंहार ॥ सुंद
 रअर्थअनोपमयाको, पंडितहोयसोकरेबिचार ॥
 १२ ॥ वाडीमांहीमालीनियज्यो, हालीमाहीनियज्यो
 बेत ॥ हंसहिउलटीस्यामरंगलाग्यो, भ्रमरउलटिक
 रिहुयोस्वेत ॥ ससियरउलटिराहुकोंघास्यो, स्तरज
 उलटकरिघास्योकेत ॥ सुंदरसुगराकोंतजिभाग्यो
 नुगरासेतीबांध्योहेत ॥ १३ ॥ अगनीमथनकरिल
 करीकाटी सोबहलकरीप्रानआधार ॥ पानीमथि
 करिघीवनीकाख्यो, सोघृतषायोवारमवार ॥ दूधद
 धीकीइछाभागी, जाकोमथतसकलसंसार ॥ सुंद
 रअबनोभयेसुखारे, चिंतारहीनएकलगार ॥ १४ ॥

पात्रमांहिजोलीगहिराषै, जोगीभिस्सामांगनजाई
 ॥ जागैजगतसोवहीगोरष, एधासव्दसुनावैआई ॥
 भीष्याफिरेबहुतकरिताकों, सोवहिभीष्याचेलपा
 ई ॥ सुंदरजोगीजुगजुगजीवै ताअवधूतकीदूरवला
 ई ॥ १५ ॥ परधनहरेकरेपरनिंदा, परतिचकोरापेघर
 मांहीं ॥ मांसपाचमदिरापुनिपीवै, ताहिमुक्तिकोसं
 सेनाहीं ॥ अकर्मगहैकर्मसबत्यागै, ताकीसंगतपाप
 नसांहीं ॥ एसीकरेसोसंतकहोवै, सुंदरअोरउपजि
 मरिजाहीं ॥ १६ ॥ निरदईहोइतिरैपसुधातिक, दयावं
 तबूडैभवसांहीं ॥ लोभीलगैसबनकुंआरो, निरलोभी
 कोठोहरनाहीं ॥ मिथ्यावादिमिलैग्रहहूंक, सत्यकहैते
 जमपुरजांहीं ॥ सुंदरधूपमांहिसीतलता, जरतरहेसो
 बैठैछांहीं ॥ १७ ॥ बढईचरपाभलोसंवाख्यो, फिरनेला
 ग्योनीकीभांत, ॥ बहूसासुकोकहीसमजावे, तूंमेरेदि
 गवैठीकात ॥ ताकोतारनट्टेकबहू, पूनिघटेनहीदि
 नरात ॥ सुंदरविधिसंबनेजुलाहा, साषानियजेउंची
 जात ॥ १८ ॥ मायबापतजधीउमडानी, हरषतचलीय
 समकेपास ॥ बहूविचारिवडिबगतावर, जाकेकहेच
 लतहैसास ॥ भाईषरोभलोहितकारी, सबकुदुंबको-

कीनोनास ॥ ऐसीविधिघरबस्योहमारो, कहसमजा
 बैसुंदरदास ॥ १९ ॥ घरघरफिरैकुवारिकन्या, जने
 जनेसुंकरतीसंग ॥ बैस्यासोतोभईपतिव्रता, एकपु
 रुषकेलागीअंग ॥ कलजुगमांहींसतजुगथाप्यो,
 पापीउदयधरमकोभंग ॥ सुंदरकहतअरथसोंपा
 वै, जोनीकेकरितजेअनंग ॥ २० ॥ विप्ररसोईकरनेला
 ग्यो, चोकाभीतरबैठोआई ॥ लकरीमाहीचूलादीया
 रोटीऊपरनवाचढाई ॥ पिचरीमाहींहंडियांरांधी, साल
 नआकधतुराबाई ॥ सुंदरजीमतअतिस्वपायो,
 अबकेभोजनकियोअघाई ॥ २१ ॥ बैलउलटनाइककुं
 लाघो, वस्तुमांहिंभरिगूनअपार ॥ भांतिभांतिकोसौ
 दाकियो, आयदिसांतरयासंसार ॥ नायकनीपुनि
 हरयतडोलै, मोहिमिल्यौनीकोभरयार ॥ पुंजीजाय
 साहकौंसोंपी, सुंदरसिरतेंडास्यौभार ॥ २२ ॥ बनियां
 एकवनजकुंआयो, परेनाचराभारीभैठ, भलीवस्तु
 कछुलीनीदीनी, बेंचगठरियांबांधीऐठ ॥ सोदाकी-
 योचलेपुनिघरकुं, लेषाकीयांबरिनरेबैठ ॥ सुंदरसा
 हसर्षाअतिहूचा, बैलगयोपुंजीमेंपैठ ॥ २३ ॥ पैहेरा
 इतधरधुस्योसाहको, रक्षाकरनेलाग्योचोर ॥ कोत-

बालकाढोकरिचांध्यो, सूजेनहिंसांजअरुभोर॥ राजा
 गामछोडकेभाग्यो, हुवोसकलजगतमैसोर॥ परजा
 सुखीभईनगरीमें, सुंदरकोईजुलमनजोर॥ २४॥ रा
 जाफिरैविपतकोमाख्यो, घरघरदुकडामागैभीष॥
 पांवपियादेनिसदिनडोलै, घोडाचालिसकैनहिषी
 ष॥ आकअरंडकिलकरीचूषे, छांटेबहुतरसभरेईष
 ॥ सुंदरकोउजगतमेंविरलौ, यामूरषकौलावैसीष॥
 २५॥ पानीजरेधुकारेनिसदिन, ताकोअग्निबुजावै-
 आई॥ हूंसीतलतूंतपतभयाक्यों, वारंवारकहेसमु
 जाई
 ई॥ मेरीलपटतोहिजोलांगे, तोतुभीसीतलहोइजा
 ई॥ कबहूंजरनिफेरिनहिंउपजे, सुंदरसुखमेंरहैस
 माई॥ २६॥ षसमयस्थोजोस्तकेपीछे, कट्योनमाने
 भुंड़ीरांड॥ जिततितफिरेभटकतीयोंही, तेतोफियो
 जगतमेंभांड॥ तोहूंभूषनभागीतेरी, तूंगिलचैठीसा
 रीमांड॥ सुंदरकहैसीषसनमोरी, अवतूंघरघरफि
 रयोछांड॥ २७॥ पंथीमांहिपंथचलिआयो, सोवह
 पंथलव्योनहिंजाई॥ बाहीपंथचल्योउठपंथी, निर
 भैदेसपहुंचौआई॥ तहांदुकालपरेनहिंकबहूं, सदा

सुमिसरत्योदहराई ॥ सुंदरदुर्धानकोऊदीपै,
 अक्षयसुखमें रहै समाई ॥ २८ ॥ एकअहेरीबन
 में आयो, खेलन लाग्यो भली सिकार ॥ करमेध-
 नुषकमरमें तरकस, सावजचेरेवारंवार ॥ सारो
 सिंघ व्याध पुनि मास्थो, मारीबहुरि मृगनि कीडा
 रा ॥ ऐसे सकल मारि धर लायो, सुंदर राजहि कि-
 योजुहार ॥ २९ ॥ सुककेचन अमृतमइ ऐसे,
 कोकिलधार रहै मनमाही ॥ सारो सुने भागवत
 कबहूँ, सारसतौ उपजाने नाहीं ॥ हंस तुगे सुगता
 फल अर्थहि, सुंदर मान सरोवरतांहीं ॥ काक
 कवी स्वरनीके जेते, सो सब दारत कर कहि जाही
 ॥ ३० ॥ नष्ट होइ द्विज भ्रष्ट क्रिया करि, कष्ट किये
 नहिं पावै ठौर ॥ महिमा सकल गर्दितन केरी, रह
 त पदन तरसब सिरमौर ॥ जित तित फिरे नही क
 छु आदर, तिनको कोउन धाले कोर ॥ सुंदर दा
 सकहे सम जावै, ऐसी कोउ करं मति ओर ॥ ३१
 ॥ सारु नरु देव पुरान पढ़े किन, पुनि व्याकर्न पढ़े
 जे कोई ॥ संध्या करै गहै पटकर्महि, गुन अरु का
 ल विचार सोई ॥ सारा काम न वेबनि आवै, मनमें

सबतजिराषेदोई ॥ सुंदरदासकहेसुनपंडित, रा
 मनामविनासुक्तिनहोई ॥ ३१ ॥ ॥ इतिविपर्ज
 यसब्दकोअंगसमाप्तः ॥ २० ॥ ॥ ॥
 अथसूरातनकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदमन
 हर ॥ ॥ सुनतनगारेचोटविकसेकमलसुष,
 अधिकउछाहफूल्योमाईदूनतनमें ॥ फेरेजबसां
 गतवकोईधीरधरे, कायरकंपाईमानहोतदेषीम
 नमें ॥ कुदकेपतंगजेसेपरतपावकमाहीं, ऐसेदू
 टपरेबहुसांवतकेघनमें ॥ मारीघमसाणकरीसुं
 दरजुहारस्याम, सोईसूरवीरस्तपरहेजाईरिनमें
 ॥ १ ॥ हाथमेगहेषरगमारवेकोंएकपग, तनमन
 आपनोसमरपनकीनोहें ॥ आगेकरमीचको
 जुपस्थौडाकिरनबीच, दूकदूकहोईकेभगाई
 दलदीनोहे ॥ पाईलीनस्यामकोहरामधोरकेसे
 होई, नामजादजगतमेजीत्योपनतीनोहे ॥ सुं
 दरकहतएसोकोनसूरवीर, सीसकोउतारकेसु
 जसजाईलीनोहें ॥ २ ॥ पांचरोपिरहेरिनमांहीर
 जपूतकोऊ, हयगजगाजतजुरतजहांजलहें ॥
 बाजतजूजाउसहनार्दिसिंधुरागपुनि, सुनतही-

कायरकीछूठिजातकलहें ॥ ऊलकतपरछितरछि
 तरवारहे, मारमारकरतपरतषलभरहें ॥ एसेजुद्ध
 मेंअडिगसुंदरसुभटसोई, घरमांहीसूरमाकहां
 बतसकलहें ॥ ३ ॥ असनबसनबहुभूषनसकलअं
 ग, संपतिविविधभांतिभस्योसबघरहें ॥ अवनन
 गारोसुनिछिनकमेंछांड़िजात, एसेनहींजानेक-
 छूमेरेउहांमरहें ॥ मनमेंउछाहरनमाहीदूकदूक-
 होई, निरमेनिसंकवांकेरंचहूनडरहें ॥ सुंदरकह-
 तकोऊदेहकोममत्वनाहीं, सूरमाकोदेवीयतसी
 सबनुधरहें ॥ ४ ॥ ऊजबेकोचावजाकेताकीताकी
 करेघाव, आगेधरिपांवफिरपीछेनसंभारीहें ॥
 हाथलीयेहथियारतीछनलगायेधार, वारनहीं
 लागेसबपिसुनप्रहारहे ॥ वाटनहींराषेकछूलोट
 पोटहोईजाई, चोटनहीचूकेसीसरिपुकोउतारहे ॥
 सुंदरकहतताहीनेंकहूनसोचपोंच, सोईसूरवीर
 धीरमरजायमारहे ॥ ५ ॥ अधिकअजानबाहूम
 नमेंउछाहकीये, दीयेगजढाहसुषवरषतनूरहें ॥
 काटेजबतरबालबालसबठाटेहोई, अतिविका
 रालपुनिदेषतकस्तरहे ॥ नेकनउसासलेतफोज

कुंफिटार्डदेत, घेतनहींछांडेमारिकेचकचूरहें ॥
 सुंदरकहतताकीकीरतिप्रसिद्धहोई, सोईसूरवी
 रधीरस्यामकेहजूरहे ॥ ६ ॥ ज्ञानकोकवचअंग
 काहूसोनहोइभंग, टोपसीस ऊलकतपरमवि
 धेकहें ॥ तनताजीअसवारलीयेसमसेरसार,
 आंगहीकोपांचधरेभागनेकीटेकहे ॥ छूटतबंदूक
 बानमचेंजहांचमसान, देषीकेपिसूनदलमारतअ
 नेकहे ॥ सुंदरसकललोकमांहीताकोजेजेकार,
 ऐसोसूरवीरकोऊकोटिनमेंएकहे ॥ ७ ॥ सूरवीररि
 पुसनमुपदेविनोटकरे, मारेतबताकीताकितरवार
 तीरसों ॥ साधूआठोजामबैठोमनहिसोंजुद्धकरे,
 जाकोमुहमाथोनहिदेपीयेशरीरसों ॥ सूरवीरभू-
 मीपरदूरहीतेंदोरिलगे, साधूसनकोंपकरिरायेध
 रधीरसों ॥ सुंदरकहततहांकाहूकोनपांचटिके,
 साधूकोसंग्रामहेआधीकसूरवीरसों ॥ ८ ॥ धेंचेक
 रडीकमानज्ञानकोलगायोचान, माख्योमहावल
 मन्तजगजिनरान्योहे ॥ ताकेआगवाणीपंचजोधा
 उकतलकीये, ओररन्धोपख्योसवअरिदलभान्यो
 हे ॥ ऐसोकोऊसमदजगनमेंनदेपीयत, जाकेआ

गेकालहू सो कं पिकयरा न्यौहे ॥ सुंदर कहत ताकी सो
 भातिहुं लोक मांही, साधू सो न सूरवीर कोई हम जान्यौ
 है ॥ ६ ॥ काम सो प्रबल महाजीते जिन तिन लोक, सो
 तो एक साधू को विचार आगे हास्योहे ॥ क्रोध सो करा
 ल जाके देषतन धीर धरे, सोऊ साधू क्षमाके हथ्यार सो
 धिदास्योहे ॥ लोभ सो सुभट साधू तोष सो गिराय दी
 यो, मोह सो नृपति साधू ज्ञान सुप्रहास्योहे ॥ सुंदर
 कहत एसो साधू कोई सूरवीर, ताकताक सबही पिसु
 न दल मास्योहे ॥ १० ॥ मारे काम क्रोध सब लोभ मोह
 पीस डारे, इंद्रिहू कतल करि कीचोर जपू तोहे ॥ मास्यो
 महामत मन मारे अहंकार भीर, मारे मद मछर उएसो
 रन रू तोहे ॥ मारी आसा अथगा पुनियापनि सापनि
 दोऊ ॥ सब को भहार करि निज पद पहुं तोहे ॥ सुंदर
 कहत एसो साधू कोई सूरवीर, वैरी सब मारी के न चिंत
 होय सू तोहे ॥ ११ ॥ किये जीन मन हाथ इद्रिन को सब
 गाय, घेरी घेरी आपने ईनाथ सो लगाये हं ॥ और उ
 अनेक वैरी मारे सब जुद्ध करि, काम क्रोध लोभ मोह
 पाद के बहाये हं ॥ कियो हे संग्राम जिना दीयो हं भगा
 इदल, एसे महां सुभट सुग्रंथ निमंगाए हं ॥ सुंदर

संगा ॥ २ ॥ ज्यौलटभंगकरेअपनेसम, तासनभिन्न
 कहेनहिकोई ॥ ज्यौद्रुमओरअनेकनिभातिन, चंदन
 कीटिगचंदनहोई ॥ ज्यौंजलछूद्रमिलेजबगंगहि, हो
 इपवित्रउहेजलसोई ॥ सुंदरजातस्वभावमिटेसब,
 साधूकेसंगतेसाधूहीहोई ॥ ३ ॥ जोकोउआवतहेउन
 केटिग, वाहीरकनावतसब्दसंदेसो ॥ ताहीकोतसी
 हीओषधीलावत, जाहीकोरोगहीजानतजेसो ॥
 कर्मफलंकहिकाटतहेसब, सुखकरेपुनिकंचनते-
 सो ॥ सुंदरवस्तुविचारतहेनित, संतनिकोजुप्रभा
 यहेएसो ॥ ४ ॥ जोपरब्रह्ममिल्योकोउचाहत, तोनि
 तसंतसमागमकीजे ॥ अंतरमेटीनिरंतरहोयके,
 लेउनकोअपनोंमनदीजें ॥ वेसुषद्वारउचारकरेक
 छु, सोअनयाससुधारसपीजें ॥ सुंदरसूरप्रका
 सभयोजब, ओरअज्ञानसबंतमछीजें ॥ ५ ॥ जा-
 दिनतेसतसंगमिल्योतब, तादिनतेभ्रमभाजगयो
 हैं ॥ ओरउपायथकेसबहीतब, संतनिअद्वयज्ञान
 दयोहें ॥ पोतप्रवालहीक्योंकरिछूवत, एकअमो
 लकलाललल्योहें ॥ कोनप्रकाररहेरेजनीतम, सुंद
 रसूरप्रकासभयोहें ॥ ६ ॥ संतमदासबकोहितवंछि

त, जानतहे नरबूडतकाटे ॥ देउपदेसमिटाइसबेभ
 म, देकरिजानजहाजहीचाटे ॥ जेविषयासुषणाहि
 नछांडत, ज्यौंकपिमूठगहेसठगांटे ॥ सुंदरयेदुषके
 मरुषभानत, हादहीहादविकावतआटे ॥ ७ ॥ सोअ
 नखासतरेभवरसागर, जोसमसंगतमेचलिआवे ॥
 ज्यौंकणिहारणभेदकरेकछू, आइचटेतिहिनांच
 दावे ॥ ब्राम्हणधनत्रियवैश्यद्वेषद्वेष्ट, मलेच्छचंडाल-
 हीपारलगाये ॥ सुंदरबारकछूनहिंलागत, यानरदे
 हअमैपदपाये ॥ ८ ॥ ज्यौंहमषाईपीवैअरुयोवही
 तेसेहीअंसबलोकबपाने ॥ ज्यौंजलमेंससिकेमति
 बिंबहि, आपसमांजलजंतुसमाने ॥ ज्यौंपगछां
 हधरापरदीसत, सुंदरपंषिउडेअसमाने ॥ त्यौंबठ
 देहनिकेकतदेषत, संतनिकीगतिज्यौंकोउजाने ॥
 ९ ॥ ज्यौंपपराकरलेघरडोलत, मांगतभीपहीतोन
 हींलाजे ॥ जोसुषसेजपटंबरसूषन, लावतचंदन
 लोमलिसजे ॥ जोकोउआयकहेमुपतेकछू, जान
 तताहीबगारहीवाजे ॥ सुंदरसंसयदूरभयोसब,
 जोकछुसाधूकरेसोइछाजे ॥ १० ॥ कोउकनिंदतको
 उकवंदत, कोउकदेतहंआइकेसछन ॥ कोउकआ

यलगावतचंदन, कोउकडारतधूरिततक्षन ॥ कोउ
 कहेयहमूरषदीसत, कोउकहेयहआंहिविचछन
 ॥ रुंदरकाहूसौरागनदेषन, एसबजानहूसाधूकेल
 छन ॥ तातमिलेपुनिमातमिलेसत, आतमिलेजु
 पतिसुषदाई ॥ राजमिलेगजबाजमिलेसब, साज
 मिलेमनचांछितपाई ॥ लोकमिलेसरलोकमिलेवि
 धि, लोकमिलेवैकुंठहिजाई ॥ रुंदरआोरमिलेसब
 हीसुष, संतसमागमदुर्लभभाई ॥ १२ ॥ ॥ छं
 दमनहर ॥ ॥ देवहूभयेतेकहाइंद्रहूभयेतेक
 हा, विधिहूकेलोकतेबहुरिआइयतुहें ॥ मानुषभ
 येतेकहांभूपतिभयेतेकहा, द्विजहूभयेतेकहांपार
 जाइयतुहें ॥ पक्षहूभयेतेकहांपंषीहूभयेतेकहा,
 पन्नगभयेतेकहाक्योंअघाइयतुहें ॥ छूटीवेकोरुं
 दरउपायएकसाधूसंग, जिनकीकृपातेअतिसुष
 पाइयतुहें ॥ १३ ॥ इंद्रोनीशुंगारधरिचंदनलगायोअं
 ग, बाहीदेवीइंद्रअतिकामावसभयोहें ॥ सूकरीहू
 कर्दमबीचहूमेंलोठिकरि, आगेजाईसूकरकोमन-
 हरिन्दयोहें ॥ जेसोसुषसूकरकोतेसोसरवमघवा
 को, तेसोसुषनरपसुपंषिनकौंदयोहें ॥ रुंदरकहत

जाके भयो ब्रह्मानंद रूप सोई साधू जगत में जीती
 करि गयो हें ॥ १४ ॥ धूलि जे सो धन जाके सुलिसों
 संसार सुख, भूलि जे सो भाग देषें अंत के सीधारी
 हें ॥ पाप जे से प्रभु ताई साप जे सो सनमान, बड़ा
 ई बिछुन जे सी नागनी सी नारी हें ॥ अग्नि जे सो इंद्र
 लोक विध जे सो विधी लोक, कीरती कलंक जे सी-
 सिधि सी ठगारी हें ॥ वासनान कोई वाकी ऐसी म-
 तिस दाजा की, सुंदर कहत ताही वंदना हमारी हें ॥
 १५ ॥ काम हीन क्रोध जाके लोभ हीन मोह ताके,
 मद हीन मछरन को उन विकारो हें ॥ दुष हीन सुख
 माने पाप हीन पुन्य जानें, हरषन को कअने देह
 हीतें न्यारो हें ॥ निंद्यान प्रसंसार के रे राग हीन दोष
 धरे, लेन हीन देन जाके कछून पसारो हें ॥ सुंदर,
 कहत ताकी अगम अगाध गति, एसो को ऊसाधू
 सो तो राम जी को प्यारो हें ॥ १६ ॥ आठो जाम जप
 नेम आठो जाम रहे प्रेम, आठो जाम जाग्य जज्ञ
 कीयो बहु दानजू ॥ आठो जाम जपत पआठो जाम
 मर्नयो वन, आठो जाम तीर्थ में करत हें स्नान-
 जू ॥ आठो जाम पूजा विधि आठो जाम आरती

हैं, आठोजामदंडवतसुमरनध्यानजू ॥ सुंदरक
हतजिनकीयोसबआठोजाम, सोईसाधूजाके
उरएकभगवानजू ॥ १७ ॥ जेसेआरसीकोमेल
कादतसिकलिगर, सुषमेंनफेरिकोऊवहेवाको
पीतहैं ॥ जेसेबैदनेनमेंसलाकामेलिसुधकरे,
परलगहेतेतहांज्योंकीत्योंहीजोतहैं ॥ जेसेवा
यूवादरविषैरेकेंउडाईदेत, रवितोअकासमांही
सदाईउद्योतहैं ॥ सुंदरकहतभ्रमछिनमेंविला
ईजात, साधूहीकेसंगतेस्वरूपज्ञानहोतहैं ॥ १८
मृतकदादुरजीवसकलजीवायेजिन, वरषतवा
नीसुषमेघकीसीधारकों ॥ देतउपदेसकोउस्वार
थनलचलेस, निसदिनकरतहेब्रह्महिविचार-
कों ॥ औरहुसंदेहसबमेदतनिमषमांहीं, सूरज
मिट्टाईदेतजेसेअंधकारकों ॥ सुंदरकहतहंस
यासीसुषसागरके ॥ संतजनआयोहेसोपरउ
पकारकों ॥ १९ ॥ हीराहीनलालहीनपारसनचिं
तामर्नी, औरउअनेकनगकहोकहांकीजिये ॥
कामधेनुसरतरुचंदननदीसमुद्र, नौकाहूजि-
हाजपैठकबहुकछीजिये ॥ पृथ्वीआपतेजवा

युव्योमलोंसकलजड, चंदसूरसीतलतपतगुन
 लीजिये ॥ सुंदरविचारहमसोधैसबदेषलोकसं
 तनिकेसमकहो औरकहादीजिये ॥ २० ॥ जिनत
 नमनप्रानदीनोसबमेरेहेत, औरऊसमत्वबुद्धी
 आपनीउठाईहैं ॥ जागतउसोवतउगावतहेमेरे-
 गुन, करतभजनध्यानदूसरीनकाईहैं ॥ तिनकेमें
 पीछेलग्योफिरतहोनिसदिन, सुंदरकहतमेरीउ-
 नतेंउठाईहैं ॥ वहेमेरेप्रीयमेंहोउनकेआधीनस-
 दा, संतनकीमहिमातोश्रीमुषस्कनाइहैं ॥ २१ ॥
 जगतज्योहारसबदेषतहेऊपरको, अंतःकरनके
 तोनेकनपीछानेहैं ॥ छाजनकेभोजनकेहलनच-
 लनकछू, औरकोऊक्रीयाकीतोमध्यईबखानेहैं
 ॥ आपनेईअवगुनआरोपेअज्ञानीजीव, सुंदर
 कहततातेंनिंदाहीकोंठानेहैं ॥ भावमेतोअंतरहै
 रातिआरुदिनकेसो, साधकीपरिक्षाकोउकेसेंक-
 रिजानेहैं ॥ २२ ॥ उहीदगावाजऊहीकुर्षीजुकलक
 भस्यो, ऊहीमहांपापीचाकेनपसिषकीचहैं ॥ ऊही
 गुरुद्रोहीगबुआम्हनहननहार, उहीआतमाकोया-
 नीएसीवाकीबीचहैं ॥ उहीअधकोसमुद्रउहीआ

गकोपहार, सुंदर कहत वाकीबुरी भांतमीचहें ॥
 उहीहैंमलेछउहीचंडालबुरेतेंबुरो, संतनीकीनिंदाक
 रेसोतोमहानीचहें ॥ २३ ॥ परिहेविजुरीताकेऊपर
 सोअचानक, धूरिउडिजायकहूंठोरनहींपाईहैं ॥
 पीछेकोउचुगमहानरकमेंपरेजाई, उपरतेजमही
 कीमारबहुषाईहैं ॥ ताकोपीछेभूतमेतथावरजंग
 मजोनी, सहेगोसंकटतबपीछेपछताइहें ॥ सुंद
 र कहत औरभुगतेंअनंतदुष, संतनीकोनिंदता
 कोंसत्यानासजईहैं ॥ २४ ॥ क्रुपमेकोमेंडकसों
 क्रुपकोंसरावतहैं, राजहंससोंकहतकेंतोतेरोस
 रहें ॥ मसकाकहतमेरीसरभरकोंनउडे, मेरेआ
 गेरुडकीकेतीएकजरहें ॥ गूबरीलागोलीकोल्ह
 र्वाईकरिमानेमोद, मधुपकोंनिंदतसुगंधजाको-
 धरहें ॥ अपनीनजानेगतिसंतनीकोंनामधरे, सुं
 दर कहतदेषोरेसेमूढनरहे ॥ २५ ॥ कोउसाधुभज
 नीकहंतोलयलीनअति, कबहूंप्रारब्धकर्मधका
 आईदयोहे ॥ जेसेकोऊमारगमेंचलतअपंडिपेर
 फेरीकरिउठेतबउंहंपथलयोहे ॥ जेसीचंद्रमाकीपु
 निकलाछीनहोईगई, सुंदरसकललोकद्वितीया-

कौनयोहें ॥ देवहूको देवातन गयो ता में कहां भयो
 पीतरको मोल सो तो नाहीं कछू गयोहें ॥ २६ ॥ ताही के भ
 गति भाव उपजे हे अनायास, जाकी मति संतनी सो सं
 दा अनुरागी हैं ॥ अति सुषपावे ता के दुष सब दूर होई
 ओर हू का हू कि जिन निंदा सब त्यागी हैं ॥ संसार की फा
 सकाटी पाई हे परम पद, सत संग ही ते जा के एसी मति
 जागी हैं ॥ सुंदर कहत ता को तुरत कल्याण होई, संत
 निको गुन गहे सोई बड भागी हैं ॥ २७ ॥ जोग जज्ञ जप
 तप तीर्थ व्रतादिदान, साधन सकल नहिं या की सरभ
 रहे ॥ ओर देवी देवता उपासना अनेक भांति, संक
 ब दूर करित न ते न डरें ॥ सब ही के सी सपर पांव दे
 गति होई, सुंदर कहत सो तो जन में न मरें ॥ मन व
 काय करि अंतर न राखे कछू, संतनी की सेवा करे सो
 निसतरें ॥ २८ ॥ प्रथम सुजस लेत सील हू संतोष
 न, क्षमा दया धर्म लेत पाप ते डरतु हैं ॥ इंद्रनी को घे
 लेत मन ही को फेरी लेत, जोग की जु गति लेत ध्यान
 धरतु हैं ॥ गुरु को वचन लेत हरि जी को नाम लेत, आ
 मा को सोधी लेत भोजन लतरतु हैं ॥ सुंदर कहत ज
 सत कछू लेत नाहीं, संत जन निस दिन ले वाई करत

॥२९॥ साचोउपदेशदेतभलीभलीसीबदेत, समतासु
 बुधिदेतकुमतीहरतुहे ॥ मार्गदिषाईदेतभावहूभ
 गतिदेत, प्रेमकीप्रतीतिदेतअभराभरतुहे ॥ ज्ञानदे
 तध्यानदेतआतमाविचारदेत, ब्रह्मकीबताईदेतब्र
 ह्ममेंचरतुहें ॥ सुंदरकहतजगसंतकछूलेतनाही
 संतजननिसदिनदेवोईकरतुहें ॥ ३०॥ ॥ ॥
 इतिसाधूकोअंगसमाप्तः ॥ २२॥ ॥ ॥
 अथज्ञानीकोअंगप्रारंभः ॥ छंदइंदव ॥
 जाकेहृदेमहिज्ञानप्रकासत, ताकोस्वभावरहेच्यौ
 छाने ॥ नेनमेबेनमेंसेनमेंजानीये, ऊठतबैठतहीअ
 लसाने ॥ ज्योंकछुभक्षकियेउदगारत, कैसेहिराषि
 सकैनअधानों ॥ सुंदरदासप्रसिद्धदिषावत, धान
 कोषेतपरारतेंजानो ॥ १॥ ज्ञानप्रकासभयोजिनके
 उर, वेधठच्यौहिछिपेनरहेंगे ॥ भोडुलमांहिदुरेनहिं-
 दीपक, जद्यपिवेमुषमोंनगहेंगे ॥ ज्योंधनसारहीगो
 प्यछिपावत, तोहिरुगंधहितग्यलहेंगे ॥ सुंदरओ
 रकहाकोउजानत, धूवेकीवातबटाउकहेंगे ॥ २॥ बो
 लतचालतबैठतऊठत, पीवतरवातदुरसंघतस्वासे
 ॥ उपरतोव्यवहारकरेसब, भीतरस्वभसमानजुभा

से ॥ लेकरि तीरपताल को साधत, मारत हे पुन फेर-
 अकासें ॥ सुंदर देह क्रिया सब देषत, कोउ कपायत
 ज्ञानी के आसें ॥ ३ ॥ बैठे तो बैठे चले तो चले पुनि,
 पीछे तो पीछे ही आगे तो आगे ॥ बोले तो बोले न बो-
 ले तो मानहि, सोवे तो सोवे रुजागे तो जागे ॥ षाई
 तो षाइन ही तो नही जु, गेह तो गेह पुनि त्यागे तो त्या-
 गे ॥ सुंदर ज्ञानी की ऐसी दसा यह, जाने नही क-
 छुराग विरागे ॥ ४ ॥ देषत हे पेंक छूनहि देषत, बोल-
 त हे नहि बोल चषानें ॥ संघत हे नही संघत घानसू-
 ने सब हे न सनें यह कानें ॥ भक्ष करे अरु नाहीं भषे
 कछु, भेटत हे नही भेटत प्रानें ॥ लेतहि देतहि लेत न
 देतहि, सुंदर ज्ञानी की ज्ञानी ही जानें ॥ ५ ॥ काज अ-
 काज भलो न बुरो कछु, उत्तम मध्यम द्रष्टु न आवे ॥
 काय कवायक मानस कर्मसु, आप विषे नहि तिहूं
 ठहरावें ॥ हुं करि हो न कि यौ न करे अक, यौ मन इंद्रि-
 नि को वरतावें ॥ दीसत हे व्यवहार विषे नित, सुंदर ज्ञा-
 नी की कोउ कपावे ॥ ६ ॥ देषत ब्रह्म सनें पुनि ब्रह्महि
 बोलत हे सोइ ब्रह्महि जानी ॥ भूमि हुनी रहने जहुवा
 खुहु, व्योमहि ब्रह्म जहां लगानी ॥ आदिहु अंतहु

मध्यब्रह्महि, हेसबब्रह्मयहेमतिठानी॥ सुंदर
 जेयरुज्ञानब्रह्महैं, आपहुवह्महीजानतजानी
 ॥७॥ वैठतकेवलऊठतकेवल, बोलतकेवलबात
 कहीहैं॥ जागतकेवलसोचतकेवल, जोचतकेव
 लद्रष्टितहीहैं॥ भूतहुकेवलभव्यहुकेवल, चरत
 तकेवलब्रह्मरहिहैं॥ हेसबहीअधऊर्ध्वसके
 वल, सुंदरकेवलज्ञानउहीहैं॥ ८॥ केवलज्ञान
 भयोजिनकेउर, तेअधऊर्ध्वसलोचनजाहीं॥
 व्यापकब्रह्मअरखंडनिरंतर, चाविनओरकहुं
 कछुनाहीं॥ ज्यौघटनासभयोघटव्योमसुली
 नभयोपुनहैनभमांहीं॥ त्यांपुनिसुक्तिजहांव
 पुछांडत, सुंदरसोक्षशिलाकहुंकांहीं॥ ९॥ आ
 दिहुतोनहिअंतरहेनहिं, मध्यशरीरभयोभ्रम
 कूपा॥ भासतहेकछुओरकोओरहि, ज्यौंरजु
 मेंअहिसीपमेंरूपा॥ देषिमरीचिउठ्यौविचवि
 भ्रम, जानतनाहिंउहेंरविधूपा॥ सुंदरज्ञानभ
 कासभयोजब, एकअखंडितब्रह्मअनूपा॥ १०
 ॥ छंदमनहरा॥ ॥ जाहीकेंचिंवंकजा
 नताहीकेकुसलभयो, जाहीवोरजाईबांकोता

हीघोरसुषहे ॥ जेसेकोइपायनिपेजारकोचढाई
 लेत, ताकोतो नकोउकाटेघोभरेकोदुषहे ॥ भावे
 कोउनिंदाकरेभावेताप्रसंसाकरे, वेतोदेखेआर-
 मीमेंआपनोईसुषहे ॥ देहकोव्योहारसबमि-
 थ्याकरजानतहे ॥ सुंदरकहतएकआतमाहीरू-
 पहे ॥ ११ ॥ अंतःकरनजाकेतमगुनछाईरखी,
 जडताअजानवाकेआलसमैआसहे ॥ रजगुन
 कोप्रभावअंतःकरनजाके, विविधकरमवाकेका
 मनाकोवासहे ॥ सत्यगुनअंतःकरनजाकेदेखीय
 त, क्रियाकरिसुखवाकेभक्तिकोनिवासहे ॥ त्रि-
 गुणअतीतसाक्षीसुरीयास्वस्त्वजान, सुंदरक
 हतवाकेजानकाप्रकासहे ॥ १२ ॥ तमोगुनबुधीसोतो
 नवाकंसमानजेसे, ताकेमध्यस्तरजकीरंचहुनजो-
 तहे ॥ रजोगुनबुधीजिसंआरसीकांउंधोघोर, ताके
 मध्यस्तरजकीकछूकउद्यांनहे ॥ सत्यगुनबुधीजेसे
 आरसीकीसुधीआर, ताकेमध्यप्रतिबिंबसूरज-
 कोपोतहे ॥ त्रिगुनअतितजेमेंप्रतिबिंबमिदिजा
 त, सुंदरकहतएकस्तरजहिहोतहे ॥ १३ ॥ सवसोंउ-
 दासीहोइकादिमनमिन्नकर, ताकेनामकर्हायत

परमवैरागहं॥ अंतःकरनहुकीचासनानिर्वर्तहोई,
ताकोमुनीकहतहंउहंवडोत्यागहं॥ वित्तएकईश्व
रतैनैकहूनन्यारोहोई, उहेभक्तकहीयतउहंप्रेम
मार्गहें॥ आपुअहजगतकोएककरीजानेसब,
संदरकहतवहजानभ्रमभागहें॥ १४॥ कोउनृपकू
लनिकीसेजपरिसूतोआई; जबलगजाग्योतोली
अतिसूषमान्योहें॥ नीदजबआहीतबचाहीकों
स्वपनभयो, जवपस्थोनरककेकुंडमेंयोजान्योहें॥
अतिदुषपावेपरनिकस्थोनवयौंहीजाई, जागिजव
पस्थोतवस्वपनबषान्योहें॥ यहजूठवहजूठजाग्र
तस्वपनदोउ, संदरकहतजानीसबभ्रमभान्योहें
॥ १५॥ स्वपनेमेंराजाहोईस्वपनेमेंरंकहोई, स्वपने
मेंसूषदुषसत्यकरिजानेहें॥ स्वपनेमेंबुधीहीनमू
ढनसमजकछू, स्वप्नमेंपंडितबहूग्रंथनिघपानेहें
॥ स्वप्नमेंकामीहोईइंद्रीनिकेवसपस्थो, स्वपनेमें
जतिहोईअहंकारआनेहें॥ स्वप्नेतेंजाग्योजब
समजपरीहेतब, संदरकहतसबमिथ्याकरिमा
नेहें॥ १६॥ विधिननिषेधकछूभेदनअभेदपुनि
क्रियासोंकरतदीसेयोहीनितप्रतिहें॥ काहूकों

निकटराषेकाहूकेंतोदूरभाषे, काहूसेंनेरेनदूरएसी
जाकीमतीहें ॥ रागहूनदोषकोउसीकनउछाहदोउ
ऐसीविधिरहंकहूरतिनाविरतिहें ॥ बाहिरव्यवहार
ठानेंमनमेंस्वपनजानें, सुंदरजानीकीकछुअदभू
तगतीहै ॥ १७ ॥ कामीहैनजतीहैनरक्तमहैनसती
हैन, राजाहैनरंकहैनतनहैनमनहें ॥ सोयेहैनजागे
हैनपीछेहैनआगेहैन, ग्रहेहैनत्यागेहैनघरहूनब
नहें ॥ स्थिरहैनडोलहैनमोनहेंतबोलहैन, बंधहैन
षोलहैनस्वामीहैनजनहें ॥ वेसोकोउहोवेजवपाकी
गतिजानेंतब, सुंदरकहतजानीजानसुधधनहें ॥

॥ १८ ॥

॥ इतिजानीकोअंगसमाप्तः ॥

॥ अथसारव्यजानकोअंगप्रारंभः ॥ ॥

छंदमनहर ॥ ॥ छितिजलपावकपवनन
भमिलिकार, सब्दरूपसरूपरसगंधजू ॥ ओन्नत्व
कुचक्षुघ्राणरसनारसकोज्ञान, वाक्पाणीपादपा
यूपस्थहिवंधजू ॥ मनबुद्धिचिन्तअहंकारएचोवी
सनत्व, पंचीसमोजीवतत्वकरतहेंहंधजू ॥ षट्पिं
समांहेब्रह्मसुंदरगुणनिहंकर्म, व्यापकअवंडएक
रसनिरसंगजू ॥ १॥ ओन्नदिगतत्वकवायूलांचनप्रका

सरविनासिकश्चरवनिजिह्वावरुणवधानिये ॥ वा
 कश्चाग्निहस्तइंद्रचरनउपेन्द्रवल, मेदप्रजापतिगुदा
 मृत्युहकोठानिये ॥ मनचंद्रबुधिविधिवित्तवासुदे
 वश्चाहि, अहंकाररुद्रकोप्रभावकरिमानिये ॥ जा-
 कीसतापाइसबदेवताप्रकासतहें, सुंदरसो आत्
 माहीन्यारोकरिजानीये ॥ २ ॥ ॥ छंदइंद्रव ॥
 ओन्नस्नेद्रगदेवतहेरस, नारसघानस्रगंधपिया
 रो ॥ कोमलतात्वकजानतहेपुन, बोलतहेमुखशब्द
 उचारो ॥ पाणिग्रहेपदगोनकरेमल, मूत्रतजेउभयो
 अधहारो ॥ जाकेप्रकासप्रकासतहेसब, सुंदरसो
 इरहेघटन्यारो ॥ ३ ॥ बुद्धिभ्रमेमनचित्तभ्रमे, अहं
 कारभ्रमेकहाजानतनाहीं ॥ ओन्नभ्रमेत्वक्घान
 भ्रमेरस, नाद्रगदेषीदसोदिसजाहीं ॥ वाकभ्रमे
 करपादभ्रमेगुद, द्वारउपस्थभ्रमेकहुकांहीं ॥ तेरे
 भ्रमाएभ्रमेसबहीपुनि, सुंदरतूंक्यों भ्रमेउनमां
 हीं ॥ ४ ॥ बुद्धिकोबुद्धिरुचित्तकोचित्त, अहंकोअ
 हंमनकोमनबोर्ड ॥ नेनकोनेनहेबेनकोबेनहे, कान
 कोकानतुचात्वक्होर्ड ॥ घानकोघानहेजीभकोजी
 भहे, हाथकोहाथपगेपगदोर्ड ॥ सीसकोसीसहंघा

नकोमानहे, जीवकोजीवहेसुन्दरसोई ॥ ५ ॥ ॥
 छंदमनहर ॥ ॥ प्रश्न ॥ ॥ कैसेकेजगतग्रह
 रच्योहेजगतगुरु, मोसोंकहोप्रथमहीकोनतत्व
 कीनोहैं ॥ पुरुषकेप्रकृतिकेमहत्तत्वअहंकारकी,
 धोंडपजायतमरजसततीनोहे ॥ कीधोंव्योमवा
 युतेजआपकेअवनिकीन, कीधोंपंचविषयपसा
 रकरिलीनोहैं ॥ कीधोंदसइंद्रिकीधोंअंतःकरनकि
 न, सुन्दरकहतकीधोंसकलयहीनोहे ॥ ६ ॥ उत्तर
 ॥ ब्रह्मतेपुरुषअरुप्रकृतिप्रगटभई, प्रकृतितें
 महत्तत्त्वपुनअहंकारहें ॥ अहंकारहूतेंतीनगुन
 सत्वरजतम, तमहूतेंमहाभूतविषयपसारहें ॥ र
 जहूतेंइंद्रिदसप्रथकप्रथकभई, सत्त्वहूतेंमनआ
 दीदेवताविचारहें ॥ एसेअनुक्रमकरिसिषसोंकह
 तगुरु, सुन्दरसकलयहमिथ्याभ्रमजारहें ॥ ७ ॥
 प्रश्न ॥ मेरोरूपभोमीहेकेमेरोरूपआपहेके, मे
 रोरूपतेजहेकेमेरोरूपपोनहे ॥ मेरोरूपव्योमहेके
 मेरोरूपइंद्रियदश, अंतःकरनहेकेबैठोहेकेगोन
 है ॥ मेरोरूपत्रिगुनकेअहंकारमहत्तत्वप्रकृतिपु
 रुषकीधोंबोलेहेकेमोनहे ॥ मेरोरूपस्थूलहेकेसू

क्ष्मआदिमेरोरूप, सुंदरपूँछतगुरुमेरोरूपकोनहे
 ॥८॥ ॥उत्तर॥ ॥तूंतोकछ्भोर्मानाहींआ
 पतेजवाघूनाहीं, व्योमपंचविषनाहींसोतांभ्रम
 कूपहे॥ तूंतोकछ्इंद्रीअरुअंतःकरननाहीं, ती
 नगुनतूंतोनाहींनतोछांहींधूपहे॥ तूंतोअहंका
 रनाहींपुनिमहतत्वनाहीं, प्रकृतिपुरुषनाहींतू-
 तोस्यअनूपहे॥ सुंदरविचारएसंशिषसोंकहत
 गुरु, नाहींनाहींकहतरेसोतेरोरूपहे॥ ९॥ ते
 रीतोस्यरूपहेअनूपचिदानंदधन, देहतोमली
 नजडयोंविवेककीजिये॥ तूंतोनिहसंगनिराका
 रअविनाशीअज, देहतोविनासवतताहीनहि
 धीजिये॥ तूंतोषट्ऊर्मरहितसदाएकसर, देह
 केविकारसबदेहशिरदीजिये॥ सुंदरकहतयों
 विचारआपुमिनजानी॥ परकीउपार्थकहाआ
 पसेंचलीजिये॥ १०॥ देहहीनरकरूपदुषकोनवा
 रपार, देहहीस्वर्गरूपजूठोसुषमान्योहे॥ देह
 हीकोंबधमोक्षदेहहीअप्रोक्षप्रोक्ष, देहहीक
 क्रियाकर्मसुभासुभठान्योहे॥ देहहीमेंऔरदे
 हसुखीवैविलासकरे, ताहीकोंसमजयिनआ

तमावधान्योहे ॥ सुन्दरचैतन्यरूपन्यारोकरिजान्यो
 हे ॥ ११ ॥ देहहलेदेहचलेदेहहीसोंदेहमिले, देहपाईदे
 हपीवैदेहहीभरतहे ॥ देहहिहीमारेगरेदेहहीपावक
 जरे, देहरनमाहीजूँदेहहीपरतहे ॥ देहइअनेक
 र्मकरतभांति, चमककीसतापाईलोहज्योंफिरतहे
 ॥ आतमाचैतन्यरूपव्यापकसाक्षीअनूपसुन्दर
 कहनसोतोजामेनमरतुहे ॥ १२ ॥ देहयहकिनको
 हेदेहपंचभूतनिको, पंचभूतकोनतेहेतामसअहं
 कारतें ॥ अहंकारकोनतेहेजासोंमहत्तत्त्वकहे, म
 हत्तन्वकोनतेहेप्रकृतिसंसारतें ॥ प्रकृतिसोंकोन
 तेंहेपुरुषहेजाकेनाम, पुरुषसोंकोनतेहेब्रह्मनि
 राधारतें ॥ ब्रह्मअबजान्योहमजान्योहेतेनिश्चैक
 र, निश्चैहमकीयोहेतोचुपसुषधारतें ॥ १३ ॥ एकघटमांही
 तोसुगंधजलभरीराष्योएकघटमाहीतोदुग्धजलमस्यो-
 हे, एकघटमाहीपुनिगंगोदकराष्योआनि, एक
 घटमाहींआनीमदीराउकस्योहे ॥ एकघृतएक
 तेलएकमार्हांलघुनीत, सबहीमेंसविताकोप्रति
 बिंबपस्योहे ॥ तेमहीसुन्दरऊचनीचमध्यएकब्र
 ह्म, देहभेददेषीभिन्नभिन्ननामधस्योहे ॥ १४ ॥

भूमिपरआपआपहूकेपरेपांवकहें॥ पावककेपर
 पुनीवायूहीबहतहे॥ वायूपरेव्योमव्योमहूकेपर
 इंद्रीडस, इंद्रीनीकेपरअंतकरनरहतुहें॥ अंतः
 करनपरतीनोगुनअहंकार, अहंकारपरमहत्तत्त्व
 कौलहतुहें॥ महत्तत्त्वपरमूलमायामायापरब्रह्म
 ताहीतेंपरातपरसुंदरकहतुहें॥ १५॥ भूमितोवि
 लीनगंधगंधतोविलीनआप, आपहूविलीनरस
 रसतेंजवातहें॥ तेजरूपरूपवायूवायूहीसपर्स
 लीन, सोसपर्सव्योमशब्दतमहीविलातहें॥ इंद्री
 दसरजमनदेवताविलीनसत्त्व, तीनगूनाअहंमह
 तत्त्वगलिजातुहे॥ महत्तत्त्वप्रकृतिरुप्रकृतिपुरु
 षलीन, सुंदरपुरुषजाईब्रह्ममेंसमातहे॥ १६॥
 आतमाअचलसुद्धएकरसरहेसदा, देहविचहा
 रनिमेदेहहीसौजानीये॥ जेसेसरीमंडलअभ
 गनहीभंगहोई, कलाआईजावेघटबटसोंबधा
 नीये॥ जेसेद्रुमशिरनदीहूकेतटदेखीयत, नदीके
 प्रवाहमाहीचलतेसोमानीये॥ तेसोआतमा
 अनंतदेहसोंप्रकासकरे, सुंदरकहतुयोविचा
 रिभ्रमभानीये॥ १७॥ आतमाशरीरदोऊएकमें

कदेवीयत, जबलग अंतःकरणमें अज्ञान है ॥ जैसे
 अंधेयारीरे नगरमें अंधेरो होई, आपनिको तेज-
 ज्यों को ल्यों ही विदमान है ॥ जद्यपि अंधेरे महीं
 न कोन सूजे कछू, तदपि अंधेरे सों अलेख सो बधा
 न है ॥ सुंदर कहत तो लों एक मेक जानीयत, जो-
 लों न हीं प्रगट प्रकास ज्ञान भान है ॥ १८ ॥ देह जड
 देवल आत्मा चैतन्य देव, याही को समझि करिया
 सों मन लाईये ॥ देवल को बीन सत वार न हीं लागे-
 कछू, देव तो अभंग सदा देवल में पाईये ॥ देव की स-
 गती करि देवल की पूजा होत, भोजन विविध भांति
 भोग हूँ लाईये ॥ देवल ते न्यारो देव देवल में देवी
 यत, सुंदर विराजमान और कहाँ जाईये ॥ १९ ॥
 पीत सीन पाती कोऊ प्रेम से न फूल और चित-
 सो न चंदन सनेह सोन सेहरा ॥ लह दे सोन आसन
 सहज सोन सिंघासन ॥ भाव सीन सेज और सु-
 न सोन गेहरा ॥ सील सोन स्नान नाहीं ध्यान सो-
 न धूप और, ज्ञान सो न दीपक अज्ञान तम के ह-
 रा ॥ मन सीन माला को उसो ह सोन जाप और, आ-
 तमा सो देव नाहीं दैव सोन देहरा ॥ २० ॥ स्वा सो स्वा

सरातिदिनसोहंसोहंहोयजाप, याहीमालावार
 वारदृढकैधरतुहे ॥ देहपरेइंद्रीपरेअंतहकरनपरे
 एकहीअरवंडजापतापकुंहरतुहे ॥ काठकीरुद्राक्ष
 कीरुसूतहकीमालाओर, इनकेफिरायेकछुकार
 जसरतुहे ॥ सुंदरकहततातेंआतमांचेतन्यरू
 प, आपकोभजनसोतोआपहीकरतुहे ॥ धीरनी
 रमिलेदोउएकठेहीहोइरहे, नीरजेसेछांडहंसबी
 रकौंगहतुहें ॥ कंचनमेंओरधातुमिलीकरीबान
 पड्यो, सुद्धकरिकंचनसोनारज्यौंलहतुहे ॥ पा
 यकहूदारमध्यदारहूसोहोइरह्यो, सथिकरिका
 हवहदारकौंदहतुहे ॥ तैसेहीसुंदरमिल्यौआत
 माअनातमाजु, भिन्नभिन्नकरिसोतोसारव्यही
 कहतुहे ॥ २२ ॥ अन्नमयकोससोतोपिंडहेप्रगट
 पह, प्रानमयकोसपंचवायूहीबषानीये ॥ मनो
 मयकोसपंचकर्मइंद्रीहेप्रसिद्ध, पंचज्ञानइंद्रीय-
 वेज्ञानकोसजानीये ॥ जाग्रतस्वपनविषेकहीये
 वतारकोस, सुषोयतीमाहीकोसआनंदमेंभा
 रीये ॥ पंचकोसआतमाकौंजीवनामकहीयत,
 सुंदरशंकरभांससांध्यहवषानीये ॥ २३ ॥ जा

यतश्चवस्थाजेसेसदनमेबैठीयत, तहांकछूहोई
 ताहीभलीभांतिदेवीये ॥ स्वपनअवस्थाजेसेदेह
 रिमेबैठेजाय, रहेजोईउहांवाकीवस्तुसबलेवीये
 ॥ सुषोपतिभोहरेमेबैठेतैनसूऊपरे, महान्ध
 घोरतहांकछूईनपेवीये ॥ व्योमअनुसूतघरदे
 हरेभोहरेमांहीसुंदरसावीस्वरूपतुरीयाविसेषी
 ये ॥ २४ ॥ जाग्रतकेविषेजेवनेननीमेंदेवीयत,
 विविधव्योवारसबइंद्रनिगहतुहे ॥ स्वपनेहूमांही
 पुनिवेसेहीव्योहारहोत, नेननीतेंआईकरिकंठमें
 रहतुहे ॥ सुषोपतिहृदेमेविलीनहोइजातसब
 जाग्रतस्वपनकीतोसूधिनलहतुहे ॥ तीनहूअ
 वस्थाकोईसाक्षीजबजानेआप, तुरीयास्वरूप
 यहसुंदरकहतुहे ॥ २५ ॥ ॥ छंदइंदय ॥ ॥
 भोमीतेसूक्ष्मआपकोजानहू, आपतेंसूक्ष्म
 तेजकोअंगा ॥ तेजतेंसूक्ष्मचायूवहेनित, वायू
 तेंसूक्ष्मव्योमउत्तंगा ॥ व्योमतेंसूक्ष्महेगुनती
 नहू, तिहूतेअहंमहत्तत्त्वप्रसंगा ॥ ताहूतेंसूक्ष्म
 मूलप्रकृतिजु, मूलतेंसुंदरब्रह्मअभंगा ॥ २६ ॥
 ब्रह्मतेनिरंतरआपकअग्नि, अरूपअषंडितहे

सबमाहीं॥ ईश्वरपावकराशिप्रचंडजु, संगउपा
 धिलियेवरताही॥ जीवअनंतमसालचिराकस
 दीपपतंगअनेकदिषाही॥ सुंदरद्वैतउपाधिमिटे
 जब, ईश्वरजीवजुदेकछुनाहीं॥ २७॥ ज्यौंनरपा
 वकलोहतपावत, पावकलोहमिलेसुदिषांही॥
 चोदअनेकपरेधनकीसिर, लोहवधेकछुपावक
 नाहीं॥ पावकलीनभयोअपनेघर, सीतउलोह
 भयोतवताही॥ त्योंयहआतमदेहनिरंतर, सुं
 दरभिन्नरहेमिलिमाहीं॥ २८॥ आतमचैतनसु
 द्निरंतर, भिन्नरहेकहुंलिसनहोई॥ हेजडचैत
 नअंतःकरनजु, सुद्धअसुद्धलीयेगुनदोई॥ दे
 हअसुद्धमलीनमहांजड, हालनचालसकेपुन
 होई॥ सुंदरतीनविभागकीयेविन, भूलिपरेभ्रम
 तेंसबकोई॥ २९॥ ॥ छंदसवैयामात्रा३१॥
 ॥ ब्रह्मअस्त्यअस्त्यपीयावक, व्यापकजुगलन
 दीसतरंग॥ देहदारतेप्रगटदेधीयत, अंतःकरन
 अग्निद्वयअंग॥ तेजप्रकासकल्पनातोंलंगि,
 ज्योंलगरहेउपाधिप्रसंग॥ जहांकेतहांलीनपुन-
 होई, सुंदरहोइसदाअभंग॥ ३०॥ देहसरावतल

पुनिमारुत, बालीअंतः करनबिचारा॥ प्रगटजोति
 यहचैतनदीसे, जातेभयेसकलउजियारा॥ व्याप
 कअगनिमथनकरिजाए, दीपकबहुतभांतिवि-
 स्तार॥ सुंदरअद्भुतरचनातेरी, तूहीएकअनेक
 प्रकार॥ ३१॥ तिलमेंतेलदूधमेघतहे, दारमाहीं
 पावकपहिचान॥ पुहपमांहिजुप्रगटवासना, इ
 षमांहीरसकहतवषान॥ पोसतमाहींअफीम
 निरंतर, वनस्पतीमेंसहतप्रमान॥ सुंदरभिन्न
 मिल्योपुनिदीसत, देहमाहींयोंआतमजोन॥
 ३२॥ ॥छंदसवैयामात्रा३२॥ ॥जायतसु
 मसूषोपतितीनो, अंतः करनअवस्थापावे॥ प्रा
 णचलेजाग्रतअरुसुम, सूषोपतीमेंकछुवेनर
 हावे॥ प्रानगएतेरहेनकोऊ, सकलदेषतांआट
 विलावे॥ सुंदरआतमनित्यनिरंतर, सोतोकित
 हूंजायनआवे॥ ३३॥ ॥सवैयाछंदमात्रा
 ३१॥ ॥पंद्रहतत्यस्थूलकुंभकमें, सूक्ष्मलिं
 गभर्योज्यौतोय॥ यहांजीवउहांआभाजानोउ
 तसे, ब्रह्मइंद्रप्रतिबिंबजुदोय॥ घटफूटेजलग
 यांविलहेवै, अंतः करनकहेनहिकोय, सबप्रति

विषमिलेससिहीमहि, सुंदरजीवब्रह्ममयहोय॥
 ३४॥ ॥ छंदमनहर॥ ॥ जैसे व्योम कुंभकेवा
 हेरअरुभीतरहू, कोउनरकुंभकुं हजारकोसलेग
 यो॥ ज्योंही व्योम इहांतूं ही उहां पूनीहे अषंड, इ
 हानविछोहनतो उहां मिलकै भयों, कुंभतो नयो
 पुराणो होई के विना सिजाई, व्योम तो नहे पुरानो
 नतो कछू नयो॥ तेसे ही सुंदर देह आवेरहे ना
 सहोई, आतमा अचल अविनासी हे अनामयो
 ॥ ३५॥ देहके संजोग ही तैं सीतलगे धामलगे, देह
 के संजोग ही तैं कृधातृषा पौनकों॥ देहके संजोग
 ही तैं कटुक मधुर स्वाद॥ देहके संजोग कहै पाटो
 पारो लौनकों॥ देहके संजोग कहै सुषते अनेक
 बात, देहके संजोग हि पकरि रहे मौनकों॥ सुंदर
 देहके संजोग दुषमाने सुषमाने, देहको संजोग
 यो दुषसपकौनको॥ ३६॥ आपुकी प्रसंसा सुनि
 आपुहि सुसाल होई, आपुहि कीनिंदारुनि आ
 पसुर जाई है॥ आपुहिको सुषमानी आपु सुष
 पावत हैं, आपुहिको दुषमानी आपु दुष साई हैं॥
 आपुहि कीरक्षा करे आपुहि की च ॥

हिहत्पारोहोईगंगाजाइन्हाईहै॥ सुंदरकहतएसे
देहहिकोआपुमानी, निजरूपभूलिकेकरतहा
ईहाईहै॥ ३७॥ ॥ इतिसांप्यजान

कोअंगसमासः॥ २४॥

॥ अथअपने

भावकोअंगप्रारंभः॥

॥ छंदइंदव॥ - ॥

एकहीआपनोभावजहांतहां, बुद्धिकेजोगतेवि
भ्रमभासे॥ जोयहभूरतोभूरवहीपुनि, याकेषा
सेतेउहांपुनिबासे॥ जोयहसाधुतोसाधुउहांपु
नि, याकेहसेतेउहांपुनिहांसे॥ जसोईआपकरे
सुषसुंदर, तेसोईदर्पनमाहिप्रकासे॥ १॥ ॥

छंदमनहर॥ ॥ जैसेस्नानकांचकेसधनमथ

देविअोर, भूँकिभूँकिमरतकरतअभिमानजू॥

जैसेगजफटिकशिलासोंअरितोरेदंत, जैसेसिं

घकूपमांहीउऊकभुलानजू॥ जैसेकैउफेरिषा

तफिरतसुंदरवेजग, तेसेहीसुंदरसबतेरोईअ

ज्ञानजू॥ आपनोईभ्रमसोतोदुसरोदिषाइदत

आपकेविचारकोऊदूसरोनआनजू॥ २॥ नीच

ऊचभलोबुरोसज्जनदुर्जनपुनिपांडितमूरखसबु

मित्ररंकरावहे॥ मानअपमानपुन्यपापसुषदु

वी अन्यदेवकोउ भावकोरूपासेताही, कहेमे-
 तोपुत्रधनइनहीतें पायोहे ॥ जेसेस्वानहाडको
 चचोरकरिमानेमौद, आपहीकोमुषफोरिलो-
 हचाटपायोहें ॥ तेसहीसुंदरयहआपुहीचैत-
 न्यआही, अपनेअज्ञानकरिओरसोबधायोहे
 ॥ ६ ॥ ॥ छट् इंदव ॥ ॥ नीचेतेंनीचेरु
 ऊंचेतेंऊपर, आगेतेंआगेरुपीछेतेंपीछो ॥ दूरतें
 दूरनजीकतेंनैरेहि, आडेतेंआडोहितीछेतेंतीछो
 ॥ बाहिरभीतरभीतरबाहिर, ज्योंकोउजानत्यों
 करईछो ॥ जैसोहीअपनोभावहेसुंदर, तैसोही
 हेदूगछोलिकेदीछो ॥ ७ ॥ आपनेभावतेसूर-
 सोदीसत, आपनेभावतेंचंदसोभासे ॥ आपने
 भावसेतारेअनंतजु, आपनेभावतेविद्युततासे ॥
 आपनेभावतेंनूरहेतेजहे, आपनेभावतेंजोति-
 प्रकासे ॥ तेसोहीताहीदिषावतसुंदर, जैसोही
 होतहेजाहिकोआसे ॥ ८ ॥ आपनेभावतेसेव-
 कसाहिव, आपनेभावसेबेकोरूध्यावे ॥ आप-
 नेभावतेंअन्यउपासत, आपनेभावतेंभक्तहु-
 गावे ॥ आपनेभावतेंदुष्टसंघारत, आपनेभावतें

बाहिरावे ॥ जे सोही आपनो भावहे सुंदर ताहो
 कोते सोही होइ दिषावे ॥ ९ ॥ आपने भावते दूर बत
 वत, आपनो भावन जी कवरखान्यो ॥ आपने भावते दूध-
 पिभावत आपने भावते विद्वल जान्यो ॥ आपने भाव
 ते चार भुजा पुनि आपने भावते सिंघसों मान्यो ॥ सुं-
 दर आपने भावको कारन आपही पूरन ब्रह्म पिछा
 न्यो ॥ १० ॥ आपने भावते होइ उदास जु आपने भा-
 वते प्रेम सो रोवे ॥ आपने भाव मिल्यो पुनि जान
 त, आपने भावते अंतर जोवे ॥ आपने भाव रहे-
 नित जाग्रत आपने भाव समाधि में सोवे ॥ सुंद-
 र जे सोही भावहे आपनो, ते सोई आपत हांत हैं
 होवे ॥ ११ ॥ आपने भावते भूल परखो भ्रम, देह स्व-
 रूप भयो अभिमानि ॥ आपने भावते चंचल ता अ-
 ति आपने भावते बुद्धि धिरानी ॥ आपने भावते आ-
 प विसारत आपने भावते आतम ज्ञानी ॥ सुंदर-
 जे सोई भावहे आपनो, ते सोई होइ गयो यह प्रानी ॥
 ॥ १२ ॥

॥ इति श्री आपने भावको अंग

समाप्तः ॥ २५ ॥

॥ ६५ ॥

॥

॥

॥ अथ स्वस्वरूप विसमरणको अंग प्रारंभः ॥

(११६)

सुंदरविलास-

अं२६

॥ छंदइंदव ॥ ॥ जाघरकीउनहारहेजे-
सीही-ताघटचैतनतेसोईदीसे ॥ हाथीकीदेह
मेंहाथीसोमानत, चीटीकीदेहमेंचीटीकरीसे
॥ सिंघकीदेहमेंसिंघसोंमानत, किसीकीदेह
मेंमानतकीसे ॥ जैसीउपाधीभइजहासुंदर
तेसोईहोइरत्यो नषसीषे ॥ १ ॥ जैसेहीपावक
काठकेजोगते काठसोहोयरत्योइकठार ॥ दी
रघकाठमेंदीरघलागत, चोरसकाठमेंलागत-
चोरा ॥ आपनोरूपप्रकासकरेजव, जारकरैत
बओरकोओरा ॥ तेसेहीसुंदरचैतन्यआपसु
आपकोंजानतनाहिनवोरा ॥ २ ॥ ॥ छंद
मनहर ॥ ॥ प्रश्न ॥ ॥ अजरअमर
अविगतअविनासीअज, कहतसकलजनमु-
तिअवगाहेतें ॥ निरगुननिरमलअतिसुधनि
रबंधनित, ऐसेहीकहतओरग्रंथनिकेयाहेते
॥ व्यापकअखंडएकरसपरिपूरनहे, सुंदरस
कलरमिरत्योअह्यताहेतें ॥ सहजसदाउद्योत-
याहीतेंअचंभाहोत, आपुहीतोआपभुल-
योसोतोकाहेतें ॥ ३ ॥ ॥ उत्तर ॥

जैसेमीनमांसकोंनिगलिजातलोभलगि, लोह
 कोकंटकनहिजानतउमाहेतें ॥ जैसेकपिगाग-
 रमेमूढिबाधिरापमठ, छांडनहीदेतसोतोसा
 दहीकेवाहेतें ॥ जैसेककनारीधरचूचमाशिल
 टकत, सुंदरसहतदुषदेतयाहीलाहेतें ॥ देह
 कोसंजोगपायइदानीकेवसपर्यौ, आपहीके
 आपभूलिगयोसुखचाहेतें ॥ ४ ॥ ॥ छंद
 इदव ॥ ॥ ज्योंकोईमद्यपियेअतिछा-
 कत नाहीकछसुधिहेभ्रमऐसो ॥ ज्योंकोई
 षाडरहेठगमूरिहि, जाननहीकछकारनतैसो
 ॥ ज्योंकोईबालकसंकउपावतकंपिउठेअरु-
 आनतभैसो ॥ तैसेहीसुंदरआपसोंभूलिसु-
 देषहुचैतनमानेहेकैसो ॥ ५ ॥ ज्योंकोईकूप-
 मेंजाकिअलापत, ऐसीहीभांतिमूकूपअलापे
 ॥ ज्योंजलहालतहेलगिपीन, कहेभ्रमतेंप्रति
 बिंबहीकांये ॥ देहकेप्राणकेजेमनकेकत मान
 तहेसबमोहिकोंव्यापे ॥ सुंदरपेचपर्योअति-
 सेकरि, भूलिगयोभ्रमतेब्रह्मआपे ॥ ६ ॥ ज्योंहि
 नकोउकछाडिमहातम, शूद्रभयोकरिआपकों

मान्यो ॥ ज्यों को उभूषति सौं वत से जस रंक भयौ-
 मुपने महि जान्यो ॥ ज्यों को उरूप की रासि अत्यंत कु-
 रूप कहे भ्रम भै चक आन्यो ॥ ते से ही सुंदर देह सौं
 होय के, या ब्रह्म आप ही आप भुलान्यो ॥ ७ ॥
 एक ही व्यापक वस्तु निरंतर विभू नही यह ब्रह्म
 विलासे ॥ ज्यों नट मंत्र नि सों द्रष्ट बाधत, हे कछु-
 ओरहि ओरहि भासे ॥ ज्यों रजनी महि बूझ परे नहि
 ज्यों लगसू रजनाहि प्रकासे ॥ त्यों लग आप-
 हि आपन जानत सुंदर देखै ल्यो सुंदर दासे ॥ ८ ॥
 ॥ छंद मनहर ॥ ॥ इंद्रि न को प्रेरी पुनि इंद्र नि-
 के पीछे पत्यो, आपनी अविद्या करि आपन नग-
 त्यो हे ॥ जोई जोई देह को संकट आई परे कछु-
 सोई सोई माने आपु या ते दुरवस ल्यो हे ॥ भ्रम-
 त भ्रमत कहूं भ्रम को न आवि अंत, विरकाल वी-
 ल्यो परे वरूप को न ल्यो हे ॥ सुंदर कहत देषा-
 भ्रम की प्रबल ताई, भूतनि में भूत मिलि भूत हो-
 यर ल्यो हे ॥ १॥ जैसे सुकनलिकान छांडि देत पगनि
 तें, जाने काहु ओर मोही बांधिल टकायो हे गाजे से
 कं पि पुंजनि को ढेर करि माने आग, आग घरी तापें

कछूसीतनगमायोहे ॥ जेसेकोऊ कारजकोजा-
 तहुतो पूरवकों, भ्रमतेउलटिफिरीपछिमकोआ-
 योहे ॥ तेसेही सुंदर सबआपहीकों भ्रमभयोआ-
 पहीको भूलकरिआपहीबंधायोहे ॥ १०॥ जेसेको
 उकामनिकेहियेपरचूषैबाल, स्वपनेमेंकहैमेरोपु-
 त्रकहगयोहे ॥ जैसेकाहुपुरुषकेकठहुतीमनमोही
 दूंदतफिरतकछूऐसोभ्रमभयोहैं ॥ जेसेकोउबा-
 युकरिबावरोबकतडोल, ओरहीकीओरकहेस-
 धिभूलिगयोहे ॥ तेसेही सुंदर निजरूपकोंबिछा-
 रिदेत, ऐसोभ्रमआपुहीकोआपकरिलह्योहे ॥ ११
 दिनदिनछिनछिनहोइजातभिन्नभिन्न, देहकेसं-
 जोगपराधीनसोरहतुहे ॥ सीतलगेघामलगेभू-
 षलगेप्यासलगे, सोकमोहमानअतिषेदकोंलहतु-
 हे ॥ अंधभयोपंगुभयोमूकहूबधिरभयो, ऐसे-
 मानीमानीभ्रमनदीमेंवहतुहे ॥ सुंदरअधिकमो-
 हियाहीतेअचभाअहि, भूलिकेस्वरूपकोअना-
 थसोकहतुहे ॥ १२॥ जैसेकोईकहेमेतोस्वपनेमें
 ऊठभयो, जागिकरिदेषेउहीमनुषस्वरूपहे ॥ जे-
 सेकोईपजापुनिसोचनभिषारीहोइ, आषउध

रे तो महाभूपनिको भूपहे ॥ जैसे कोउ भ्रम हूतें क
 हे मेरो सिर कहां ॥ भ्रम के गये तेने सिर तद रूप हे
 ॥ ते से ही सुंदर यह भ्रम करि भूल्यो आप ॥ भ्रम के
 गए ते यह आतमा अनूप हे ॥ १३ ॥ जैसे कोई पोस
 त की पाग पड़ी भौमो पर हाय लेके कहै एक पाग में
 तो पाई हे ॥ जैसे सेष सली मनोरथनिको की घोघर
 कहै मेरो घर गयोगा गरी गिराई हे ॥ जैसे काहु भूत
 लग्यो वक्त है आक वाक सुद्धि सब दूर भई औरै
 मति आइ हे ॥ ते से ही सुंदर यह भ्रम करि भूल्यो
 आप ॥ भ्रम के गए ते यह आतमा सदाई हे ॥ १४ ॥
 आप ही चेतन यह इंद्रि चेतन कर ॥ आप ही मग-
 न होइ अनंद वदायो हे ॥ जैसे नर सीत काल सोचत
 निहालि ओढै ॥ आप ही तपत होइ आप सुषपायो हे
 ॥ जैसे बाल लकरि को घोरा करि डाक चढै ॥ आप
 असवार होइ आप ही कुदायो हे ॥ ते से ही सुंदर यह
 हजड को संजोग पाय ॥ आप सुषमानि मानि आप
 ही भुलायो हे ॥ १५ ॥ कहूं भूल्यो कामरत कहूं भूल्यो
 साधी जत ॥ कहूं भूल्यो ग्रह मध्य कहूं बन वासी
 हे ॥ कहूं भूल्यो नीच मान कहूं भूल्यो उंच मानि ॥

कहं भूत्यो मोह बांधिक हंतो उदासी हे ॥ कहं भूत्यो
 मोन धरि कहं बकवाद करि कहं भूत्यो मके जाय कहं
 भूत्यो काशी हे ॥ कहत सुंदर अहंकार हते भूत्यो आ
 प, एक आवेरो न अरु दूजे आवे हां सी हे ॥ १६ ॥ में ब-
 हुत दुष पायो में बहुत सुष पायो, में अनंत पुन्य की
 ये मेरे अति पाप हे ॥ मै कुलीन विद्या वत पंडित प्रवी
 न महा, मै तो मूठ अकुलीन मेरे नीच वाप हे ॥ मै हो-
 राजा मेरी आणा फिरे चहुं चक्र मांहीं ॥ मै हों रंक द्रव्य ही
 न मोही तो संताप हे ॥ सुंदर कहत अहंकार ही ते-
 जीव भयो, अहंकार गये यह एक ब्रह्म आप हे ॥ १७
 ॥ देह ई संपुष्ट लगे देह ई दूबरी लगे, देह ई को सो
 त लगे देह ही को तावरो ॥ देह ई को तीर लगे देह ई को
 तो प लगे, देह को कपान लगे देह ही को धावरो ॥ देह ई
 स्वरूप लगे देह ई कुरूप लगे, देह ई जो वन लगे देह
 चूड़ डारो ॥ देह ई सो बांधी हेत आप विषे मानो ले
 त, सुंदर कहते ऐ सो बुधि वावरो ॥ १८ ॥ ॥ छंद
 इदव ॥ ॥ आप ही चेतन ब्रह्म अपंडित, सो भ्र-
 म ते कछु अभ्र परे ॥ दंत ताहि फिरे जित ही ति-
 त, साधत जोग वना वत भैषे ॥ और उकष्ट करे अ-

तिसैंकर, प्रत्यक्ष आतम तत्त्व न पेधें ॥ सुंदर भूल
 गणिज रूपहि, हैं कर के कन दर्प न देधें ॥ १९ ॥ सूत्र
 लगे महि मे लि भयो द्विज, ब्राह्म न होय के ब्रह्म न-
 जान्यो ॥ क्षत्रिय होय के क्षत्रधर्यो शिर, हय गज प-
 यदल सों मन मान्यो ॥ वैश्य भयो वपु की वय देष-
 त गृह प्रपंच वनी जहि न्यो ॥ सूद्र भयो मिलि सु-
 दसरी रहि, सुंदर आपन हीं पं हि चान्यो ॥ २० ॥ ज्यौ
 रविकौर विदुं दत हे कहूं, तस लगे तन शीत गमा-
 ऊं ॥ ज्यौंस सिकौंस सिचाहत हे पुनि, सीतल कै
 करित सबुजाऊं ॥ ज्यौंस निपात भए न रदेरत, है
 घर में आपुने घर जाऊं ॥ त्यों यह सुंदर भूलि स्व-
 रूपहि, ब्रह्म कहै सब ब्रह्महि पाऊं ॥ २१ ॥ आ-
 पुन देषत हे अपनो मुष, दर्प न काट लगे अति थू-
 ला ॥ ज्यौं द्रग देषत ते रहि जात भ, यौं जब ही पुतरी
 परि फूला ॥ लाय अज्ञान रथो अति अंतर, जा-
 निस के नहि आतम मूला ॥ सुंदर यों उपज्यो मन
 केवल, शान विना निजरूपहि भूला ॥ २२ ॥ दीन
 हुओ विललात फिरे नित, इति न केव सखिल कछो
 ले ॥ सिंघन ही अपनो बल जानत, जंबुक ज्यों-

जितहीतितडोले ॥ चैतनताविसराइनिरंतरले
 भ्रमताजडगांठनषोले ॥ सुंदरभूलगयोनिजरू
 पहि, देहस्वरूपभयोमुषवोले ॥ २३ ॥ मैसुषिया-
 सुषसेजसुषासन, हयगजभोमिमहारजधानी ॥
 होदुषियादिनरैनमरोंदुष, मोहिविपत्तिपरीनहिछा
 नी ॥ हौंअतिउत्तमजातिबडोकुल, हौंअतिनीच
 कियाकुलहानी ॥ सुंदरचैतनतानसंभारत देहस्व
 रूपभयोअभिमानी ॥ २४ ॥ गर्भविषेउतपत्तिभ-
 ईजबजन्मलियोसिक्कसुहृन्जानी ॥ बालकुवार
 किसोरजुवादिक, चड्ढभयोअतिबुद्धिनसानी ॥ जै
 सेहीभांतिभईचपुकीगति, तेसोईहोइरत्नोयह
 प्रानी ॥ सुंदरचैतनतानसंभारत, देहस्वरूपभयो
 अभिमानी ॥ २५ ॥ ज्योंकोइत्यागकरेअपनोधर
 वाहिरजायकेभेषबनावै ॥ मुंडमंडायकेकानफरा
 य, चभुतीलगायजटाउवढावे ॥ जैसोईस्वांगक
 रेचपुकोपुनि तैसोहीमानतत्युंहोयजावे ॥ त्योय-
 हसुंदरआपनजानत, भूलिस्वरूपहिओरकहावे ॥ २६
 ॥ ॥ इतिस्वरूपविस्मरणकोअंगसमाप्तः ॥ ॥
 अथविचारकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदमनह

र॥ ॥ प्रथमश्रवनकरिचित्तएकाग्रहिधरिः गु-
 रुसंतं अगमकहेसउरधारिये ॥ दुतियमननवार-
 वारहीविचारिदेपे जोइकबूखनताहिफेरकेसंभारी-
 ये ॥ तृतीयप्रकारनिदिध्यासहिजुनिकेकरिः नि-
 हसंगविचारेतेआपुनपोतारिये ॥ तेसेहीसाक्षात्
 याहीसाधनकरतहोइ सुंदरकहत हैतबुधिको-
 निचारिये ॥ १॥ देखेतोविचारकरिस्ननेतोविचार-
 करि बोलेतोविचारकरिकरेतोविचारहे ॥ षाडतो-
 विचारकरिपीयतोविचारकरि सोवेतोविचारकरि
 जागतोनदारहे ॥ बेठेतोविचारकरिउठेतोविचारक-
 रिः चलेतोविचारकरिसोइमंतसारहे ॥ देइतोवि-
 चारकरिलेइतोविचारकरिसुंदरविचारकरयाही
 निरधारहे ॥ २॥ एकहीविचारकरिस्वपदुषसम
 जाने, एकहीविचारकरिमलसबधोइये ॥ एक
 हीविचारकरिसंसारसमुद्रतरे, एकहीविचारकरि
 पारंगतिहोइये ॥ एकहीविचारकरिबुधिनानाभाव
 तजे, एकहीविचारकरिदूसरोनकोइहे ॥ एकही
 विचारकरिसुंदरसंदेहमिटे, एकहीविचारकरि
 एकब्रह्मजोइहे ॥ ३॥ ॥ छंदइदव ॥ ॥

रूपकोनासभयो कच्छुदेषिये, रूपरूपहिमां हि
 समावे ॥ रूपके मध्यरूपरूपषण्डित, सो तो कहं क
 छुं जो इन आवे ॥ बीच अज्ञान भयो नवतत्वको, वेद
 पुरान सबे को इगावे ॥ सोइ विचार करे जब सुंदर,
 सोधत ताहि कहन हि पावे ॥ ४ ॥ भूमि सक्तो नहि गंध
 को छांढत, नीर सक्तो रस ते नहि न्यारो ॥ तेज सक्तो
 मिलि रूप रत्यों पुनि, वायु सपर्स सदा सपियारो ॥
 व्योम रुशब्द जु देन हि होवत ऐसे ही अंतह करन वि
 चारो ॥ एनवत त्वमिले इन तत्वनि, सुंदर भिन्न स्व
 रूप हमारा ॥ ५ ॥ क्षीन रूप पुष्ट शरीर को धर्म जु सी
 तहु उण जरा मृत ठाने ॥ भूष तृषा गुन प्राण कौ व्याप
 त, सो करु मोह उभे मन आने ॥ बुद्धि विचार करे नि
 तवीसर, चित्त चिते स अहं अभिमाने ॥ सर्व को
 प्रेरक सर्व को साषि जु, सुंदर आप को न्यारो हि जा
 ने ॥ ६ ॥ एक हि कूप ते नीर हि सींचत, इष अफी
 म हि अंब अनारा ॥ होत उहे जल स्वाद अने कनि सि
 ष्ट कटू कषटा अरुषारा ॥ त्यों ही उपाधिसंजोग ते आ
 तम, दीसत आहि मिल्यो सविकारा ॥ काठ लि
 ये सविबेक विचार सो सुंदर सद्ध स्व रूप हे न्यारो

॥७॥ रूपपराकोनजानेकछु, ऊठतहेजैहिमुल
 तेंछांनी ॥ नाभिविषेमिलिसमकियेस्वर पुरुषसं
 जोगपश्यंतिबरवानी ॥ नादसंजोगत्तदे पुनिकं
 ठजु, मध्यमयाहीबिचारतेंजानी ॥ अक्षरभे-
 दामिलेमुषहारसं, बोलतसुंदरबैरगिरवानी ॥८॥
 ज्योंकोईरोगभयो नरकेघट, बैदकहेयहवायुवि-
 कारा ॥ कोउकहेग्रहआइलगेतातें, पुन्यकिये
 कछुहोइउवारा ॥ कोइकहेयहचूकपरीकछु, दे-
 वनिदोसकियोनिरधारा ॥ तेसेहोसुंदरतंत्रनि-
 केमत, भिन्नहीभिन्नकहेजुविचारा ॥९॥ जेवि-
 षयातमपूररहेतिन, कोंरजनीमहिवादरछायो
 ॥ कोउमुमुक्षुकियेगुरुदेवतो, निर्भयद्युक्तजुशब्द-
 सुनायो ॥ वादरदूरभयोउनकेपुनि, तारनिसों
 रजुसर्पदिषायो ॥ सुंदरसूरप्रकासतहीभ्रम, दू-
 रभयोरजुकोरजुपापो ॥१०॥ कर्मसुभासुभकी
 रजनीपुनि, अर्धतमोमयअर्धउजारी ॥ भक्तिसो-
 लोयहहैअरुनोदय, अंतनिसादिनसंधिविचा-
 री ॥ ज्ञानसोभानुउदेनिसवासर, वेदपुरानकहे-
 जुपुकारी ॥ सुंदरतीनप्रभाववषानत, योनिहवे

समजैविधिसारी ॥ ११ ॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥
 देहहीसोंआपमानिदेहहीसोंहोइरत्यो, जडताअ
 ज्ञानतमसूद्रसोईजानिये ॥ इंद्रीनकेव्यापारनिअ-
 त्यंतनिपुनबुद्धि, तमरजदुहुंकरिवैश्यहप्रमानि
 ये ॥ अंतःकरनमांहीअहंकारबुधिजाके, रजोगु
 नवर्धमानक्षत्रीपहिचानिये ॥ सत्वगुनबुद्धिए-
 कआतमाविचारजाके ॥ सुंदरकंहतबहीब्राह्म
 नवषानिये ॥ १२ ॥ आतमाकेविषेदेहआईकरिना
 सहोइ, आतमाअषंडसदा एकईरहतुहे ॥ जैसे
 सापकचुकीकौलीयेरहेकोऊदिन, जीरनउतार
 करिनौतनगहतुहे ॥ जैसेहुमहूकेपत्रफूलफलआ
 ईहोत, तिनकेगयतेद्रुमओरउलहतुहै ॥ जैसेच्योम
 मांहीअभहोइकेविलाइजात, ऐसाहीविचारकरि
 सुंदरकहतुहैं ॥ १३ ॥ परीकीडरीसोंअकलिषतवि-
 चारीयत, लिषतलिषतवहीडरीधसिजातुहे ॥ लेषो
 समज्योहेजबसमुझपरीहेतबजोइकछूसहीभयो
 सोईठहरातुहैं ॥ दारहीसोंदारमधिप्रगटपावक-
 भयो, वहेदारजारीपुनिपावकसमातुहैं ॥ तेसे
 हीसुंदरबुद्धिब्रह्मकोविचारकरि, करतकरतच-

हबुद्धिहुविलातुहे ॥११४॥ आपुकोसमुद्रदेपोआ-
 पुहीसकलमाहिं ॥ आपुहीमेंसकलजगतदेपि
 यतुहे ॥ जेसेव्योमआपकअषडपरिपूरनहे ॥ बादल
 अनेकनानारूपलेपियतुहे ॥ जेसेभोमीघटजलतरंग
 पावकदीप, वायुमेंबधूरासोईविश्वरेषियतुहे ॥ ऐसे
 हीविचारतेविचारतेहूलीनहोइ, सुंदरहीसुंदर-
 हितपेधीयतुहे ॥११५॥ देहकोसंजोगपाइजीवऐसो
 नामभयो ॥ घटकेसंजोगघटाकासही कहायोहे
 ॥ ईश्वरहीसकलविराटमेंविराजमान, मठकेसंजो
 गमटाकासनामपायोहे ॥ महाकासमांहीसब-
 घटमठदेपियत, बाहीरभीतरएकगगनसमायो-
 हे ॥ तेसेहीसुंदरब्रह्मईश्वरअनेकजीव, विविध
 उपाधिजीवग्रंथनिमेंगायोहे ॥११६॥ ॥प्रश्न॥
 देहदुषपावेकिधोंइंद्रीदुषपावेकिधों, प्रानदुषपा
 वेकिधोंलहनाहारकों ॥ मनदुषपावेकिधोंबुधि
 दुषपावेकिधों, चित्तदुषपावेकिधोंदुषअहंकार
 कों ॥ गुणदुषपावेकिधोंआत्रदुषपावेकिधों, प्र-
 कृतिदुषपावेकिधोंपुरुषआधारकोंसुंदरपूछ
 तकछूजानिनपरतताते, कौनदुषपावेगुरुकहायो

विचारकों ॥ १७ ॥ उत्तर ॥ ॥ देहकों तो दुषना-
 हि देह पंचभूतनिकी ॥ इंद्रानकों दुषना हि दुषना ही
 प्रानकों ॥ मनहों दुषना हि बुद्धिहों दुषना ही ॥
 चित्तहों दुषना ही नाही अभिमानकों ॥ गुननिको
 दुषना ही आत्माहों दुषना ही ॥ प्रकृतिको दुषना
 ही दुषन पुमानकों ॥ सुंदर विचारों से शिष्यों क
 हत गुरु, दुष एक देषीयत बीच के अज्ञानकों ॥ १८
 ॥ प्रथमी भाजन अंग कनक कटक पुनि, जलही
 तरंग दो उदेरवी करि मानीये ॥ कारन का स्मरण तो-
 प्रगट ही मूल रूप, ताही ते निजरमा हि देषी करि
 आनीये ॥ पावक पवन व्योम एते न हि देषियत,
 दीपक बधूरा अथ प्रतक्षव धानिये ॥ आतमा अह
 पश्चति सूक्ष्म ते सूक्ष्म हे, सुंदर कारन ताते देह से
 न जानिये ॥ १९ ॥ जैन मत उहै जिन राज को न भूलि
 जाय ॥ दानत पसील सत नां वनां ते तस्थि ॥ मन व
 च काय सुहृद सब सो दया ल रहे, दोष बुद्धि दूर करि
 दया उर धरिये ॥ बोधना मत बजब मन को निरो-
 ध होइ, बोध के विचार सोध आतमा को करिये ॥
 सुंदर कहत ऐसे जीवन ही मुक्त होइ, सुखो मुक्त

तकहेताकोपरिहरिये ॥ २० ॥ देहचोरदेषियेतोदे-
 हपंचभूतनिकोब्रह्मचरुकीटलगदेहइप्रधान
 हे ॥ प्रानवोरदेषियेतोप्रानसबहीकोएक, स्थान-
 पुनित्रषादोउव्यापतसमानहे ॥ मनषोरदेषिये-
 तोमनकोस्वभावएक, संकल्पविकल्पकरेसदा
 इअज्ञानहे ॥ आतमाविचारकीयेआतमाही
 दीसेएक, सुन्दरकहतकोउदूसरोनआनहे ॥ २१ ॥
 ॥ इतिविचारकोअंगसमाप्त ॥ २७ ॥
 ॥ अथब्रह्मनिष्कलंककोअंगप्रारंभः ॥ २८ ॥
 छंदमनहरे ॥ ॥ एककोउदात्तागायबाह्यनको
 देतदान ॥ एककोउदयाहीनमारतनिसंकहे ॥ ए-
 ककोइतपस्वीतपस्यामाहीसाविधान, एकको
 उकामक्रीडाकामनिकोअकहे ॥ एककोउरूपव-
 तअधिकविराजमान, एककोउकोटिकोटचूवत
 करंकहे ॥ आरसीमेंप्रतिबिंबसबहीकोदेषिये-
 त, सुन्दरकहतऐसेब्रह्मनिकलंकहे ॥ २९ ॥ र-
 विकेप्रकासतेंप्रकासहोतनेत्रनिको ॥ सबको
 उमुभासभकर्मकोकरतुहे ॥ कोऊजग्यदानतप
 जपनेमव्रतकोऊ, इंद्रीवसकरिकोउध्यानकोध-

रतुहें ॥ कोऊपरदारापरधनकौंतकतजाइ, कोउ
 हिंसाकरिकरिउदरभरतुहें ॥ सुंदरकहतब्रह्मसा
 क्षीरूपएकरसयाहीमैंउपजिकरिवाहीमेमरतु-
 हैं ॥ २ ॥ जैसेजलजंतुजलहीमैंउतपनहोय, जल
 हीमैंविचरतजलकेअधारहे ॥ जलहीमेक्रीडा
 करिविविधविवहारहोत ॥ कामक्रोधलोभमोह
 जलमेंसंहारहैं ॥ जलकौनलागेकछुजीवनकेरा-
 गदोष, उनहीकेक्रियाकर्मउनहीकीलारहैं ॥ नेते
 हीसुंदरयहब्रह्ममेजगतसब, ब्रह्मकूँनलागेकछु
 जगतविकारहे ॥ ३ ॥ स्वेदजजरायुजअडजउद्वि-
 जपुनि, चारषानतिनकेचोरासीलपजंतुहैं ॥ जलच
 रथलचरत्योमचराभिन्नभिन्न, देहपंचभूतनि-
 कीउपजीवयतुहै ॥ सीतयामपवनगगनमेचल
 तआइ, गगनअलिसजामेमेघहअनंतहे ॥ ते
 सेहीसुंदरयहसृष्टिसबब्रह्ममांहि, ब्रह्मनिकलं
 कसदाजानतमहतहे ॥ ४ ॥ ॥ इतिब्रह्म-
 निः कलंककौअंगसमाप्तः ॥ २८ ॥ ॥
 ॥ अथआत्मअनुभवकोअंगप्रारंभः ॥ ॥
 छंदइदव ॥ ॥ हृदिलमेदिलदारसही, अवि

पाउलटी करिताहि चितैये ॥ आषमें पाक मेवाद मे
 आतस जान मे सुंदर जानि जनैये ॥ नूर में नूर हे ते
 ज में ते ज हे जोति में जोति मिले मिलि जैये ॥ क्यो
 कहिये कहने न बने कछु ॥ ज्यौं कहिये कहते हिल जै
 ये ॥ १ ॥ जो कहै हिस ब्रम वह एक तो सो कहै के
 सो हे आषि दिषैये ॥ जो कहै रूप न रेष दिसे कछु
 तो सबजूठ कि माने इक इये ॥ जो कहै सुंदर ने न नि
 मांज तो ने न हुवे न गये पुन हैये ॥ क्या कहिये कह
 ते न बने कछु ॥ जो कहिये कहते हिल जैये ॥ २ ॥ होत
 विनोद जितो आभि अतर सो सुष आप मे आपहि
 पैये ॥ बाहिर को उमग्यो पुनि आवत कंठ ते सुंदर
 फेर पठैये ॥ स्वाद निवैर निवेस्यो न जातहु मानहु गु
 ड गुंगे नित बैये ॥ क्या कहिये कहते न बने कछु जो
 कहिये कहते हिल जैये ॥ ३ ॥ व्योम को व्योम आनंत
 अषाडित आदिन अंत स मध्य कहा है ॥ को पर
 मान करे परि पूरन दैत अद्वैत कछु न जहां है ॥ कार
 न का रज भेद न ही कछु आप में आप ही आपत
 हां है ॥ सुंदर दी सत सुंदर माहि सं सुंदर ताक
 हि कौन उहां है ॥ ४ ॥ एक के दो इन एक न दो ई उही की

इहीनउहीनइहीहें॥सून्यकेस्थूलनशून्यनस्थूल
 जिहिकितिहीनजिहिनतिहीहे॥मलकीडालनमू
 लनडाल,बहोकीमहीनबहीनमहीहे॥जीवके
 ब्रह्मनजीवनब्रह्मतो,हेकेनहीकछुहेननहीहे
 ॥५॥एककहंतोअनेकसोदीसत,एकअनेकन
 नहीकछुऐसो॥आदिकहंतहांअंतहूआवनआ
 दिनअतनमध्यसोकैसो॥गोप्यकहंतोअगोप्य
 कहांयह,गोप्यअगोप्यनऊभोनवैसो॥जोइनहू
 सोइहेनहिसुंदर,हेतोसहीपरिजेसोकोतैसो॥
 ६॥ ॥छंदमनहर॥ ॥एककोकहेजोकहुं
 एकहीप्रकासतहें॥दोउकोकहेजुकोउदूसरोउद-
 षीये॥अनेककहेजुकोउअनेकअभासेताही,जाके
 जेसोभावतेसोताकोइविसेषीये॥वचनविलास
 कोउकेसेहीवधानेकहो,व्योममाहीचित्रकहोकेसे
 करिलेषीये॥अनुभवकीयेएकदोयनअनेककछु
 सुंदरकहतज्यौहैत्योंहीताहीपेसीये॥७॥बचनई
 वदविधिवचनईशारअपुनि,वचनसमृतिअरुवचन
 पुरानजु॥वचनईओरअथवचनईव्याकरनवचन-
 ईकाव्यछंदनाठकवधानजू॥वचनईसंसकतवच

नईपराकृत, वचनई भाषा सब जगत में ज्ञान जु ॥
 वचन के परे हे सो वचन में आवे न हीं, सुंदर कहत ब-
 ही अनुभो प्रमान जु ॥ ८ ॥ इंदिर हीं जानी सके-
 अल्प ज्ञान इंद्री नो को, प्रान हन जानी सके स्वास-
 आगे जाइ हे ॥ मन हन जानी सके संकल्प विक-
 ल्य करे बुधि हन जानी सके सुन्यो तब ता ही हे ॥ चित्त
 अहंकार पुनि एक हन जानी सके शब्द हन जानी म-
 कै अनुमान पाइ हे ॥ सुंदर कहत ना ही को उन ही
 जानी सके ॥ दीवा कर देषी ये सरे सी नहि लाई हे
 ॥ ९ ॥ ॥ छंद इंदव ॥ ॥ श्रीचन जानत-
 चक्षु न जानत ना ही जु संधत घाने ॥ जानी सप-
 तु चान सके पुनि, जानत ना हिन जी भव घाने ॥
 मंत्र न जानत बुद्धि न जानत चित्त अहंकार क्यों प-
 हि चाने ॥ सुंदर शब्द हन जानी सके नहि, आतम आ-
 य को आपहि जाने ॥ १० ॥ सूर के ते ज ते सूरज दीस
 तन चंद्र के ते ज ते चंद्र उजासे ॥ तारे के ते ज ते तारे उदी-
 सत विजुल ते ज ते विजु प्रकासे ॥ दीप के ते ज ते
 दीप क दीसत हीरे के ते ज ते हीरे ईभासे ॥ ते से ई-
 सुंदर आतम जानहु, आप के ज्ञान ते आप यका

सैं ॥ ११ ॥ कोउ कहै यह सृष्टि स्वभाव ते, कोउ कहै
 यह कर्म ते सृष्टी ॥ कोउ कहै यह काल उपावत,
 कोउ कहै यह ईश्वर तिष्टी ॥ कोउ कहै यह ऐसे हि हो
 वत, क्यों कर मानी ये बात अनिष्टी ॥ सुंदर एक की
 ये अनुभव विन, जानि सके नहि बात यहि सृष्टी ॥
 ॥ १२ ॥ कोउ तो मोक्ष आकास बतावत, कोउ तो मो
 क्ष पताल के माहीं ॥ कोउ तो मोक्ष कहै मथनी पर, को
 उ कहै कहूँ और कहाँ ही ॥ कोउ बतावत मोक्ष शिलात
 र कोउ क मोक्ष मिटे पछाहीं ॥ सुंदर आतम के अ
 नुभौ विन, और कहूँ कोइ मोक्ष इनाही ॥ १३ ॥ मूए ते
 मोक्ष कहै सब पंडित, मूए ते मोक्ष कहै पुनि जैना
 ॥ मूए ते मोक्ष कहै ऋषि तापस, मूए ते मोक्ष कहै सि
 व सैना ॥ मूए त मोक्ष मले छ कहै तेहु, धोषे ही धोषे ब
 षानत बैना ॥ सुंदर आतम को अनुभव सोई जीव
 त मोक्ष सदा सुख बैना ॥ १४ ॥ ॥ छंद मनहर ॥
 ॥ कोउ तो कहत ब्रह्म नाभिके कमल मध्य को
 उ तो कहत ब्रह्म तट में प्रकास है ॥ कोउ तो कहत ब्र
 ह्म नाशिके अग्र भाग, कोउ तो कहत ब्रह्म भृकुटी में
 वास है ॥ कोउ तो कहत ब्रह्म दस मेदुवारि बीच, कोउ

तो कहत ब्रह्मगुफामें निवास हैं ॥ पिंड ते ब्रह्मंड ते
 निरंतर विराजे ब्रह्मा सुंदर अषड्जैसे व्यापक आका
 सहे ॥ १५ ॥ पांजिनग्रत्यो सो तो कहत हैं ऊपर सो पू
 छजिनग्रत्यो तिन लाव सो सनाये हैं ॥ सूदजिनग्र
 ही तिन दगले कीवां ह कहो, दंतजिनग्रत्यो तिन भू
 सरदिषायो हे ॥ कानजिनग्रत्यो तिन सूप सो बना
 यकत्यो, पीरजिनग्रही तिन भीरो रावताये हैं ॥ जे
 सो हे ते सो ही ताही सुंदर सुअस्ती जाने आधरे नेहा
 थि देषी जगरे मचायो हे ॥ १६ ॥ न्यायशास्त्र कहत
 हे प्रगट ईश्वरवाद, मिमांसाई शास्त्र मांही कर्म
 वादकत्यो हे ॥ विशेषिकशास्त्र पुनिकालवादी
 हे प्रसिद्ध पातांजलिशास्त्र मांही जोगवाद ल
 त्यो हे ॥ सारव्यशास्त्र मांही पुनि प्रकृतिपुरुषवा
 द, वेदांतकशास्त्र तीन ब्रह्मवादकत्यो हे ॥ सुंद
 र कहत षट्शास्त्र मांही भयो वाद जाके अनुभ
 वज्ञानवाद में नवत्यो हैं ॥ १७ ॥ प्रज्ञान आनंद ब्र
 ह्म ऐ सो अग्वेद कहें, अहं ब्रह्म अस्मि इति यजुर्वेद
 यो कहें ॥ तत्वमसि इति सामवेद यो वषानत हे ॥
 अयं आत्मा ब्रह्म कहिय अथर्वण्यो लहे ॥ एक ए-

कवचनमेतीनपदहेप्रसिद्ध, तीनकोविचारक
 रीअर्थतत्त्वकोगहे ॥ चारवेदभिन्नभिन्नसबकोसि
 द्धान्तएकसुंदरसमझिकरिचुपचापहोरहे ॥ १८ ॥
 इद्वितकेभागजबचाहेतबआयरहे ॥ नाशवतता
 तेतुछानंदयोस्तनायेहे ॥ देवलोकइंद्रलोकविधि
 लोकशिवलोक, वैकुण्ठकेरुषलोगाणितानंदगा
 योहे ॥ अक्षयअषडएकरसपरिपूरनहे, ताही
 तेपूर्णनंदअनुभौतेपायोहे ॥ याहीकेअंतरभू
 तआनंदजहांलौंऔर, सुंदरसमुद्रमाहींसर्षज
 लआयोहे ॥ १९ ॥ एकतोमायाविलासजगतप्रपं
 चयह, चारबानिभेदपायहैतभासरत्योहे ॥ दूस
 रोविषेविलासइंद्रानिकेविषेपंचसब्दसपरसह
 परसगंधगत्योहे ॥ तीसरोचाचाविलाससोतोस
 बवेदमाहि, बरिंकेजहांलगिवचनतेकत्योहे ॥
 चौथोब्रह्मकोविलासतिहुंकोअभावजहांसुंदर
 कहतवहअनुभौतेलत्योहे ॥ २० ॥ जीवतहीदेव
 लोकजीवतहीइंद्रलोकजीवतहीजनतपसत्य
 लोकआयाहै ॥ जीवतहीविधिलोकजीवतहीशि
 वलोकजीवतवैकुण्ठलोकज्यौंअकुंठगायोहै ॥

जीवतहीमोक्षशिलाजीवतहीभिस्तमाहीं, जीवत
हीनिकरपरमपदपायेहैं॥ आतमाकौंअनुभवजि
नकौंजीवतभयो, सुंदरकहततिनसंशयमिटायेहे
॥ २१ ॥ क्षितिभ्रमजलभ्रमपावकपवनभ्रम, व्यो
मभ्रमतिनकोशरीरभ्रममानीये॥ इंद्रीडसतेउ-
भ्रमेअंतहकरनभ्रमतिनहीकोदेवतासोंभ्रम
तेवषानीये॥ सतरजतमभ्रमपुनिअहकारभ्रम-
महत्तत्त्वप्रकृतिपुरुषभ्रममानीयें॥ जोईकछुकहि
येसूसुंदरसकलभ्रम, अनुभवकियेएकआतमा
हीजानिये॥ २२॥ भोमीहूविलीनहोईआपहू
विलीनहोई, नेजहूविलीनहोईवायुजोवहतुहे॥
व्योमहूविलीनहोईत्रिगुनविलीनहोई, शब्दहू-
विलीनहोईअहजोकहतुहें॥ महत्तत्त्वलीनहोईप्र-
कृतिविलीनहोई, पुरुषविलीनहोईदेहजोगहतु
हें॥ सुंदरसकललोककहियेसलीनहोई, आत
माकेंअनुभवआतमारहतुहे॥ २३॥ मायाकीअ-
पेक्षाब्रह्मरात्रिकीअपेक्षादिन-जडकीअपेक्षा क-
रीचैतनवषानीये॥ अज्ञानअपेक्षाज्ञानबंधकी-
अपेक्षाभोक्ष, दैतकीअपेक्षासोतोअद्वैतप्रमा

नीये ॥ दुषकी अपेक्षा सुषपापकी अपेक्षा पुनि
 मूढकी अपेक्षा ताही सत्य करि मानीये ॥ सुंदर
 रसकलयह वचन विलास भ्रम, वचन रहित अब-
 चन सोई जानीये ॥ २४ ॥ आतमा कहत गुरु सद्ध-
 निर्बधनित, सत्य करि माने सो तो शब्द हू प्रमान हे ॥
 जैसे व्योम व्यापक अषड् परि पूरन हे ॥ व्योम उपमा
 ते उपमान सो प्रमान हे ॥ जाकी सता पाय सब ई-
 द्रिय चैतन्य होइ ॥ याही उपमा ते उपमेय उपमान हे
 ॥ अनुभव जानत बस कल संदेह मिटे ॥ सुंदर कहं-
 त यह प्रतक्ष प्रमान हे ॥ २५ ॥ एक घर दोय घर ती-
 न घर चार घर, पंच घर तजेत त्व छठो घर पाइये ॥
 एक एक घर के आधार एक एक घर, एक घर निराधा-
 र आपई दिषाइये ॥ सौ तो घर साक्षी रूप घर घर में
 अनूप, ताहू घर मध्य को उदिन ठहराइये ॥ ताके
 परे साक्षीन असाक्षीन सुंदर कछू, वचन अती-
 त कहूं आई हेन जाइये ॥ २६ ॥ एक तो अवन ज्ञान पा-
 वक ज्यौ देखीयत, माया जल पर सतु वेग बूझि जा-
 त हे ॥ एक हे मनन ज्ञान बिजुली ज्यौ घन मध्य,
 माया जल बरषत तामें न बुझात हे ॥ एक निदिध्या

सज्ञानबडवाअनलजेसे प्रगतसमुद्रमाहीमाया
 जलषातुहे॥ अनुभौसाक्षाज्ञानप्रलयकिअग्निसम
 सुंदरकहतहैतप्रपचविलातहे॥२७॥ भोजनकीवात
 सुनिमनमेंमुद्रितभयो, मुषमेनपरेज्यौलोमेंलियेनत्रा
 सहें॥ सकलसामग्रीआनिपाककौंकरनलागो, मनन
 करतकबजीमेहाएआसहे॥ पावकजबभयोतबभो
 जनकरनेवेगो, मुषमेंमेलतजाईयहनिदध्यासहें॥
 भोजनपूजनकरिअपतिभयोहेजब, सुंदरसाक्षात्का
 रअनुभौप्रकासहे॥२८॥ अवनकरतजबसबसोंउ
 दासहोई, चित्तएकग्रहआनिगुरुमुषस्तनिये॥ बैठि
 केएकांतठोरअतहकरनमांही, नमनकरतफेरउहेसा
 नगुनिये॥ ब्रह्मअपरोक्षजानीकहतहेअहब्रह्म,
 सोईसोहंहोईसदानिदध्यासधुनिये॥ सुंदरसाक्षा
 त्कारकीठहीनिहोईभग, यहअनुभवयहस्वस्वरूप
 मनिये॥२९॥ जबहीजग्यासहोईचित्तएकठोरआनि
 मृगज्यौंसुनतनादअवनसोंकहिये॥ जसेत्वातबुदहू
 कोचात्रकरततपुनिऐसेहीमननकरेकबबुंदलाहिये॥
 रात्रिकोचकोरजेसेचंद्रमाकोधरेध्यान, ऐसैजानिनि
 दध्यासरटकरिग्रहिये॥ यहअनुभवयहेकहिये सा-

क्षातकारः सुंदरपोरेतेंगलपानी होइ रहिये ॥ ३० ॥ का
 हूको पूछत रंक धन के से पाइयत, कान दे के सुनत श्रव
 न सोई जानिये ॥ उन कस्यो धन हम देख्यो हे फलानी ठो
 र मनन करत भयो कब धर आनिये ॥ फेर ज ब कस्यो-
 धन गस्यो तेरे मांही, पोदन लग्यो हेत बनि दिध्या सग
 निये ॥ धन निकस्यो हे ज ब दरिद्र गयो हेत ब, सुंदर सा
 क्षात्कार तृपति बषानिये ॥ ३१ ॥ चकम कठो के ते चम त
 कार होत कछु, ऐसे ही श्रवन जानत बही लों जानिये ॥
 सोषता मेल गे ज ब प्रगटे पावक ज्ञान, सिलगत जाई व
 हम नन वषानिये ॥ वर्धमान भएका उ कर्म निकों जरा व
 त, इहिं निदिध्यास ज्ञान ग्रंथ निमें गानिये ॥ सकल प्रपं
 च यह जरि कै समाई जात, सुंदर कहत वह अनुभौ प्र-
 मानिये ॥ ३२ ॥ ॥ इति आत्म अनुभव को अंग समा
 सः ॥ २६ ॥ ॥ अथ ज्ञान को अंग प्रारंभः ॥ ॥
 छंद मनहरा ॥ श्रवन सुनत मुख बोलत बचन ध्यान सुं
 घत फूल न रूप देखत द्रगन हे ॥ त्वक स परसरसर सना
 प्रसत कर, ग्रहत असन अरु चलत पगन हे ॥ करत
 गवन पुनि बैसत भवन सेज, सोवत रवन पुनि पोदत
 नगन हे ॥ जो जा कछु विवहार जानत सकल भ्रम, मं

दरकहतजानीज्ञानमेंमगनहे॥ १॥ कर्मनविकर्मक
 रेभावनअभावधरे, सभहुअसभपरेयातेनिधरक
 हे॥ वसतीनसूर्यजाकेपापहूनपुन्यताके, अधिक
 नन्द्युन्यवाकेस्वर्गननरकहे॥ सुषुषुषसमदोऊनीचहू
 नउचकोऊ॥ असीविधिरहेसोउमित्योनफरकहे॥
 एकहीनदोषजानेबंधमोक्षभ्रममाने, सुंदरकहत-
 जानीज्ञानमेगरकहे॥ २॥ अज्ञानीकोदुषकौसमूहजग
 जानियत, ज्ञानीकोजगतसबआनदस्वरूपहे॥ नैन
 हीनकोतोषरबाहेरनसूकेकछू, जहाजहाजायतहा
 तहांअधकूपहे॥ जाकेचसुहेमकासअधिकारभयो
 नास, वाकेजहारहेतहांसुखकीधूपहे॥ सुंदरअज्ञा-
 नीज्ञानीअंतरबहुतआही॥ वाकसदारातियाके
 दिवसअनूपहे॥ ३॥ ज्ञानीअरुअज्ञानीकीक्रिया स-
 बएकसीही, अज्ञाआसाऔरज्ञानीआसननिरास
 हे॥ अज्ञजोईजोईकरेअहंकारबुधिरहे॥ ज्ञानीअ-
 हंकारविनुकरतउदासहे॥ अज्ञसुषुषदोउआपवि-
 षमानिलेत, ज्ञानीसुषुषकौनजानेमेरेपासहे॥ अज्ञ
 कौजगतयहसकलसतोषकरे, ज्ञानीकौसुंदरसब
 बह्मकोविलासहे॥ ४॥ जानीलोकसंग्रहकौकरत

यौहारविधि ॥ अंतहकरनमें तो स्वमकीसी दोर
 हैं ॥ देतउपदेसनाना भांतिके बचन कहि सब कोउ
 जानत सकल सिर मोर हैं ॥ हलन चलन पुनि देह सो कर
 तनित ज्ञानमें गरक गतिलीये निज ठोर है ॥ सुंदर कहत
 जैसे दंत गजराज मुष पाइवे के ओर रुदिषा इवे के ओर
 है ॥ ५ ॥ इंद्रनि को ज्ञान जाके सो तो हे पसु समान देह अ
 भिमान पान पान ही सोलीन हैं ॥ अंतहकरन ज्ञान के धू
 क विचार जाके मनुष्य यौहार सुभ कर्मनि आधीन है ॥
 आतमा विचार ज्ञान जाके नि सवासर हैं सोही साधू सक
 ल ही बात में प्रवीन हैं ॥ एक परमात्मा को ज्ञान अनुभव
 जाको सुंदर कहत वह ज्ञानी भ्रम छीन हैं ॥ ६ ॥ जा
 ही ठोर रवि को उद्योत भयो ताही ठोर अंधकार भागी
 गयो ग्रह वन वासते ॥ न तो कछू बन ते उलटि आवे घ
 र माहीं न तो बन चलि जाइ कनक आवे वासते ॥ जैसे पं
 धी पं पट्टी जाइ ठोर परयो आई ताही ठोर गिरर तयो उड
 वे की आसते ॥ सुंदर कहत मिटि जाइ सब दोड़ दुष
 धोषी न रहत कोउ ज्ञान के प्रकासते ॥ ७ ॥ जैसे कोउ
 देश जाई भाषा कहै ओर सीही संसुजेन कोउ वासों क
 हे क्या कहत है ॥ कोउ दिन रहे करवो लीसी पे उन ही की

फेरीसमझावेतवसबकोंलहतुहें॥ तैसेज्ञानकहेतेसु-
 नतविपरीतलागे, आपआपनोईमतसबकोंगहतुहें
 ॥ उनहीकेमतकरिसुंदरकहतज्ञान, तबहीनेज्ञानठ-
 हराईकेरहतुहें॥ ८॥ एकज्ञानीकर्मनिमेंततपरदेपि-
 यत, भक्तिकोप्रभावनाहीज्ञानमेंगरकहें॥ एकज्ञा-
 नीभक्तिकोअत्यंतप्रभावलीये, ज्ञानमाहीनिश्चैक-
 रिकर्मसोंतरकहें॥ एकज्ञानीज्ञानहीमेंज्ञानकोउचार-
 करे, भक्तिअरुकर्मइनदुहुतेंफरकहे॥ कर्मभक्तिज्ञा-
 नतिनोबोहमेंवषानिकहे, सुंदरबतापोयुरुताहीमेंल-
 रकहें॥ ९॥ जेसेपंथीपगनिसोंचलतअवनिआईतेसे-
 ज्ञानीदेहकरिकर्मनिकरतुहे॥ जेसेपंथीचुंचकरिचुग-
 तआहारपुनितेसेज्ञानीउरमेंउपासनाधरतुहें॥ जेसे-
 पंथीपंथनसोंठडतगगनमाही, तेसेज्ञानीज्ञानकरिब्र-
 ह्ममेंचरतुहें॥ सुंदरकहतज्ञानीतीनोंभांतदेपीयत, ऐ-
 सीविधिजानेसबसशयहरतुहे॥ १०॥ ॥ छंदइंद्र॥
 एकक्रियाकारिकर्षिनिघावत, आदिरुअंतममत्वबं-
 ध्योहे॥ एकक्रियाकारिपाककरेजवरभोजनलोंकछु,
 अन्नरंध्योहे॥ एकक्रियामलत्यागतहेलघु, नीतक-
 रेकहुंनाहिबंध्योहे॥ त्योंयहकर्मउपासनज्ञानहे, सुं-

दरतीनप्रकारसंध्योहे ॥ ११ ॥ दोउजनोमिलिचोपर
 खेलतः सारिधरेपुनिदारतपासा ॥ जीततेहेसकस-
 षीमनमेव्यति, हारतहेसोईभरेउसासा ॥ एकजनो
 दोउवोरहीलेषतः हारनजीतकरेजुतमासा ॥ तैसेअ
 जानीकेहेतभयोभ्रम, सुंदरजानीकेएकप्रकासा ॥ १२
 ॥ सवैयामात्रा ३१ ॥ ॥ जीवनरेसअविद्यानिद्रासु
 षसिज्यासोयोकरिहेत ॥ कर्मरववासपूढभरिलाई,
 तासोंबहुविधिभयोअचेत ॥ भक्तिप्रधानजगायोकरग
 हि, आलसभस्योजेभाईलेत ॥ सुंदरअबनिद्रावसना-
 ही, ज्ञानजागरनसदासचेत ॥ १३ ॥ ॥ सवैयामा
 त्रा ३२ ॥ ॥ ज्ञानीकर्मकरेनानाविधअहंकारयात-
 नाकोसोवे ॥ कर्मनिकोफलकछूनजाने, अतहकरनवा
 सनाधोवे ॥ जोकोउपेतीकोज्यौतत, लेकरिवीजभूमिके
 वोवे ॥ सुंदरकहेसुनोदृष्टांतहि, नागोनहाइसुकहानि
 चोवे ॥ १४ ॥ ॥ इतिज्ञानीकोअंगसमाप्तः ॥ ३० ॥
 अथनिरससेकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदमनहर ॥ ॥
 भावेदेहछूटिजाहुकाशीमाहींगंगातट, भावेदेहछूटी
 जाओक्षेत्रमधहरमें ॥ भावेदेहछूटीजाओविप्रकेसदन
 मध्य, भावेदेहछूटीजाओस्वपचकेघरमें ॥ भावेदे-

हछूरोदेत आरुज अनारुजमें भावेदेहछूरीजाओव
 नमेनगरमें ॥ सुंदरजानीकेकछूसंशय रहेजु नाहीस्व
 रानरकसबभागीगयो भरमें ॥ १॥ भावेदेहछूरीजाओ
 आजहीपलकमांहीं, भावेदेहरहोचिरकालजुगअंत
 जु ॥ भावेदेहछूरीजाओग्रीष्मपावसक्त, सरद
 सासिरसीतछूटतवसंतजु ॥ भावेदक्षिनायनहु भावे
 उत्तरायनहु भावेदेहसर्पसिंघवीजलीहनतजु ॥ सुंदर
 कहत एक आतमा अपंडजानि, याही भातिनिरससे
 भयेसबसंतजु ॥ २॥ ॥ छंदइंदव ॥ ॥ कैयहदेहगि
 रोचनपर्वत, कैयहदेहनदीमेवहोजु ॥ कैयहदेहधरो
 धरतीमहि, कैयहदेहकसानदहोजु ॥ कैयहदेहनिरा
 दरनिंदहु, कैयहदेहसराहकहोजु ॥ सुंदरसंशयदूर
 भयोसब, कैयहदेहचलोकिरहोजु ॥ ३॥ कैयहदेहस
 दासुषसपति, कैयहदेहविषतपरोजु ॥ कैयहदेहनिरो
 गरहोनि, कैयहदेहहिरोगचरोजु ॥ कैयहदेहहुता-
 सनपैठत, कैयहदेहहिमारेगरोजु ॥ सुंदरसंशयदूरभ
 योसब, कैयहदेहजिवोकमरोजु ॥ ४॥ ॥ इतिनिरसं
 सेकोअंगसमाप्तः ॥ ३१॥ ॥ अथप्रेमजानीको-
 अंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदइंदव ॥ ॥ प्रीतिकीरीतक

कछूनहिराषतजातनपातनहींकुलगारो॥प्रेमकुने
 मकहोनहिदीसत,लाजनकाजलग्योमबषारो॥लीन-
 भयोहरिसौअभिअंतर,आठहुजामरहेमनवारो॥सुं-
 दरकोउकजानिसकेयह,गोकुलगांमकोपेंडोइन्यारो॥
 १॥ज्ञानदियोगुरुदेवकृपाकरि,दूरिकियोभ्रमषोलि-
 किवारो॥औरकियाकहिकोनकरेअब,चित्तलग्योप-
 रिब्रह्मपियारो॥पांवविनाचलवोकिहिठोरहु,पंगुभयो
 मनमिचहमारो॥सुंदरकोउकजानिसकेयह,गोकुलगां
 मकोपेंडोइन्यारो॥२॥एकअरवंडितज्यौनभव्याप-
 क,बाहिरभीतरहेइकसारो॥दृष्टिनमुष्टिनरूपनरेष
 न,स्वेतनपीतनरक्तनकारो॥चकितहोइरहेअनुभौ
 विन,ज्यौलगिनाहिनज्ञानउजारो॥सुंदरकोउक
 जानिसकेयह,गोकुलगांमकोपेंडोइन्यारो॥३॥
 ठंडविनाविचरेवसुधापर,जायटआतमज्ञानअपा-
 रो॥कामनक्रोधनलोभनमोहन,रागनदोषनह्मार
 नधारो॥जोगनभोगनत्यागनमंग्रह,देहदिसान
 द्ययौनउधारो॥सुंदरकोउकजानिसकेयह,गोकु-
 लगांमकोपेंडोइन्यारो॥४॥लक्षअलक्षअदक्ष
 नदक्षन,पक्षअपक्षनतूलनभारो॥जूठनसाच-

अवाचनवाचन, कंचनकांचन दीन उदारो ॥ जानअ-
 जाननमानअमानन, सानगुमानन जीतनहारो ॥ सुं-
 दरकोउकजानिसकेयह, गोकुलगामकोपेडोइयारो ॥
 ५॥ ॥ इति प्रेमज्ञानकोअंगसमाप्तः ॥ ३२ ॥ अथ
 अद्वैतज्ञानकोअंगप्रारंभः ॥ ॥ छंदइदव ॥ ॥ प्रश्नोत्त-
 र ॥ ॥ होतुमकौनहोब्रह्मअरवंडित, देहमेंक्यौनहिदेहक-
 नेरे ॥ बोलतकैसेकहौनहिंबोलत, जानियकैसेअज्ञान
 हेतेरे ॥ दूरकरोभ्रमनिश्चयधारिक, होगुरुदेवकहोनितटे-
 रे ॥ होतुमऐसेतुहंपुनिऐसेइदोयनहींनहिद्वैतहिमेरे ॥
 १॥ हकछुओरकतूकछुओरकि, हेकछुओरकैसेक-
 छुओरे ॥ होअरुतूंयहहेकछुसोपुनि, बुद्धिविलासम-
 योऊकजोरें ॥ होनहितूनहिहेकछुसोनिहि, बूजविनाजि
 तहीतितदोरें ॥ होपुनितूंपुनिहेकछुसोपुनि, सुंदर
 व्यापरखोसबठोरें ॥ २॥ उत्तममध्यमओरसुभासभ,
 भेदअभेदजहांलगजोहै ॥ दीसतभिन्नतवोअरुदर्पन
 वस्तुविचारतएकहिलोहै ॥ जोसुनियेअरुद्रष्टिप-
 रेपुनि, वाचिअओरकहूंअबकोहै ॥ सुंदरसुंदरव्या-
 पिरखोसब, सुंदरमैंपुनिसुंदरसोहैं ॥ ३॥ ज्यौवन
 एकअनेकभयेहुम, नामअनंतनिजातिहुन्यारी ॥ वा-

पीतडागरूपनदीसब, हेजल एकसंदेष्टुनिहारी ॥
 पावक एकप्रकासबहुविधि, दीपचिराक मसालहुवारी
 ॥ सुंदरब्रह्मविलासअष्टांशित, भेदअभेदकिबुद्धिसूरा
 री ॥ ४ ॥ एकशरीरमेअंगभयेबहु, एकधरापरिधामअ
 नेका ॥ एकशिलागहिकोरकियेसब, चित्रबनायधरे
 इकदेका ॥ एकसमुद्रतरंगअनेकहु, कैसेकेकीजिये
 भिन्नविवेका ॥ दैतकछूनहि देषियेसुंदर, ब्रह्मअष्ट
 ण्डित एककोएका ॥ ५ ॥ ज्यौंमृत्तिकाघटनीरतरगहि,
 तेजमसालकियेजुबहुता ॥ वायुबधूरनिगांठिपरीब
 हु, बादलव्यौमसव्यौमजुभूता ॥ दससुंवीजहेबी,
 जसुंदरहे, पूतसोंबापहेवापसूपूता ॥ वस्तुविचारत
 एकहिसुंदर, नानेरुवानेतो देषियेसूता ॥ ६ ॥ भौ
 मिहुचैतनआपहुचैतन, तेजहुचैतनहेजुप्रचंडा वा
 युहिचैतनव्योमहुचैतन, शब्दहुचैतनपिडब्रह्मंडा ॥
 हैमनचैतनबुद्धिहुचैतन, चित्तहुचैतनआहिउडंडा
 ॥ जोकलुनामधरेसोइचैतन, चेतनसुंदरब्रह्मअष्टां
 डा ॥ ७ ॥ एकअष्टांशितब्रह्मगिराजन, नामजुदोकारे
 विष्णुकहावे ॥ एकइग्रंथपुरानबषानत, एकहिदत्तव
 सिष्ठकहावे ॥ एकहिअर्जुनउद्धवसोकहि, कृष्णक

पाकरिकेसमुजावे॥ सुंदर है त कछूमनि जानहु ए
 कहिव्यापकवेदबतावे॥ ८॥ छंदमनहर ॥ शिष्य
 पूछे गुरु देव गुरु कहै पूछ शिष्य, मेरे एक संशय हे क्यून
 पूछे अबही॥ तुम कछो एक ब्रह्म अजहु में कहु एक,
 एकता अनेकता को यह भ्रम सबही॥ भ्रम यह को-
 न को हे भ्रमहि को भ्रम भयो, भ्रमहि को भ्रम कैसे तुन
 जाने कबही॥ कैसे करि जानो प्रभु गुरु कहै निश्चै धरिनि
 श्रै ऐसे जान्यो अब एक ब्रह्म तबही॥ ९॥ बोधोक्ति
 ॥ ॥ ब्रह्म हे ठोर को ठोर दूसरे न को ऊँ और वस्तु को
 विचार किये वस्तु पहिंचानिये॥ पंचतत्त्व तीन गुन रिख
 रवि विध भानि, नाम रूप जहां लगि मिथ्या माया मानि
 ये॥ शेष नाग आदि देके वैकुण्ठ गोलोक पुनि, वचन-
 विलास सब भेद भ्रम भानिये॥ न तो कछु उर मे न सर
 जो कहो सो कोन, सुंदर सकल एह उहां वाही जानिये
 ॥ १०॥ उहां वाही ना म बाल कने नीद व्या ए को हाल-
 योगीत॥ प्रथम हि देह मे ते बाहेर को बुकी परयो,
 इन्द्रिय व्यापार सप सत्य करि जान्यो है॥ कोन उ संजो
 गपाइ सद्गुरु भेद भई, उन उपदेस देके भीतर कुं आन्यो
 है॥ भीतर के आवत ही बुद्धि को प्रकास भयो, कोन देह

कौनमैजगतकिनमान्योहै ॥ सुंदरविचारतयोउपज्यो
 अहैतज्ञान, आपकोअषंडब्रह्मएकपहिचान्योहै ॥ ११ ॥
 हसालछदा ॥ सकलसंसारविस्तारकरिवरणियो, स्व-
 र्गपातालमृतब्रह्महीहै ॥ एकतेगिनतगिनजाइयेसोल
 गोंफेरिकरि एककोएकहीहै ॥ एनहीं एनहीरहेअवसेष-
 सो, अंतहीवेदनैयूंकहीहै ॥ कहतसुंदरकहीजानुजबअ-
 पनपो ॥ आपमेंआपनेआपहीहै ॥ १२ ॥ एकतूंदोनतूती
 नतूंचारतू, पंचतूतत्वतेजगनकीयो, नामअरुरूपहोइबूज
 तविधिविस्तस्यो, तुमविनाओरकोउनाहिबीयो, रावतूरक
 तूंदोनतूंदानितूंदोइकरिमेलतेंलीयदीयो ॥ सकलहीए-
 हतुममाहिउपजेषये, कहतसुंदरबडोविपुलहीयो ॥ १३ ॥
 ॥ छंदमनहर ॥ तोहिमैजगतयहसृहिहेजगत
 मांही, तोमेअरुजगतमेभिन्नताकहांरही ॥ भोमीहीतेभा-
 जनअनेकविधिनामरूप, भाजनविचारदेषेउहेएकहेम
 ही ॥ जलतेंतरंगफेनबुदबुदाअनेकभाति, सोउतीविचा-
 रेएकवहेजलहेसही ॥ जेतेमहापुरुषहेसबकोसिद्धांत
 एक, सुंदरअरिविलब्रह्मअंतवेदएकही ॥ १४ ॥ जेसे
 इषरसकीमिठाईभांतिभांतिभई, फेरकरिमोरेइदफ-
 रसहीलहतुहे ॥ जेसेघृतथीजकेजरसोबंधजातपु

नि, फेरपधरेनें व हृष्टत ही रहतु हे ॥ जेसे पानी जमीन
 के पषान हू सो देषीयत, सो पषान फेरपानी होय के बहुत
 हे ॥ तेसे ही सुंदरय हजगत हे ब्रह्म मय, ब्रह्म सो जगत
 मय वेद सु कहतु हे ॥ १५ ॥ जेसे काठ को रितामें पुतरी ब
 नायराषी, जो विचारि देखिये तो उहे एक दार हे ॥ जेसे मा
 ला सूत हू की मनिक हू सूत ही के, भीतर हू पोयो पुनि सू
 त ही को तार हे ॥ जेसे एक समुद्र के जल ही को लीन भये
 सो उतो विचार पुनि उहे जल पार हे ॥ तेसे ही सुंदरय हजग
 त सो ब्रह्म मय, ब्रह्म सो जगत मय या ही निरधार हे ॥ १६ ॥
 जेसे एक लोह के हथियार नाना विध कीये, आदि मध्य
 अंत एक लोह ई प्रमानीये ॥ जेसे एक कंचन में भूषन अ
 नेक भये, आदि मध्य अंत एक कंचन ई जानिये ॥ जेसे
 एक मोम के संचारे नर हाथीय ह, आदि मध्य अंत एक
 मोम के पषानीये ॥ तेसे ही सुंदरय हजगत मो ब्रह्म य ह
 ब्रह्म सो जगत मय निश्चै करि मानीये ॥ १७ ॥ ब्रह्म में ज
 गत यह ऐसी विधि देखीयत, जेसी विधि देखीयत फूलरी
 महल में ॥ जेसी विधि गिलि मडुली चेमें अनेक भाति
 जेसी विधि देखीयत चूनरी उचोर में ॥ जेसी विधि कांशु
 रेउ कोट परी देखीयत, जेसी विधि देखीयत बुदबुदानीर

में ॥ सुंदर कहत लीकहा अपरिदेषीयत, जेसी वि-
 धि देषीयत सीतला सरीर में ॥ १८ ॥ ब्रह्म अरु माया-
 जेसे शिव अरु शक्ति पुनि, पुरुष प्रकृति दोउ कह्ये सुना
 येहे ॥ पति अरु पत्नी ईश्वर अरु ईश्वरी हुनारायन लक्ष-
 मी हवै चन कहायेहे ॥ जेसे कोई आर्ध नारी नाटेश्वर रू-
 प धरे, एक बीज हतें दोउ दालि नाम पायेहें ॥ तेसे ही सुं-
 दर वस्तु ज्यौं है त्यौं ही एकर स, उभय प्रकार होई आप ही
 दिषायेहें ॥ १९ ॥ ॥ छंद इंदव ॥ ॥ ब्रह्म निरीह नि-
 राम य निर्गुन, नित्य निरंजन और न भासे ॥ ब्रह्म अषडि
 तहे अथ ऊरध, बाहिर भीतर ब्रह्म प्रकासें ॥ ब्रह्म हि सुक्ष्म
 पद्म लज्जालग, ब्रह्म हि साहिब ब्रह्म हि दासें ॥ सुंदर ओ-
 र फलूमत जानहु, ब्रह्म हि देषत ब्रह्म तमासे ॥ २० ॥ ब्र-
 ह्म हि मां हि विराजत ब्रह्म हि, ब्रह्म विना जिन और हि जा-
 नौ ॥ ब्रह्म हि कुंजर की टुहु ब्रह्म हि, ब्रह्म हि रंकुहु ब्रह्म हि
 रानो ॥ काल हि ब्रह्म सभावहु ब्रह्म हि, कर्म हुजौ वरु ब्रह्म
 वषानो ॥ सुंदर ब्रह्म विना कछु नाहिन, ब्रह्म हि जानि सबे-
 भ्रम भानो ॥ २१ ॥ आदि हु तो कहि अंत हि हे पुनि मध्य
 कहा कछु और कहावे ॥ कारन कारज नाम धरे पुनि कार-
 ज कारन मां हि ममावे ॥ कारज देषि भयो विच विधम, का

रनदेविधिभ्रमविलावे॥ सुंदरयौनिश्चैत्रभिर्भ्रान्तर, द्वैत
 गएफिरिहैतनआवे॥ २२॥ छंदमनहर ॥ द्वैतकरिदे-
 पेजबहैतहीदिषाइदेत, एककरिदेपेतवउहेएकअंगहे॥ सू-
 रजकोदेपेजबसूजपकासरत्योकीरणकोदेपेतोकीरण
 नानारंगहे॥ भ्रमजबभयोतबमायाऐसोनामधस्यो, भ्र-
 मकेगएतेएकब्रह्मसरबंगहे॥ सुंदरकहतयाकीदूष्टि-
 हंकोफेरभयो, ब्रह्मअरुमायाकेतोमायेनहिंस्थगहे॥
 २३॥ श्रोत्रकछुओरनाहीनैत्रकछुओरनाही, नासाक-
 छुओरनाहीरसनानओरहे॥ त्वक्कछुओरनाहीचाक-
 कछुओरनाही, हाथकछुओरनाहीपांवनकीदोरहैं॥
 मनकछुओरनाहीबुद्धिकछुओरनाही, चित्तकछुओ-
 रनाहीअहंकारतोरहैं॥ सुंदरकहतएकब्रह्मविना-
 ओरनाही, आपहीमेआपव्यापरत्योसबतोरहैं॥ २४॥
 इतिअद्वैतज्ञानकोअंगसमाप्त॥ ३३॥ ॥ अथजगत-
 मिथ्याकोअंगप्रारंभः॥ छंदमनहर ॥ कियोनविचा-
 रकछुभनकपरीहेकान, धाडुआईसुनिकरिडारिषिषण-
 योहे॥ जैसेकोऊअनछतोऐसेहीबुलाइयत, वार-
 योतगईपरकोउनहीआयोहैं॥ वेदहुवरनिकेजगतत
 चाढोकियो, अंतपुनिवेदजरमूलतउठायोहैं॥ तेसे-

ही सुंदरयाकों कोई एक पावे भेद ॥ जगत को नाम सुनि
 जगत भुलायो है ॥ १ ॥ ऐसी ही अज्ञान को ईश्वर के प्रगट
 भयो, दिव्य दृष्टि दूर गई देषे चामदृष्टि कों ॥ जैसे एक आ
 रसी सदाई हाथ मां ही रहे, समुषन देषे फेर फेर देषे पृष्टि
 कों ॥ जैसे एक व्योम पुनि वादर सों छायर त्यों, व्योम
 नहीं देषत देषत बहू दृष्टि कों ॥ तेसे एक ब्रह्म ही विरा-
 जमान सुंदर है, ब्रह्म को न देषे कोऊ देषे सब सृष्टि कों ॥
 २ ॥ अनच्छ तो जगत अज्ञान तें प्रगट भयो, जैसे कोई बा-
 ल फेता ल देषि डख्यो है ॥ जैसे कोई स्वपने में दाव्यो है ओ
 थोर आचमुष तें न आवे बोल एसो दुष पख्यो है ॥ जैसे अं
 धियारी रेन जेवरी न जाने ताही, आप ही तें सापमानि भ
 य अतिकख्यो है ॥ तेसे ही सुंदर एक ज्ञान के प्रकास बिनु,
 आप दुष पाय आच आप पचि भख्यो है ॥ ३ ॥ मृतका स-
 माईर ही भाजन के रूप मां ही, मृतका को नाम मीठि भाज
 नई गख्यो है ॥ कनक समाई ल्यो ही होइर त्यों आभूषन न क
 नक कहन कोउ आभूषन कख्यो है ॥ बीज हू स माई करि ब्र
 च्छ होइर त्यों पुनि, ब्रच्छ ही कों देषीयत बीजन हिलख्यो
 है ॥ सुंदर कहत यह्यो ही करि जान्यो सब, ब्रह्म ईज
 जगत होई ब्रह्म दुरिर त्यों है ॥ ४ ॥ कहत हे देह मां ही

जीवआहिमिलिरत्यो कहां देव कहां जीव रथाचूक प्रत्यो
 हे ॥ बूडवे के डर तेतर निकों उपाय करे, ऐसे न ही जाने यह मृ
 गजल भर्यो हे ॥ जेवरी को सांप जे से सीप विषे रूपो जानि
 ओर को ओर ही देखीयो ही भ्रम कर्यो हे ॥ सुंदर कहत यह
 एक ही अपंड ब्रह्म, ताही कौं पलट के जगत नाम धर्यो हे
 ॥ ५ ॥ ॥ इति जगता मिथ्या को अंग समाप्त ॥ ३४ ॥
 अथ आश्चर्य को अंग प्रारंभः ॥ छंद मन हर ॥
 वेद को विचार सोई सुन के संतन मुष, आप हू विचार करि
 सौ ही धारियतु हैं ॥ जोग की जुगति जानि जगत उदास हो
 ई, सुन्य में समाधि लाई मन मारीयतु हैं ॥ ऐसे ऐसे करत क
 रत के ते दिन बीते, सुंदर कहत अजहु विचारियतु हैं ॥ का
 रोह न पीरो न तोता तोह न सीरो कहु हाथन परत ताते
 हाथ जारीयतु हैं ॥ १ ॥ मन को अंग म अति वचन थकि
 त होत, बुद्धि हू विचार करि बहु पंडीयतु हे ॥ भ्रवन सुन-
 तना ही नैन न देषे ता ही, रसना को रस सब रस छांडिय
 तु हैं ॥ त्वक् को स्पर्श ना ही प्राण को न विषे होई, पगनि हू क
 रि जीतति त होडियतु हे ॥ सुंदर कहत अति सूक्ष्म स्व
 रूप कहु, हाथन परत ताते हाथ मी डीयतु हे ॥ २ ॥ गुंफा
 को सवार करि आसन हू मारि करि प्राण ही कौं धार धार ना-

कसीरीयतुहें इंद्रिनकोघेरकरिमनहूँकोफेरपुनि, अ-
 कुटीमेंहेरहेरहीयोचीटीयतुहे ॥ सबछटिकायपुनिस्त-
 न्यमेंसमायतहां, समाधिलगाइकरिआंषमीटियतुहें
 ॥ सुंदरकहतहमओरऊकीयेउपाय, हाथनपरत
 तातेहाथमीडीयतुहें ॥ ३ ॥ बोलेहीनमौनधरेबैठेहेनगो-
 नकरेजागैहीनसोवेसोतोदूरहेननेरीहें ॥ आवेहीनजा-
 ईनतोथिरअकुलातपुनि, भूषोहीनधातकछूतातो
 हीनसीरोहें ॥ लेतहेनदेतकछूहेतनकूहेतुपुनि, स्था-
 महीनस्वेतपुनिरातोहैं नपीरोहें ॥ दूधरोनमोरोकछू-
 लांबोहीनछोटोताते, सुंदरकहतकछुकाचहीनहीरोहें
 ॥ ४ ॥ भूमिहीनआपनतोतेजहीनतापनतो, वायूहीन-
 ओमनतोपंचकोपसारोहें ॥ हाथहीनपांचमतोनेनवे-
 नभावनतो, रंकहीनरावनतो वृद्धहीनवारोहें ॥ पिंडही-
 नप्राननतोजाननअजाननतो, बंधनिरवाननितोहरवो-
 नभारोहे ॥ हैतनअहैतनतोभीतनअभीतनतो, सुं-
 दरकख्यानजाईमिल्योहैं नन्यारोहें ॥ ५ ॥ छंदइंदव-
 पापनपुन्यनस्यूलनसून्यन, बोलनमौननसोवेनजागे ॥
 एकनदोइनपुरुषनजोइकरेकहूँकोइनपीछनआगे ॥ वृ-
 ष्णबालनकर्मनकालन, ह्रस्वविसालनरूखनभागे ॥

बंधनमोक्षप्रोक्षनमोक्षन, सुंदरहेनअसुंदरत
 गे ॥६॥ तत्त्वअतत्त्वकल्पीनहिजातजु, सून्यअसू
 न्यउरेनपरेहे ॥ जोतिअजोतिनजानिसकेकोउ, आदि
 नअंतनजिवेनमरेहे ॥ रूपअरूपकछूनहिदीसत, भे
 दअभेदकरनेहरेहे ॥ सृष्टअसृष्टकहेपुनि कौनजु,
 सुंदरबोलेनमौनधरेहे ॥ ७॥ षोजतषोजतषोजिगये
 पुनि, षोजतहेअरुषोजिहेआने ॥ गावतगावतगाय
 रहेसब, गावतहेपुनिगायहिगाने ॥ देषतदेषतदेष
 थकेसब, दीसनहोसबठोरठिकाने ॥ ब्रूतब्रूतब्रू
 केसुंदर, हेरतहेरतहेरहिराने ॥ ८॥ पिंडमेहेपुनिपिंडमि
 लेनहि, पिंडपरेपुनित्यौंहिरहावे ॥ ओत्रमेहेपुनिअ
 वसुनेनहि, द्रष्टिमेहेपरिद्रष्टिनआवे ॥ बुद्धिमेहेपरि
 बुद्धिनजानत, चित्तमेहेपरिचित्तनपावे ॥ शब्दमेहेप
 रिशब्दशब्दको कहिशब्दहिसुंदरदूरबतावे ॥ ९॥ भूमि
 हुतैसेहीआपहुतैसेहीतेजहुतैसेहितैसेहिपोना ॥ व्यो
 महुतैसेहिआहिअषडित, तेसेहिब्रह्मरत्नोभरिभो
 ना ॥ देहसजोगविजोगभयोतब, आयोसोकोनगये
 तोहीकोना ॥ जोकहीयेकहतेनबनेकछु, सुंदरजा
 निगहीमुषभोना ॥ १०॥ एकहिब्रह्मरत्नोपरिपूरित

दूसरो को न बनावन हारो ॥ जो कोउ जीव करे परमानता
 जीव कहै कछु ब्रह्म ते न्यारो ॥ जो कहै जीव भयोन गदी
 सते, तोर विमोहि कहैं को अंधारो ॥ सुंदर मोन गही यह
 जान के, को नहु भांति न है निरधारो ॥ ११ ॥ जो हम षो ज
 करे अभि अंतर तोउ ह षो ज उरहि विलावे, जो हम बा
 हिर कौं उठि दोरत, तो कछु बाहिर हाथ न आवे ॥ जो ह
 म काहु कै पूछत हे पुनि, सोइ अगाध अगाध बतावे ॥
 ताही ते कोऊ न जानि सके तिहि, सुंदर को नहि ठोर बता
 वे ॥ १२ ॥ नेन न वेन न चेन न आसन, वासन खासन प्या
 सन पाते ॥ सीत न घाम न थोर न रामन, पुषन वामन
 मातन ताते ॥ रूप न रेषन शेष अशेषन, श्वेतन पीत
 न स्यामन राते ॥ सुंदर मोन गही सिध साधक, को न
 कहै उस की मुषवाते ॥ १३ ॥ वेद थके कहित अथ के क
 हि, ग्रंथ थके निस वासर गाते ॥ शेष थके शिव इंद्र थके
 पुनि, षो ज कियो बहु भांति विधाते ॥ पीर थके पुनि मीर
 थके पुनि, धीर थके बहु बोल गिराते ॥ सुंदर मोन गही
 सिध साधक को न कहै उस की मुषवाते ॥ १४ ॥ जो गि
 थ के कहि जैन थ के ऋषि,
 ॥ सन्यासी थ के वन वासि थ के जू;

(१६०)

सुंदरविलास.

अ ३५

रफिराते ॥ शेषमसाइक और उलाइक था किरहे म
में मुसकाते ॥ सुंदर मौन गही सिध साधक को न क
हे उसकी मुष चाते ॥ १५ ॥ ॥ इति आश्चर्य
को अंग समाप्तः ॥ ३५ ॥ ॥ इति सुंदर
सजीकृत सुंदरविलास ग्रंथ समाप्तः ॥ ॥ श्री
सीताराम चंद्रो जयति ॥ श्रीरक्तशुभम् ॥

इति सुंदरविलास

समाप्त.

